ख्वाहिशें

कुछ पूरी, तो कुछ अधूरी सी...

ख़्वाहिशें

कुछ पूरी, तो कुछ अधूरी सी...

पुलकित गुप्ता

PETALS
PUBLISHERS

PETALS PUBLISHERS & DISTRIBUTORS
KIDWAI NAGAR MARKET,
LUDHIANA – 141008
E-mail: mail@petalspublishers.com
www.petalspublishers.com

© पुलकित गुप्ता

Hindi Translation of "Life & Promises"
Translated By - Vinit K. Bansal and Team

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the publisher and the author.

The Author asserts the moral right to be identified as the author of this book.

First Edition: May 2016

ख़्वाहिशें... कुछ पूरी, तो कुछ अधूरी सी
ISBN (13): 978-93-85440-22-9

Price : ₹ 125.00

This is a work of fiction. Names, characters, places, businesses and incidents are product of author's imagination or used in a fictitious manner. Any resemblance to any actual person, living or dead, events or locales is entirely coincidental.

Printed in India

आभार

"ख़्वाहिशें" लिखने का सफर इतना आसान तो कभी भी नहीं था लेकिन शायद और भी मुश्किल और थका देने वाला होता अगर कुछ लोग हमसफ़र बनकर मेरे साथ ना होते।

उन लोगों के इस किताब में और मेरी ज़िंदगी में योगदान के लिए अगर थैंक्स कहूंगा तो यह शायद बहुत बड़ी ना-इंसाफी होगी, सिर्फ उनके साथ ही नहीं बल्कि मेरे अपने ज़मीर के साथ भी। क्योंकि उनका साथ 'थैंक्स' जैसे औपचारिक शब्द से कहीं ज्यादा बढ़कर है। लेकिन रीत तो आखिर रीत है, निभानी तो पड़ेगी ही। ख़ैर, आभार की इस कड़ी में मैं सबसे पहले धन्यवाद देना चाहूंगा उस परमपिता परमात्मा को जिसने मुझे वो सब कुछ दिया जिसकी मुझे ज़रूरत थी। उसके बाद मेरी स्वर्गीय मां और मेरे पिता जी को, जो हमेशा मेरी गलतियों को नज़रअंदाज़ कर ज़िंदगी के हर उतार-चढ़ाव में मेरे साथ खड़े रहे। मेरे भईया अभिषेक और भाभी नित्या जिन्होंने हमेशा मेरा हौसला बढाया। मेरे दोस्त जिन पर मैं आंखें बंद करके भी विश्वास कर सकता हूं। जिनके साथ मैंने पता नहीं कितने उल्टे-सीधे काम किए, कभी हंसे तो कभी साथ में रोए। ज़िंदगी क्या होती है उन्होंने ही तो मुझे बताया।

विनीत के. बंसल जिन्होंने अनुवाद में कहानी की आत्मा को मरने नहीं दिया और इस बात का पूरा ध्यान रखा कि मेरी हर

बात पाठकों तक उसी अंदाज़ में पहुंचे जैसे मैं पहुंचाना चाहता हूं - ना एक सेर कम, ना एक टका ज़्यादा।

मेरे पब्लिशर Petels Publishers & Distributors, जिन्होंने मुझ पर और मेरे काम पर भरोसा दिखाया।

और अंत में मेरे पाठक, जिनकी वजह से मैं अपने अंदर के लेखक को पहचान पाया। आप सभी का बहुत-बहुत शुक्रिया! आपके प्यार और स्नेह के लिए...।

मेरा लिखा हर शब्द मैं समर्पित करता हूं
मेरी स्वर्गीय मां को, जो मुझसे बहुत दूर
होते हुए भी मेरे दिल के बहुत पास है।

1

फरवरी, 2011

अपोलो हॉस्पिटल, दिल्ली, रात के 10 बजे

बाहर चारों ओर पसरा घना अंधेरा और अंदर उस कमरे में उजाले के नाम पर मद्धिम सी रोशनी। आई.सी.यू. में लगे यंत्रों और उपकरणों की अजीब सी आवाज़ें, जिन्हें सुन कर अच्छा भला बंदा भी सिहर उठे। असहजता से भरा हुआ माहौल जैसा कि अक्सर अस्पतालों में होता है। इसी बीच, किसी गाड़ी का दरवाज़ा बंद होने की घुटी हुई सी आवाज़... मानो माहौल में फैली गंभीरता का अहसास उस मशीन को भी हो।

बाहर गलियारे में तेजी से चलते कदमों की आवाज़ें आ रही थी। और अंदर कमरे में, वह अभी भी लेटा था - बेहोश, निढाल, शरीर के ज़्यादातर हिस्सों में पट्टियों बंधी हुई। उसकी हालत बहुत नाज़ुक थी लेकिन वह अभी भी ज़िंदा था। शरीर में जगह-जगह नलियां लगी हुई थी। मुंह पर ऑक्सीजन वॉल्व लगा था। ड्रिप के सहारे उसके शरीर में ग्लूकोज़ पहुंचाया जा रहा था।

कमरे में दवाईयों की अजीब सी गंध थी। वहां की गूंगी-बहरी दीवारें जाने कितने ही ज़ख्मों और चीखों की गवाह थी। एक सामान्य व्यक्ति को भी इस तरह के माहौल में मितली होने लगे। इस दुनिया में शायद ही कोई ऐसा होगा जो अपनी मर्ज़ी से इस

तरह के माहौल में रुकना चाहेगा। इसे रचित की बदकिस्मती नहीं तो तो और क्या कहेंगे कि आज ये अस्पताल, ये कमरा और ये माहौल ही उसका ठिकाना था। उसे अपने शरीर पर लगी चोटों के साथ-साथ बाहर के इस माहौल से भी लड़ना था।

लेकिन वह एक मज़बूत इरादों वाला इंसान था। एक लंबे संघर्ष के बाद वह बच तो गया, पर अभी भी बिस्तर पर बेहोश पड़ा था... सारी दुनिया और अपने खुद के अस्तित्व से बेख़बर।

कुछ देर पहले तक सभी डॉक्टर्स और नर्सें उसे बचाने के लिए भाग-दौड़ कर रहे थे। उनकी कोशिशें रंग लाई और रचित की जान बच गई। जैसे ही उसकी हालत खतरे से बाहर हुई, डॉक्टर्स ने उसे आई.सी.यू. से दूसरे कमरे में शिफ्ट कर दिया।

वहीं कमरे में लेटे हुए अचानक से, रचित को एक आवाज़ सुनाई दी। मानो कहीं दूर से आती हुई मद्धिम, लेकिन पहचानी सी आवाज़।

"रचित..! बेटा! अब कैसे हो? घबराने की ज़रूरत नहीं है... अब तुम बिल्कुल ठीक हो। बुरा वक़्त गुज़र चुका है" यह उसकी मां की आवाज़ थी।

मां और बच्चे का रिश्ता, एक ऐसा अनोखा रिश्ता है जिसमें मां, अपने बच्चे की खुशी के लिए अपना सर्वस्व उस पर लुटाने का हौंसला रखती है, जो बिना बताए ही अपने बच्चे का दर्द उसकी आंखों में पढ़ लेती है। यह रिश्ता कुछ शब्दों का मोहताज नहीं होता। यह रिश्ता होता है प्यार का, ममता का, अहसास का...

रचित हैरान हो गया। यह कैसे हो सकता है? उसकी मां उससे कैसे बात कर सकती है?

पंद्रह साल का था जब उसने अपनी मां को खो दिया था।

वह रचित के बहुत करीब थी और रचित भी अपनी मां से बहुत प्यार करता था, इस नीम-बेहोशी के हाल में भी वह उसके ज़हन में थी। मां की याद आते ही आंसू की एक बूंद चुपचाप उसकी आंख के कोने से निकलकर गाल पर आ गई। उसकी मां उसकी ताकत थी और कमज़ोरी भी। वास्तविकता में भले ही वह

कितनी भी दूर क्यों न हो, लेकिन दिल और दिमाग में वह हमेशा उसके साथ थी।

एक लंबी बेहोशी के बाद... कितनी लंबी, उसे अहसास नहीं था, रचित ने अपनी आंखें खोली। उसकी आंखें जल रही थी। उसे लगा मानो, कमरे की वो छत उसे कोस रही हो, दीवारें उसे जकड़ लेना चाहती हों। उसने घबरा कर ज़ोर से अपनी आंखें भींच ली।

पता नहीं कितनी ही देर तक वह यूं ही पड़ा रहा। हालांकि इस तरह से बिना कुछ किए यूं ही बिस्तर पर लेटे रहना उसे बिल्कुल भी पसंद नहीं था। वह खाली बैठने वाले लोगों में से नहीं था। उसके लिए अपनी ज़िंदगी का हर एक पल कीमती था। उसे अपने आप पर गुस्सा आ रहा था। इसके अलावा, उसे कुछ याद नहीं आ रहा था कि वह अस्पताल में क्यों आया? कैसे आया? उसके साथ क्या हुआ था?

उसका मानना था कि ज़िंदगी की कमान किसी के हाथ में नहीं होती। पलक झपकते ही क्या हो जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता। इसीलिए हमें वक़्त की क़द्र करनी चाहिए। ज़िंदगी के हर एक पल का इस्तेमाल करना चाहिए। वह ख़ुद ज़िंदगी में कुछ कर गुज़रने की चाहत रखने वाला एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति था। बहुत से ख़्वाब अभी अधूरे थे। बहुत लोगों के सामने उसे ख़ुद को साबित करना था। उसकी ज़िंदगी इतनी आसान नहीं थी।

उसे सब कुछ धुंधला-धुंधला सा दिखाई दे रहा था। उसने कई बार पलकों को झपक कर साफ देखने की कोशिश भी की, लेकिन कुछ साफ नज़र नहीं आया। और फिर उसे एहसास हुआ कि उसने अपना चश्मा नहीं पहना, जो उसके बिस्तर के पास टेबल पर रखा था।

अपनी याद्दाश्त के साथ उसकी जद्दोजहद अभी भी जारी थी। वह याद करने की कोशिश में था कि वह इस अस्पताल के कमरे में क्यों और कैसे आया ? उसकी पीठ की अकड़न, सिर पर लगी

चोट और शरीर के बाकी हिस्सों से उठती टीस... ना, ये सब कारण नहीं थे। ये सब तो परिणाम थे।

परिस्थितियों की गंभीरता का अहसास उसे भी था। वह ज़्यादा हिल-डुल नहीं सकता था। पूरा शरीर सुन्न पड़ा था। पट्टियों और अस्पताल की चादर में लिपटा, वह खुद को लिफाफे में बंद एक मुड़े हुए ख़त की तरह महसूस कर रहा था, जिसे पोस्ट किया जाना हो।

जब भी वह अपनी आंखें खोलने की कोशिश करता, कमरे में जलती हुई टयूबलाइट की बेरहम रोशनी आंखों में चुभने लगती। वह दर्द से कराह उठता।

उसने अपने सिर के नीचे लगे तकिए को ठीक करने की नाकाम कोशिश की। एक बार, दो बार... कई बार, लेकिन उसका हाथ मानो जड़ हो चुका था। अपने शरीर पर, शरीर के हिस्सों पर उसका कोई काबू नहीं था। यह सब उसके अपने हॉस्टल की तीसरी मंजिल से गिरने की वजह से हुआ था।

उसका इस तरह से गिरना बहुत ख़तरनाक हो सकता था। उसकी जान जा सकती थी या फिर वह ज़िंदगी भर के लिए अपंग हो सकता था। इस हादसे में वह बच गया, यही बहुत बड़ी बात थी।

वह करवट लेना चाहता था, उठकर बैठना चाहता था, बात करना चाहता था, रोना चाहता था, लेकिन... शरीर के विभिन्न हिस्सों से लेकर आत्मा के अंतिम कोर तक फैला दर्द उसे ऐसा करने से रोक रहा था। उसके दिल में उठती टीस अंदर ही अंदर उसे जला रही थी। उसकी चीखें गले तक आकर रूक जाती।

"एक्सक्यूज़ मी ! क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकती हूं ? "

यह आवाज़ उसके पास वाले बिस्तर पर लेटी एक लड़की की थी। उसका मुस्कुराता हुआ चेहरा और छोटी-छोटी, नीली, प्यारी आंखें बता रही थी कि उसने अभी-अभी जवानी की दहलीज़ पर

कदम रखा है। देखने में वह बहुत कमज़ोर, लेकिन मासूम और खूबसूरत लग रही थी। उसके मुस्कुराने से गालों में पड़े गड्ढे खूबसूरती के नए आयाम गढ़ रहे थे। रचित की मदद के लिए आगे बढ़ने के दौरान अचानक से बालों की एक लट उसके चेहरे पर आ गई। बाएं हाथ की दो उंगलियों से उसने इस लट को कान के पीछे धकेल दिया। शक्ल से वह बहुत समझदार लग रही थी, लेकिन उसकी आंखों से मासूमियत और सादगी टपक रही थी। उसका सौंदर्य नैसर्गिक था। आवाज़ इतनी सुरीली, मानो कानों में संगीत बज उठा हो।

लेकिन फिर भी रचित ने उससे बातचीत करने में ज़्यादा दिलचस्पी नहीं दिखाई।

“नहीं, शुक्रिया !” रचित ने बिना उसकी तरफ देखे रूखेपन से कहा।

“हैल्लो, मैं खुशी हूं। तुम्हारी रूममेट। क्या हम दोस्त बन सकते हैं?” स्वभाव से चुलबुली और मिलनसार खुशी ने बातचीत को आगे बढ़ाने की कोशिश की।

रचित ने बिना कुछ कहे मुंह फेर लिया।

“हल्लो, मैं तुमसे बात कर रही हूं” खुशी ने फिर से कोशिश की।

“ऐ लड़की, मेरी एक बात कान खोलकर सुन लो। मैं अकेला ही ठीक हूं। मुझे अनजान लोगों से बात करना बिल्कुल पसंद नहीं है। और ना ही मैं दोस्ती करने में यकीन रखता हूं, ख़ासकर तुम जैसे बच्चों से तो बिल्कुल भी नहीं। इसलिए मुझसे दूर ही रहना, समझीं? तुम्हारे लिए बेहतर होगा कि तुम अपना कमरा बदलवा लो। मुझे नहीं लगता कि तुम्हारे अमीर मां-बाप के लिए यह कोई मुश्किल काम होगा। बस मुझे परेशान करना बंद कर दो...” रचित का दर्द औऱ दर्द के वजूहात लफ्ज़ों की शक्ल में बाहर आ गए थे... यही वजह थी कि बातों में रूखेपन का लेप चढा हुआ था । हालांकि वह हमेशा से ऐसा नहीं था, बस वक़्त के उतार-चढाव ने उसे ऐसा बना दिया था।

“क्या तुम हमेशा ऐसे ही बात करते हो ? हां, एक और बात, तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि मैं एक अमीर परिवार से हूं?” वह थोड़ा हैरान थी, क्योंकि शायद उसने रचित से इस तरह की अशिष्टता की उम्मीद नहीं की थी। लेकिन उसका आत्म-विश्वास देखकर लगता था कि उसने अभी भी हार नही मानी है।

“तुम मुझे बीमार तो कहीं से कहीं तक नहीं लगती। तुम्हारे चेहरे की खुशी देखकर लगता है, जैसे तुम यहां छुट्टियां मनाने आई हो और यहां अस्पताल में खूब मज़े लूट रही हो। ज़रूर ही तुम किसी अमीर परिवार की बिगड़ी हुई लड़की हो, जिनके दिल्ली में कई-कई फ्लैटस और फार्महाऊस होते हैं। जब घर से दिल भर गया, तो सोचा होगा कि कुछ दिन होटल या हॉस्पिटल में ही बिता लिए जाएं। तुम पक्का उन लोगों में से हो, जिनके घरवाले बच्चों को हल्का खांसी-जुकाम होने पर भी अस्पताल लेकर भागते हैं। अब मेरा दिमाग चाटना बंद करो... प्लीज!!!” रचित को खुद होश नही था कि वह क्या उल्टा-सीधा बोले जा रहा है।

“ठीक है ! जैसी तुम्हारी मर्ज़ी। मैं तो सिर्फ तुम्हारी मदद करने की कोशिश कर रही थी। भरोसा रखो, अगर तुम्हें कुछ भी मदद चाहिए, तो तुम मुझे कह सकते हो। अब तुम आराम करो। मैं तुम्हें परेशान नहीं करूंगी, गुडनाइट” उसने पहले जैसी मीठी आवाज़ में कहा।

* * * * * *

देर रात 1 बजे

शरीर के हरेक हिस्से से उठते तेज दर्द के कारण रचित सो नहीं पा रहा था। वह एकदम सीधा लेटा था। क्योंकि करवट बदलना उसके लिए नामुमकिन सा था। हल्की सी हरकत से भी जान निकल रही थी। उसका पूरा शरीर अकड़ा हुआ था। दर्द इस कदर हावी था, मानो कभी खत्म ही नहीं होगा। रात थी कि गुज़रने

का नाम ही नहीं ले रही थी। समय का पहिया कुछ ज़्यादा ही धीरे हो चला था। वह सोना चाहता था, लेकिन उसका शरीर उसे इस बात की इजाज़त नहीं दे रहा था।

अपना ध्यान पलटने के लिए उसने किताब पढ़ने का मन बनाया, जिसे कुछ घंटे पहले खुशी पढ़ रही थी। अपने दर्द से पार पाते हुए, वह किसी तरह से अपने बिस्तर से उठा और किताब उठाने की कोशिश की, जो उसके और खुशी के बिस्तर के बीच रखे टेबल पर पड़ी थी। यह काम उसके लिए किसी मिशन से कम नहीं था। काफी जद्दोजहद के बाद, आखिरकार उसने मेज पर पड़ी किताब उठा ली और इसका पहला पन्ना पलटा।

किताब का टाइटल था, '*इंट्रोडक्शन टू सॉलिड मैकेनिक्स बाई आई.शर्मा*'। किताब के अंदर पहले ही पन्ने पर, बहुत ही खूबसूरत लिखावट में कुछ लिखा हुआ था। उसने इसे गौर से देखा, *खुशी गुप्ता, फर्स्ट ईयर, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, आई.आई.टी. दिल्ली*।

फिर उसने किताब को वापस उसी जगह पर रख दिया और तकिए का सहारा लेकर वहीं बैठे-बैठे खिड़की से बाहर झांकने लगा। उसे महसूस हुआ कि इस सुनसान और गहरी काली रात की तरह वह भी बिल्कुल अकेला था.. कोई नहीं था जो उससे मिलने आता, उसका हाल-चाल पूछता और उसकी पीठ थपथपाकर उसे सुलाता, जैसा कि उसकी मां किया करती थी।

"नहीं, पूरी तरह से अकेला नहीं" मन ही मन सोचते हुए उसने दूसरे बिस्तर की ओर देखा, जहां खुशी कम्बल में लिपटी गहरी नींद सो रही थी।

रचित हैरान था कि वह इतनी सुकून से कैसे सो सकती है। '*बहुत किस्मत वाली है, जो बिना किसी तक़लीफ़ के, इतनी शांति से सो रही है। ना कोई चिंता, ना कोई दर्द और ना ही आगे आने वाली ज़िंदगी की कोई फ़िक्र। इसकी ज़िंदगी पक्का किसी फूलों वाली चादर के जैसी रही होगी*' उसने मन ही मन सोचा।

खिड़की में से झांकते हुए, वह शहर का शांत नज़ारा देखने लगा। दूर से घर बिंदुओं की तरह दिखाई दे रहे थे। पता नहीं क्यों, उसका मन उचाट हो चला था। यह शहर आज से पहले उसे इतना शांत कभी नहीं लगा और ना ही इतना उदास या फिर शायद उसने कभी ग़ौर ही नहीं किया। शहर तो पहले भी वैसा ही था और अब भी वैसा ही है। कभी चीखों से सराबोर, तो कभी सन्नाटों से लबरेज़... लेकिन आज रात के पहर में उसे यह सन्नाटा बहुत खटक रहा था।

आसमान चांद की दूधिया रोशनी में नहाया हुआ था और तारे टिमटिमा रहे थे। मौसम बहुत सुहाना था। रचित का मन कर रहा था कि वह बाहर जाए, सुनसान सड़कों पर घूमें और दोनों हाथों को फैलाकर इस सन्नाटे और ठंडी हवा को अपने भीतर समेट ले। लेकिन जैसा हम चाहें, वैसा अक्सर कहां होता है। वह भी अपने हालात से मजबूर था।

अचानक से खुशी के बिस्तर में होने वाली हिल-डुल से उसका ध्यान टूटा। खुशी ने करवट ली और फिर से गहरी नींद में सो गई। रचित भी अपने ख्यालों की दुनिया में वापस लौट गया।

कुछ मिनट बाद, उसे एकदम से ज़ोर से खांसी आई। खांसी इतनी तेज़ थी कि वह सांस तक नहीं ले पा रहा था। उसका पूरा शरीर दर्द से छटपटाने लगा। उसे लगा, मानो किसी भी पल उसकी जान निकल जाएगी।

उस असहनीय पीड़ा के बीच, दर्द से कराहते हुए उसने किसी तरह से हाथ बढ़ाकर हैल्प अलार्म का बटन दबा दिया। उसका दम घुट रहा था और उसे सांस लेने में तक़लीफ़ हो रही थी। तभी अचानक से किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा और पानी का गिलास उसके मुंह से लगा दिया। वह एक ही घूंट में गिलास खाली कर गया। गिलास मुंह से हटाते हुए जैसे ही उसने मुंह घुमाया तो देखा, यह खुशी थी। डर और चिंता के भाव उसके चेहरे पर साफ दिखाई दे रहे थे।

“तुम ठीक तो हो ना?” उसकी आवाज़ में घबराहट थी।

“हां! अब बेहतर हूं। थैंक्स! तुमने मेरी मदद की, बावजूद इसके कि मैंने कुछ घंटे पहले तक तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार किया था” आवाज़ के साथ-साथ रचित की आंखों में भी शर्मिंदगी थी।

“’अरे कोई बात नहीं। मैं जानती हूं कि कोई बात तो है, जो तुम्हें अंदर ही अंदर परेशान कर रही है और जिसकी वजह से तुम झल्लाए हुए हो। अगर तुम चाहो, तो तुम अपनी प्रॉब्लम मुझसे शेयर कर सकते हो। वैसे, तुम्हें ये चोट कैसे लगी?”

खुशी रचित की इस हालत की वजह जानने को बेचैन थी। वह जानती थी कि रचित उससे कुछ छिपाने की कोशिश कर रहा है।

“अरे, कुछ ख़ास नहीं, एक एक्सीडैंट था। हॉस्टल की छत से मेरा पैर फिसल गया और मैं गिर गया। बस इसी वजह से मुझे ये चोट लगी” रचित ने आंखें चुराते हुए जवाब दिया।

“हम्म्म... बच्चा समझा है क्या? तुमने कहा और मैंने मान लिया? नहीं बताना चाहते हो तो मत बताओ, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी। पर झूठ मत बोलो.... वैसे, किसी से बात शेयर करने से दिल का दर्द कम हो जाता है” कहते हुए वह अपने बिस्तर पर जाकर बैठ गई।

रचित को खुशी को सच बताने में थोड़ी हिचकिचाहट सी महसूस हो रही थी। लेकिन वह यह भी जानता था कि कई बार किसी अजनबी के सामने सच स्वीकारने में कोई बुराई नहीं होती, बल्कि दिल हल्का हो जाता है।

“मैंने खुदकुशी करने की कोशिश की” रचित ने धीमी सी आवाज़ में नज़रें झुकाते हुए कहा।

“क्या............?” खुशी लगभग चिल्ला ही रही थी.... मानो उसका पैर बिजली के किसी नंगे तार पर पड़ गया हो। “तुम तो सचमुच बड़े वाले पागल हो...” वह अभी भी सदमे में थी।

रचित ने उसकी ओर घूर कर देखा। "तुम मुझे ऐसे नहीं बुला सकती" उसने गुस्से से कहा।

" क्यों? क्यों नहीं? हम एक लोकतांत्रिक देश में रहते हैं और हमें हर वो बात कहने का पूरा हक है जैसा हम महसूस करते हैं। तुम गलत काम कर सकते हो, और मैं गलत को गलत कह भी नहीं सकती, अरे वाह!! वैसे...... ऐसा किया क्यों..., यह तो बताओ?" उसकी जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी।

"तुम्हें क्यों बताऊं?" रचित ने उसकी आंखों में देखते हुए कहा। अपनी ज़िंदगी में हो रहे इस अनचाहे दखल से वह थोड़ा असहज हो रहा था।

"ओह हैल्लो..! तुम्हें मुझे बताना ही होगा, क्योंकि तुम्हारे पास इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है। इस दर्द में ना तो तुम सो पाओगे और ना ही मेरे अलावा यहां पर तुम्हारे साथ बात करने को कोई और है। वैसे भी, मैंने जान बचाई है तुम्हारी। इतना हक तो बनता है यार। इसलिए मिस्टर रचित, अब फैसला तुम्हारा है... या तो मुझे सच बता दो या फिर मुझे झेलो!! पूरी स्टोरी जाने बिना तुम्हें छोड़ूंगी तो नहीं" वह तो सरेआम धमकियों पर उतर आई थी। उसकी जिद्द के आगे रचित को अपने हथियार डाल देना ही बेहतर जान पड़ा।

"ठीक है, मैं तुम्हें सब बताऊंगा, लेकिन तुम्हें मुझसे वादा करना होगा कि तुम इसे अपने तक ही सीमित रखोगी।"

"वादा रहा ! चलो, अब शुरू हो जाओ। मैं जानने को बेताब हूं। लेकिन ध्यान रहे, कुछ छूटना नहीं चाहिए, मुझे हर वो बात जाननी है जिसकी वजह से तुमने इतना खतरनाक कदम उठाया" उसने धीमे-धीमे मुस्कुराते हुए कहा। यह मुस्कुराहट जीत की थी।

जैसे ही रचित ने अपनी कहानी बताने के लिए मुंह खोला, खुशी ने उसे बीच में ही टोका, "रूको! रूको! रूको! पहले ये बताओ कि तुम करते क्या हो?"

“मैं सी.ए. फाइनल स्टूडैंट हूं” रचित ने लगभग खीझ में जवाब दिया। वह खुशी की टोका-टाकी से परेशान हो चला था।

“ठीक है! चलो, अब जल्दी से अपनी कहानी बताओ। मुझे ज़्यादा इंतज़ार की आदत नहीं...”

रचित का लटका हुआ चेहरा देखकर उसे बहुत हंसी आ रही थी।

2

“मेरी कहानी कोई परियों की कहानी जैसी नहीं... इसमें उतार-चढ़ाव हैं, मुश्किलें हैं, ठोकरें और बदनसीबी भी है। लेकिन शायद इसी का नाम तो ज़िंदगी है... नहीं? सपने बुनना... फिर उन सपनों को बिखरते हुए देखना... और फिर से कुछ नए सपनों के साथ ज़िंदगी में आगे बढ़ते रहना, बिना कोई सवाल किए। यही तो सिखाया जाता है हमें...। पर शायद तुम नहीं समझोगी” बोलते-बोलते रचित मानो किसी दूसरी दुनिया में खो सा गया। उसकी आंखों में उदासी गहरा गई। चेहरे के भाव बदल गए। मानो अभी के अभी रो पड़ेगा। लेकिन वह इस तरह किसी के सामने कैसे रो सकता था? वो भी ख़ासकर एक बच्ची के सामने... जो कि उसके लिए बिल्कुल अनजान थी!

“मैं नहीं समझूंगी मतलब... तुम्हें क्या लगता है मेरे लिए ज़िंदगी बहुत आसान है? जो मैं चाहती हूं, मुझे बिना कुछ किए ही मिल जाता है?” खुशी को उसकी बात पसंद नहीं आई।

“मैं तुम्हारे बारे में ज़्यादा नहीं जानता। लेकिन मैंने तुम्हारी किताब देखी, जिसे तुम कुछ वक़्त पहले पढ़ रही थी। इसमें लिखा था कि तुम आई.आई.टी. दिल्ली की स्टूडेंट हो। इतने बड़े कॉलेज में दाखिला लेना कोई आसान बात तो है नहीं। इसलिए ज़ाहिर है, कि तुमने जो चाहा, वो तुम्हें मिल गया होगा” रचित ने अपना पक्ष रखा।

"क्या!" वह चौंक गई... और फिर जल्दी ही उसने खुद को शांत किया। "खैर... कोई बात नहीं! यह सिर्फ़ एक किताब है, मेरी पर्सनल डायरी नहीं" आंखें झपकाते हुए उसने कहा।

रचित को खामोश देखकर, खुशी ने उसे बातों में उलझाए रखने की कोशिश की जिससे कि उसे अच्छा महसूस हो। "तुम वो सपने की बात कह रहे थे ना... आगे बताओ, मैं तुम्हारी पूरी कहानी सुनना चाहती हूं... शुरू से लेकर आखिर तक।"

अगले कुछ पल के लिए रचित उसके चेहरे की तरफ एकटक देखता रहा, मन ही मन सोचता रहा उसे अपनी आपबीती खुशी को बतानी भी चाहिए या नहीं। और इस विचारमंथन के बाद उसने खुशी के साथ अपनी कहानी साझा करने का फैसला लिया। वैसे भी, वह अस्पताल के ऊबाउ माहौल से तंग आ चुका था। यह सोचकर कि शायद इसी बहाने वह अपनी ज़िंदगी के कुछ हसीन और ग़मगीन पलों को फिर से जी पाएगा।

"मैं एक मिडल क्लास परिवार में पैदा हुआ... पापा यू.पी. की एक शूगर मिल में प्रोडक्शन मैनेजर की नौकरी करते थे। सीमित आमदनी के बावजूद भी उन्होंने मेरी पढ़ाई को लेकर कभी कोई समझौता नहीं किया। मैंने अपनी बारहवीं की पढ़ाई एक मशहूर कैथोलिक स्कूल से की, जो आई.सी.एस.ई. बोर्ड से एफिलेटिड था। और जहां हमें कड़े नियम-कानून और अनुशासन के बीच जीवन के हर क्षेत्र में श्रेष्ठ बनना सिखाया जाता था।"

"ओहह, अच्छा! जहां 'प्रतिष्ठा, परंपरा और अनुशासन' जैसे नियमों का पालन किया जाता है और जहां पर नाखून न काटने, जूते गंदे होने, हिंदी बोलने, डायरी न लाने, समय पर होमवर्क पूरा न करने पर सख़्त से सख़्त सज़ा दी जाती है... कुछ वैसा ही ना " वह मज़ाक उड़ाते हुए हंसने लगी।

"हूंह... लेकिन तुम्हारे दिखावे वाले स्कूलों से तो यह लाख गुना बेहतर था। जहां बच्चों को एक अच्छा और बेहतर इंसान बनाने की बजाय चिंकू-पिंकू बनाने पर ज़ोर देते हैं। जहां मां-बाप हर महीनें हज़ारों हज़ार रूपए फीस भरते हैं, इस आस में कि

उनका बच्चा किटर-पिटर अंग्रेजी बोलना सीख जाए। जबकि इस तरह के ज़्यादातर स्कूल अय्याशी का अड्डा बनकर रह जाते हैं” बदले में रचित ने भी ताना मारा।

इस वक़्त, वह भी बातचीत का खूब मज़ा ले रहा था। इतने लंबे समय बाद यूं खुलकर हंसने से, उसे काफी अच्छा महसूस हो रहा था।

“ज़्यादा मज़ाक उड़ाने की ज़रूरत नहीं है, समझे। तुम्हारी जानकारी के लिए बता दूं कि मैं भी हिंदी मीडियम में ही पढ़ी हूं और दसवीं क्लास में हिंदी में 99 प्रतिशत नंबर मिले थे मुझे” उसने थोड़ा चिढ़ते हुए कहा, जबकि असल में वह जानबूझकर ऐसा कर रही थी। वह इस बात से खुश थी कि उसने रचित को हंसा दिया था और उसकी इस खुशी का कारण वह खुद थी। असल ज़िंदगी में भी वो ऐसी ही थी, जहां भी जाती, खुद भी हंसती और दूसरों को भी हंसाती रहती। वह अपने नाम के मतलब को सही मायनों में जी रही थी।

आखिरकार, रचित भी उससे घुल-मिल गया था और पहले से ज़्यादा खुलकर बात कर रहा था। वहीं दूसरी ओर, खुशी भी इस बात से खुश थी कि रचित खुश था।

“अच्छा बाबा... अच्छा! चलो यह गांव का लड़का और शहर की लड़की का किस्सा यहीं खत्म करते हैं” रचित ने बहस बंद करते हुए कहा। “हां, तो फिर कहां थे हम?” उसने पूछा।

“वहीं, कि मैं दसवीं में टॉपर थी और शायद अब तुम भी अपने बारे में डींगें मारोगे कि तुम भी अपने उस परंपरा और प्रतिष्ठा वाले स्कूल में टॉपर थे” खुशी मानो, उसे छेड़ने का कोई भी मौका हाथ से जाने नहीं देना चाहती थी।

उसकी बात सुनकर रचित मुस्कुरा दिया।

“नहीं, मैं ऐसा नहीं था। मैं एक सामान्य दर्जे का स्टूडैंट था, जो अपनी ज़िंदगी को हमेशा सामान्य से थोड़ा ऊपर जीता था। लेकिन हां, मैं वाद-विवाद और भाषणबाज़ी में बहुत अच्छा था और स्टेट लैवल पर इंग्लिश भाषण प्रतियोगिता का विजेता रह

चुका था। मेरे लिए यह बहुत बड़ी उपलब्धि थी" कहते हुए उसकी आंखों में एक चमक उतर आई। खुद की तारीफ़ करना उसे बहुत पसंद था, ख़ासकर बात जब उसके भाषणबाज़ी के हुनर की हो रही हो।

"ओह, अच्छा! मिस्टर स्पीकर... स्टेट लैवल विनर!" खुशी को बहुत मज़ा आ रहा था।

"दसवीं में मेरे 85 प्रतिशत नंबर आए। और मेरी क्लास के 80 प्रतिशत से अधिक अंक लेने वाले ज़्यादातर स्टूडैंटस की तरह मेरा भी एक ही सपना था - आई.आई.टी. में एडमिशन लेना" उसने अपनी कहानी जारी रखते हुए कहा। खुशी के साथ अब वह काफी सहज महसूस कर रहा था और कुछ देर के लिए अपना दर्द भी भूल गया था।

रचित ने एक-एक करके अपनी ज़िंदगी के पन्नों को पलटना शुरू किया। हर पन्ने में कुछ अनकहे सवाल थे, तो कुछ अनसुने जवाब, कहीं आसमान को छू लेने की चाहतें थी, तो कहीं बिखरे हुए सपनों का दर्द। और इन सब का गवाह बन रही थी- खुशी, जो कहीं ना कहीं रचित को अपने मस्ती भरे बेपरवाह लड़कपन के दिनों की याद दिला रही थी।

"हां, मुझे पता है। जो बच्चे अच्छे 10+2 स्कूलों की कट-ऑफ तक नहीं पहुंच पाते, वे कॉमर्स ले लेते हैं मैं सही कह रही हूं ना?" खुशी ने बीच में ही टोकते हुए कहा और अपनी ही बात पर ज़ोर से हंस दी।

"हां, शायद कुछ मामलों में यह सच हो, लेकिन मेरे मामले में ऐसा नहीं था। आई.आई.टी. में एडमिशन लेना मेरा सपना था। थोड़े शब्दों में कहूं, तो यह मेरे लिए सब कुछ था। हालांकि, डी.पी.एस. आर.के.पुरम में दाखिला पाने के लिए मैं कुछ नंबरों से चूक गया था। इसीलिए मेरे पापा ने साऊथ दिल्ली के एक और अच्छे स्कूल में मेरा दाखिला करवा दिया, जो कि एक ऐसे कोचिंग संस्थान से जुड़ा था, जो आई.आई.टी. और ए.आई.ई.ई.ई. की कोचिंग देता था। इसके बाद तो, मेरा एक ही मकसद था-

जे.ई.ई. को पास करना और बारहवीं में अच्छे अंक लाना। मैं जानता था कि यह इतना आसान नहीं होगा, लेकिन मुझे यह भी पता था कि हर सपने की एक कीमत होती है और मैं वो कीमत देने को तैयार था।"

इस दौरान जब भी रचित अपने आई.आई.टी. के सपने की बात करता, उसकी आंखों में, उसके चेहरे से, उसकी आवाज़ से एक अजीब सा दर्द छलक पड़ता, मानो कोई चीज़ उसे भीतर ही भीतर कचोट रही हो।

"अरे वाह! क्या मस्त डायलॉग मारा है..." खुशी चहक उठी। वह रचित की हर बात को बहुत ध्यान से सुन रही थी। मानो वह उसकी कहानी, उसकी ज़िंदगी, उसके सपनों, उसकी इच्छाओं और उसके बीते हुए कल को उसी के साथ जी रही हो।

"आखिरकार, मेरी मेहनत रंग लाई और बारहवीं में मेरे 91 प्रतिशत नंबर आए। सिर्फ इतना ही नहीं, आई.आई.टी. मद्रास के लिए मेरा चयन भी हो गया। मैं खुशी के सातवें आसमान पर था। मुझे अभी भी याद है वो तारीख...."

"10 जुलाई 2007 ! मेरे दीक्षांत समारोह का दिन, एक ऐसा दिन जिसे मैं अपनी ज़िंदगी में कभी नहीं भूल सकता। मेरे सपनों को मानो पंख लग गए थे।"

"अरे ! तो तुम भी आईआईटियन हो! मुझे तो पता ही नहीं था" खुशी के मुंह से निकला। लेकिन अगले ही पल उसके चेहरे के भाव बदल गए। क्योंकि अभी कुछ देर पहले ही तो रचित ने बताया था कि वह सी.ए. कर रहा है। एक अजीब सी उलझन थी। कई तरह के सवाल उसके ज़हन में थे, लेकिन वह पूरी कहानी रचित के मुंह से सुनना चाहती थी, इसलिए उस वक़्त उसने इस बारे में कुछ भी पूछना बेहतर नहीं समझा।

"आईआईटी मद्रास! मुझे तो इसका प्रॉस्पैक्टस देखते ही इससे प्यार हो गया था। इसका 620 एकड़ के क्षेत्र में फैला कैंपस... जो पहले गुइंडी राष्ट्रीय उद्यान का ही औपचारिक हिस्सा था। मैं शुरू से ही कुदरत के बेहद करीब रहा हूं। तुम्हें

पता है, इस पार्क में चार सौ कृष्णमृग, दो हजार चित्तीदार हिरण, गीदड़, सांपों की विभिन्न किस्में, कछुए और पक्षियों की एक सौ तीस से ज़्यादा प्रजातियां, स्तनधारियों की चौदह प्रजातियां और तितलियों और मकड़ियों की साठ से भी ज़्यादा प्रजातियां हैं। हर साल लगभग सात लाख लोग यहां घूमने आते हैं।"

यह सब बताते वक़्त उसकी आंखों में एक चमक थी। मानो यादों की खिड़की से निकल वह अभी-अभी उस पार्क से होकर आया हो। मन ही मन वो सोच रहा था कि *काश! वो वक़्त को मोड़ पाता और वापस उन्हीं मस्ती भरे दिनों में लौट सकता, जिनकी एक याद आज भी उसके चेहरे पर मुस्कुराहट ला देती है।*

"बस करो अब! अपनी वन्य जीवन की जानकारी का एन्साइक्लोपीडिया दिखाना बंद करो" खुशी ने बीच में ही टोका।

उसकी बात सुनकर रचित थोड़ा हंस दिया।

"मुझे अलग-अलग जगहों पर घूमना और अलग-अलग स्थानों की जानकारी रखना बहुत पसंद है। तुम इसे मेरा शौक कह सकती हो।"

रचित ने कहना जारी रखा, "सबकुछ बहुत अच्छे से जा रहा था। मेरा वहां मन भी लग गया था। मैं मानो, हमेशा के लिए वहीं रहना चाहता था। अच्छा, तुम्हें वहां के बारे में एक दिलचस्प बात बताऊं - वहां कैंपस के अंदर चलने वाली बसों के नाम अलग-अलग पहाड़ों के नाम पर और हॉस्टल के नाम नदियों के नाम पर रखे गए हैं। है ना मज़ेदार? खैर हॉस्टल में मेरे तीन और रूममेट्स थे और तीनों ही अलग-अलग राज्यों से। एक उड़ीसा से, एक राजस्थान से और एक आंध्र प्रदेश से। सब कुछ बहुत शानदार था। इतना अच्छा कि इससे ज़्यादा मैं कुछ और मांग ही नहीं सकता था।"

"चार लोग एक ही कमरे में?" खुशी ने चौंकते हुए पूछा।

"हां। लेकिन यह सिर्फ कुछ ही समय के लिए था, बाद में इसे बदलकर दो लोगों के लिए एक कमरा कर दिया गया था।

लेकिन हम चारों एक-दूसरे से इतना घुल-मिल गए थे कि हमने पहले की तरह एक साथ ही रहने का फैसला किया। हर वीकेंड पर हम चारों एक साथ घूमने जाते। खूब मौज-मस्ती करते। चेन्नई की लोकल ट्रेन में बिना टिकट घूमते। ना ही कभी हमारी बातें खत्म होती और ना ही मस्ती। ज़िंदगी किसी सपने के जैसी थी... एक खूबसूरत सपना।”

खुशी ने अपने दिमाग में रचित की जो तस्वीर बनाई थी, वो धीरे-धीरे बदलती जा रही थी। खुशी की आंखों के सामने मानो कोई फिल्म चल रही हो। वह रचित के शब्दों के ज़रिए रचित की ज़िंदगी जी रही थी।

वह बोलता गया...

“सब कुछ अच्छे से जा रहा था। मेरी एक गर्लफ्रैंड भी थी, जो मेरी ही ब्रांच में थी। सेश्नल एग्ज़ाम में मुझे 80 प्रतिशत अंक मिले और मैथ्स ओलम्पियाड में अपनी ब्रांच की तरफ से मुझे भेजा गया था। मैं अपनी ज़िंदगी से बहुत खुश था। फिर एक रात.... चुपचाप दबे पांव बदकिस्मती मेरी हंसती-खेलती ज़िंदगी में दाखिल हुई। देखते ही देखते सब कुछ बदल गया। एक रात मेरे पेशाब में खून आया, लेकिन मैंने इसे नज़रअंदाज़ कर दिया। लगभग एक सप्ताह तक ऐसा ही चलता रहा। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि मुझे क्या हो रहा है। मुझे अपने दोस्तों से इस बारे में बात करना बहुत अजीब लग रहा था और ना ही मैं अपने घरवालों को कुछ बता सकता था, पता नहीं यह जानने के बाद उनका रिएक्शन क्या होगा, या शायद मैं कुछ ज़्यादा ही डर गया था।”

“क्या ? तुम इतनी बड़ी बात को अनदेखा कर गए? हद है यार... पागलपन की भी” खुशी गुस्से में एकदम से चिल्लाई।

“मैं जानता हूं, यह मेरी गलती थी। लेकिन प्लीज़, अब उस बात को दोहरा कर मुझे शर्मिंदा मत करो। सच कहूं तो, शायद मैं इसे ऐसे ही अनदेखा करता भी रहता, अगर उस रात बात कुछ ज़्यादा ही बिगड़ न गई होती।”

"क्यों? क्या हुआ था उस रात?"

भीतर ही भीतर खुशी हैरान भी थी कि कोई अपने आप को लेकर इतना लापरवाह कैसे हो सकता है।

"उस रात, मैं अपने दोस्त के कमरे से उसकी जन्मदिन की पार्टी मना कर वापस आया और सोने की तैयारी कर रहा था। अचानक मेरी पीठ में बायीं तरफ बहुत तेज़ दर्द उठा। मैं दर्द से चिल्लाया। आवाज़ सुनकर मेरे बाकी के दोस्त भी आ गए। उनमें से एक के पास पेनकिलर थी। दवा लेने के बाद दर्द कम हो गया और मुझे नींद आ गई। लेकिन सुबह 4 बजे के आस-पास दर्द फिर से शुरू हो गया। किसी तरह मैंने अगले कुछ घंटे निकाले और सुबह जल्दी ही सिटी हॉस्पिटल में डॉक्टर को दिखाने चला गया।"

रचित अगले कुछ पल के लिए खामोश रहा।

दर्द की तासीर उसकी आंखों में साफ दिखाई दे रही थी। यह दर्द उसके अतीत की यादों और उन मौजूदा जख्मों की वजह से था जो अभी तक भरे नहीं थे। वह सचमुच बहुत हिम्मत वाला था... इतना दर्द, इतनी पीड़ा सहन करने के बावजूद भी जो इंसान इतने हौंसले के साथ ज़िंदगी के सामने सीना तान कर खड़ा हो, निश्चित रूप से वह किसी विजेता से कम नहीं...।

अतीत की दुखद घटनाओं की परवाह किए बिना और अपने मौजूदा दर्द को अनदेखा करते हुए उसने दिल की गहराइयों से अपने हंसमुख स्वभाव को बरक़रार रखा था, हालांकि उसके दिल में कहीं न कहीं एक अकेलापन, कुछ बदहवासी और कुछ मूक सिसकियां अभी भी डेरा जमाए थी।

"हम्म! फिर क्या हुआ?" खुशी की उत्सुकता चरम सीमा पर थी।

"मैं अपने पापा को यह सब बताने में झिझक रहा था। ये सोचकर कि उन पर क्या बीतेगी। मेरी मां मुझे बहुत पहले ही छोड़ कर चली गई थी। और उनके जाने के बाद मेरे पापा ने ही हम दोनों भाईयों को संभाला। एक पिता होने के साथ-साथ मां

का भी फर्ज़ निभाया। मैं जानता था कि मेरे लिए वे सब कुछ छोड़ सकते हैं। बस यही मैं नहीं चाहता था।"

"मेरे पापा भी ऐसे ही हैं" कहते हुए खुशी मुस्कुरा दी।

"कभी कभी मां की बहुत याद आती है। उनका डांटना, उनका प्यार करना, उनका थपकी देकर सुलाना और हर वो चीज़ जो उनसे जुड़ी है। लेकिन अब जब वो नहीं है, तो उनकी गैरमौजूदगी में पापा को परेशान करना मुझे अच्छा नहीं लगता। इसलिए, मैंने अपने बड़े भाई को सच बताने का फैसला किया। उस वक़्त वह पुणे में पढ़ रहा था। जैसे ही मैंने उसे अपनी प्रॉब्लम के बारे में बताया, वह अगली ही फ्लाइट से चेन्नई आ गया और मेरी हालत देखते हुए मेरे साथ हॉस्टल में ही रूक गया। मां के जाने के बाद, भईया ही मेरे दिल के सबसे करीब थे। मेरी जान उनमें बसती थी और उनकी मुझमें। अगले दिन हम डॉक्टर से मिले और मेरे कई सारे टैस्ट करवाए गए" रचित ने गहरी सांस लेते हुए बताया।

"रिपोर्ट में क्या आया? कोई परेशानी वाली बात थी? डॉक्टर ने क्या कहा?" खुशी का मानो अपने आप पर कोई काबू नहीं था। कहानी के साथ-साथ उसकी संजीदगी भी बढ़ती जा रही थी।

"डॉक्टर ने बताया कि मेरे दोनों गुर्दो की धमनियां ब्लॉक हो गई हैं। जिसकी वजह से मेरी दोनों किडनी में इन्फैक्शन हो सकता था या फिर ये पूरी तरह से खराब भी हो सकती थी। और सिर्फ इतना ही नहीं हार्ट अटैक का भी डर था।"

"यह कैसे मुमकिन है? मेरा मतलब तुम तो बिल्कुल ठीक थे ना, फिर एकदम से यह सब कैसे?" वह एकदम से सकते में आ गई।

"हम्मम! जब पहली बार मुझे इस बात का पता चला, तो मेरी भी यही प्रतिक्रिया थी। मैं बहुत रोया। बार-बार भगवान से यही पूछता रहा कि *'यह सब मेरे साथ ही क्यों हो रहा है? आखिर, मैंने किसी का क्या बिगाड़ा है जो मुझे इतनी बड़ी सज़ा मिल रही है?'* मैं और मेरा भाई, हम दोनों ही बहुत ज़्यादा डर गए थे।

कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें, किसके पास जाए। अब हमारे पास पापा को बताने के अलावा और कोई चारा नहीं था। मेरी बीमारी कन्फर्म होने के बाद, मुझे चेन्नई के एक बड़े हॉस्पिटल में दाखिल करवा दिया गया। फिर एक सप्ताह बाद, मुझे वहां से दिल्ली के अपोलो हॉस्पिटल में शिफ्ट किया गया। यहां से हमारा घर नज़दीक पड़ता था जिससे आने-जाने में भी कोई दिक्कत नहीं थी।"

वह कहता गया, "यहां दो महीने तक मुझे अनुभवी नेफ्रोलॉजिस्ट, यूरोलॉजिस्ट और हिमेटोलॉजिस्ट की कड़ी निगरानी के बीच रखा गया। ये दो महीने मेरी ज़िंदगी के सबसे मुश्किल लम्हे थे। सारा दिन बिस्तर पर पड़े रहना, खाली आंखों से छत ताकते रहना और ये सोचना कि मेरा भविष्य क्या होगा... सैंकड़ों सवाल, हज़ारों बेचैनियां, बेपनाह खालीपन, हर रोज़ होने वाले टैस्ट, दवाइयां, डॉक्टर्स और अस्पताल... मेरी ज़िंदगी मानो यहीं तक सिमट कर रह गई थी।"

हर पल उसके चेहरे के भाव बदल रहे थे। "मेरे जैसे व्यक्ति के लिए, जो ज़िंदगी के हर पल को पूरी शिद्दत से जीने में विश्वास रखता था, इस तरह से जीना आसान नहीं था। बीमारी की वजह से मेरा वजन पंद्रह किलो कम हो गया था, लेकिन मैं खुश था कि मैं ठीक हो रहा था, फिर चाहे धीरे-धीरे ही सही।"

अतीत के कुछ खुशनुमा पलों को याद कर रचित के होंठो पर एक मुस्कान आ गई। "1 दिसंबर 2007, मेरे लिए बहुत खुशी का दिन था, क्योंकि मैं घर वापस जा रहा था और फिर उसके बाद बहुत जल्दी ही अपने कॉलेज, अपनी ज़िंदगी और अपने सपनों के बीच। वहां जाने को लेकर मैं बहुत बेताब था। मैं जल्द से जल्द वहां जाना चाहता था, दोस्तों के साथ मस्ती करना चाहता था, पार्टी करना चाहता था और वो सब कुछ, जो मैं पिछले दो महीनों से नहीं कर पाया था।"

"हालांकि, मेरी खराब तबीयत के चलते, मैं एक सेमेस्टर की परीक्षा नहीं दे पाया था, लेकिन मुझे खुद पर भरोसा था कि मैं

कड़ी मेहनत करके पढ़ाई पर अपनी पकड़ वापस पा लूंगा। मैंने अपने जिगरी यारों को फोन किया और बताया कि मैं जल्द ही वापस चेन्नई आ रहा हूं। मेरे अंदर का मस्तीखोर फिर से जिंदा हो उठा था। मेरे आने की खबर से सब बहुत खुश थे।

लेकिन ज़िंदगी में जो चाहो, वो कहां मिलता है। किस्मत कब कौन सी करवट ले ले, कोई नहीं जान सकता। मैं भी किस्मत के इस खेल से अंजान था। मेरे पापा की आंखों में एक अजीब सी उदासी थी। मानो वो कुछ कहना चाह रहे हों, लेकिन कह नहीं पा रहे हों।

मैंने सभी डॉक्टर्स और नर्सों का शुक्रिया अदा किया और अपने सामान के साथ कार में जाकर बैठ गया। हम घर की तरफ चल दिए। लेकिन कार के पहियों से ज़्यादा तेज़ मेरी सोच दौड़ रही थी। मैं मन ही मन हर उस चीज की लिस्ट बनाने में लगा था, जो मैं आने वाले दिनों में करना चाहता था।

घर पहुंचते ही सबसे पहले मैंने भारतीय रेलवे की वैबसाइट खोली और दिल्ली से चेन्नई के बीच चलने वाली गाड़ियों में अगले दिन की सीट देखने लगा। मैं अपनी ज़िंदगी का एक भी पल और खराब नहीं करना चाहता था। हॉस्टल वापस जाने के ख़्याल से ही मेरे पैर ज़मीन पर नहीं पड़ रहे थे।

तभी मेरे पापा मेरे कमरे में आए और मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए उन्होंने मुझे कोई भी टिकट बुक ना करवाने को कहा। मैं बहुत हैरान था, परेशान था, पसोपेश में था कि वे ऐसा क्यों कह रहे हैं। लेकिन किस्मत अपना खेल खेल चुकी थी और मैं चाहकर भी कुछ नहीं कर सकता था।”

3

1 दिसंबर 2007

रचित का घर

“लेकिन क्यों पापा? आप ऐसा क्यों कह रहे हैं? मेरा मतलब, यह सब अचानक? मुझे कुछ हुआ है क्या? पापा, पहले ही मेरा पूरा एक सेमेस्टर खराब हो चुका है और अब अगर कॉलेज जाने में मैंने और ज़्यादा देर की, तो मेरा पूरा साल बर्बाद हो जाएगा। अब जब मुझे हॉस्पिटल से ही छुट्टी मिल गई है, तो आप मुझे यहां रोक कर क्यों रखना चाहते हैं?” कहते हुए वह रूआंसा हो गया।

“मैंने कहा ना, तुम कहीं नहीं जा रहे हो, बस...” उसके पापा ने थोड़ा गुस्से से कहा। लेकिन उनकी आंखें उनकी आवाज़ का साथ नहीं दे रही थी, इनमें छुपा दर्द उनकी लाख कोशिशों के बाद भी साफ नज़र आ रहा था।

रचित सदमे में था। उसका सारा उत्साह, सारे सपने, सारी उम्मीदें एक पल में ही ढ़ेर हो गईं। चेहरे पर मायूसी छा गई।

“लेकिन पापा, कोई तो कारण होगा? मैं जानता हूं आप मेरी तबीयत को लेकर बहुत परेशान हो। पर अब तो मैं बिल्कुल ठीक हूं। अब तो डॉक्टर्स ने भी कह दिया है कि मेरे अंदर बनी खून की गांठ खत्म हो गई है और ब्लड सरकुलेशन भी सही से हो

रहा है। तो फिर प्रॉब्लम क्या है? प्लीज पापा, मेरी बात को समझने की कोशिश करो। मेरा जाना बहुत जरूरी है, यह मेरे करियर का सवाल है। प्लीज़...” कहते हुए आंसू उसकी पलकों के किनारे तक आ गए।

“बेटा, अब मैं तुम्हें कैसे समझाऊं? मैं जो भी कह रहा हूं, तुम्हारी भलाई के लिए ही कह रहा हूं। मुझे समझने की..”

लेकिन रचित ने उनकी बात बीच में ही काट दी। “पापा, मैं पहले ही बहुत पीछे रह गया हूं। पिछली बार के सेश्नल एग्ज़ाम में मैं सबसे आगे था, लेकिन तबीयत खराब होने के कारण सेमेस्टर के एग्ज़ाम नहीं दे पाया। अब मुझे पहले से ज़्यादा मेहनत करनी पड़ेगी, सारे नोट्स बनाने पड़ेंगें, पिछले प्रोजेक्ट जो अधूरे रह गए थे, उनको पूरा करना है और असाइनमेंट्स जमा करवानी है। इसके अलावा दो महीनों से मैं अपनी फिजिक्स और कैमिस्ट्री की लैब क्लास भी नहीं जा पाया और इंजीनियरिंग ग्राफिक्स तो इतनी ज़्यादा मुश्किल है कि मैं बता भी नहीं सकता। और फिर हमारे इस बार के सेमेस्टर में तो मैकेनिकल भी है जिसे पहली बार में पास करना बहुत मुश्किल है। मुझे खुद नहीं पता कि मैं यह सब कैसे करूंगा। और ऊपर से आप मुझे ना भेजने की ज़िद्द लेकर बैठे हैं। मुझे तो कुछ समझ नहीं आ रहा कि यह सब क्या हो रहा है” रचित बदहवास सा होकर बोलता जा रहा था, मानो उसका अपनी सोच पर और अपनी जुबान पर कोई अंकुश ना हो।

“रचित... रचित ! पहले मुझे अपनी बात कहने दोगे? ये आई.आई.टी. का राग अलापना बंद करो। तुम कहीं नहीं जा रहे हो, समझे?” वो एकदम से रचित पर चिल्लाए।

फिर कुछ पल बाद, खुद को शांत करते हुए बोले, “हालांकि मैं तुम्हें ये सब नहीं बताना चाहता था, लेकिन अब शायद मेरे पास और कोई रास्ता नहीं बचा है। कल डॉक्टर आहूजा से मेरी काफी देर बात हुई। तुम जानते हो तुम्हारी मां की मौत का कारण क्या था?”

“हां, उन्हें हार्ट अटैक हुआ था। लेकिन मां की मौत का मेरे कॉलेज जाने से क्या सबंध?” रचित को अपने पापा का सवाल बेतुका सा जान पड़ा। उसे अभी भी वो वजह समझ में नहीं आ रही थी जिसके कारण उसे कॉलेज जाने से रोका जा रहा था।

“हां, यह सच है कि तुम्हारी मां की मौत हार्ट अटैक की वजह से हुई, लेकिन तुम जानते हो इस हार्ट अटैक का कारण क्या था? यह थक्के में विकार के कारण हुआ जिसकी वजह से शरीर के अलग-अलग हिस्सों में खून के थक्के जमने लगते हैं, जैसे कि टांगों की नसों में या दिल की धमनियों में, जिससे खून का प्रवाह रूक जाता है और हार्ट अटैक या किडनी खराब होने जैसे बीमारियां हो सकती हैं।

हिमेटोलॉजिस्ट, डॉक्टर अय्यर ने तुम्हारे कुछ ब्लड टैस्ट कराए थे और इससे हमारा शक़ यकीन में बदल गया कि तुम्हारी मां की बीमारी का कुछ हिस्सा जीन्स के ज़रिए तुम्हारे शरीर में भी आ गया है” बताते हुए उसके पापा की ज़ुबान लड़खड़ा रही थी। उनकी आंखों में आंसू छलक आए थे।

“क्या... लेकिन... पर... मैं... वो...” शब्द मानो रचित के गले में अटक कर रह गए। फिर अचानक से ज़हन में एक सवाल कौंधा और बिना किसी अतिरिक्त कोशिश के ज़ुबान के रास्ते बाहर आ गया, “क्या भैया को भी ये प्रॉब्लम है?”

“नहीं, उसे ऐसी कोई दिक्कत नहीं है। क्योंकि उसका और मेरा ब्लड ग्रुप एक है, जबकि तुम्हारा और तुम्हारी मां का एक था।

डॉक्टर आहूजा का कहना है कि तुम्हें कुछ सालों तक या हो सकता है ज़िंदगी भर दवाइयां लेते रहना होगा। लेकिन बेटा, तुम्हें घबराने की कोई ज़रूरत नहीं, तुम्हें दिन में बस एक बार दो गोलियां लेनी है- एक ब्लड प्रैशर को कंट्रोल करने के लिए और दूसरी खून के थक्कों को न जमने देने के लिए। इसके अलावा हर हफ्ते ब्लड टैस्ट। खैर, दवाइयां वगैरह बहुत नॉर्मल सी बात है, अब मुझे देखो ना, मैं भी तो पिछले पंद्रह सालों से

शूगर और ब्लड प्रैशर की दवाई हर रोज़ लेता हूं" अपना उदाहरण देते हुए उन्होंने रचित को समझाने और सहज करने की कोशिश की। जबकि भीतर ही भीतर रचित से ज़्यादा तो वो खुद डरे हुए थे। दिलासे की ज़रूरत तो उन्हें थी।

"लेकिन पापा, अगर सिर्फ रोज़ की दो गोलियों की बात है, तो क्या आपको नहीं लगता कि यह तो मैं चेन्नई में रहकर भी ले सकता हूं? तो फिर इसके लिए यहां रूकने की और अपना करियर खराब करने की क्या ज़रूरत है?" रचित ने अपनी बात रखी।

वह अपने आई.आई.टी के सपने को इतनी आसानी से कैसे छोड़ सकता था। यही तो वो ख़्वाब था जो उसने रात को बंद आंखों और दिन में खुली आंखों से देखा था, इसके लिए जी-तोड़ मेहनत की थी। जब उसके दोस्त क्रिकेट खेल रहे होते, टी.वी. पर मज़ेदार फिल्में देख रहे होते, वह लगा रहता अपनी किताबों के साथ, अपनी हकीकत और सपने के बीच की दूरी को कम करने के लिए। जाने कितनी रातें उसने जाग कर बिताई थी। यह सिर्फ एक सपना नहीं था, उसका वजूद था और वह अपने ही वजूद को अपने सामने मरते हुए कैसे देख सकता था।

"मेरे बच्चे, समझने की कोशिश करो। तुम्हारी हालत में सुधार ज़रूर हुआ है, लेकिन तुम पूरी तरह से ठीक नहीं हो। तुम अंदर से अभी भी बीमार हो। एक छोटी सी लापरवाही तुम्हारे लिए जानलेवा साबित हो सकती है। अगर वहां तुम्हारी तबीयत बिगड़ गई, तो कौन संभालेगा।"

"लेकिन पापा, आई.आई.टी. मेरा बरसों का सपना है और ये आप भी अच्छी तरह से जानते हो। प्लीज़, मेरी बात को समझने की कोशिश करो। मैं वादा करता हूं, इसके बाद आपसे कभी कुछ नहीं मांगूगा। प्लीज़ पापा, कुछ तो करो..." वह बच्चों की तरह सुबकने और ज़िद्द करने लगा, इस आस में कि शायद उसके पापा का दिल पसीज जाए।

"रचित, मेरे बच्चे, ऐसा नहीं कहते। वैसे भी ज़िंदगी की

कड़वी हकीकत के आगे सपने अक्सर हार जाते हैं” कहते हुए उन्होंने रचित को गले से लगा लिया।

“तुम्हें क्या लगता है? मैंने कोई कोशिश नहीं की? मैं तुम्हारे डॉक्टर्स से पहले ही सलाह ले चुका हूं। तुम्हारी हालत देखते हुए ही उन्होंने मुझे तुम्हें कम से कम एक साल तक अपने पास रखने की सलाह दी है। पहले कुछ दिन तो एक दिन छोड़कर तुम्हारे टैस्ट करवाने होंगे और फिर अगले छह महीनों तक हफ्ते में एक बार। इन टैस्ट की रिपोर्ट के आधार पर ही तुम्हारा इलाज किया जाएगा और यह सब हॉस्टल में रहते हुए मुमकिन नहीं है” उन्होंने रचित को समझाने की कोशिश की।

रचित की आंखों के सामने उसका सपना टूटने की कगार पर था। ज़िंदगी उसके हाथों से यूं फिसल रही थी, जैसे बंद मुट्ठी से सूखी रेत। वह अंदर ही अंदर तड़प रहा था, रो रहा था, सिसक रहा था।

“तो, आप क्या चाहते हैं? कि मैं अपना सपना छोड़ दूं? इस घर की चारदीवारी में घुटता रहूं, पिंजरे में कैद एक पंछी की तरह?” उसके आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे।

वह टूट चुका था... बाहर के साथ-साथ, भीतर से भी। उसके बिखरे हुए सपनों और अधूरी इच्छाओं की बेबसी उसके उदास चेहरे पर साफ दिखाई दे रही थी। लग रहा था मानो किसी ने उससे उसकी ज़िंदगी छीन ली हो, वह जिंदा तो था, लेकिन सिर्फ शरीर से... उसका मन, उसकी रूह तो उसके सपनों से ही जुड़ी थी।

रचित की कहानी सुनते-सुनते खुशी की आंखों में भी आंसू आ गए। वह उसके दर्द को महसूस कर सकती थी, उसके जज़्बात को समझ सकती थी। उसने रचित का हाथ धीरे से अपने हाथों में लिया। वह उन कांपते हुए से हाथों की खुश्की महसूस कर सकती थी। इससे पहले कि रचित अपनी कहानी आगे बढ़ाता, उसने पानी का गिलास उसकी तरफ बढ़ा दिया।

रचित ने कुछ घूंट पानी पिया और फिर आगे बताना शुरू किया।

"मैं ये नहीं कह रहा कि तुम कैद होकर रहो, बल्कि मैं सिर्फ ये चाहता हूं कि तुम हम सब के साथ यहां हमारी आंखों के सामने रहो। वैसे भी मुझे तुम्हारी काबलियत पर पूरा यकीन है। तुम फिर से एंट्रेंस टैस्ट दे सकते हो। यहां किसी भी अच्छे कॉलेज में तुम्हें आसानी से दाखिला मिल जाएगा। इसके अलावा तुम जे.ई.ई. दोबारा से पास करके आई.आई.टी. दिल्ली में दाखिला ले सकते हो। समझने की कोशिश करो, यह सब तुम्हारी भलाई के लिए ही है" उसके पापा की हर दलील उसे खोखली नज़र आ रही थी।

वह खामोश रहा। उसकी हिम्मत जवाब दे चुकी थी, या फिर शायद वह समझ चुका था कि कुछ कहना या सुनना बेमानी है, बेमतलब है। आंखों में आंसू की कुछ बूंदे, कराहती हुई एक रूह और दम तोड़ते हुए कुछ अरमान सीने में लेकर वो चुपचाप वहां से जाने लगा।

"कहां जा रहे हो?" उसके पापा ने पूछा।

"पता नहीं ! बस कुछ देर अकेला रहना चाहता हूं। आप चिंता मत करना, मैं जल्दी वापस आ जाऊंगा" उसने बुझे हुए मन से कहा और वहां से चल दिया।

सीढ़ियों से होता हुआ, वह छत पर गया और आसमान की ओर देखने लगा। उसे घंटो तक आसमान को यूं ही तकते रहना, चांद को बादलों से अठखेलियां करते हुए देखना और सितारों से बातें करना बहुत पसंद था। इसका एक दूसरा कारण ये भी था कि उसका मानना था कि उसकी मां मरने के बाद एक सितारा बन चुकी है। वह जब भी सितारों को देखता उसे लगता कि वह अपनी मां के करीब है।

लेकिन यह रात पहले जैसी नहीं थी। रात के उस अंधेरे में उसे अपनी ज़िंदगी भी काली होती नज़र आ रही थी। इससे पहले उसने खुद को इतना मजबूर कभी महसूस नहीं किया था। ऐसा लग रहा था मानो वो किसी अंधेरी सुरंग में फंसा हो, जहां से ना तो रोशनी की कोई किरण नज़र आती थी और ना ही बाहर निकलने का कोई रास्ता।

उसे लग रहा था मानो इस धरा की हर शह उस पर हंस रही हो, उसका मज़ाक उड़ा रही हो। आज आसमान में सितारे भी नहीं थे। वह हंस दिया। एक दर्द भरी हंसी। यह सोचकर कि आज तो आसमां भी उसके साथ दगा कर गया। वह आंखें बंद करके कुछ देर के लिए ख़ामोश खड़ा रहा - अपने भीतर उठ रही हरेक टीस को दबाने की नाकाम कोशिश में। और कुछ पल बाद, यूं फट पड़ा, मानो कोई ज्वालामुखी फटा हो। उसकी चीखों, उसकी सिसकियों से पूरा आसमान भर गया। वह घुटनों के बल गिर पड़ा, रोता रहा, सुबकता रहा, कब तक, कितनी देर तक उसे खुद कोई अहसास नहीं था।

और जब रोते-रोते थक गया, तो अचानक से मुस्कुराने लगा। उसे अपने पापा की कही वो पंक्तियां याद आने लगी, ”आशा पर आकाश टिका है, सांस हैं धागे उम्मीदों के” कुछ देर तक वह यूं ही शांत बैठा रहा... आत्म-मंथन की स्थिति में। अंदर का डर, अंदर का दर्द निकल चुका था। अब उसके चेहरे पर एक आत्म-संतुष्टि का भाव था, एक सुकून था, एक उम्मीद थी।

वह वापस अपने कमरे में गया और राधिका का नंबर लगाया। बहुत देर तक वो दोनों बात करते रहे और उसके बाद वह सो गया।

फरवरी, 2011

अपोलो हॉस्पिटल, दिल्ली

“राधिका? वह कौन है?” खुशी ने रचित को बीच में टोका।

खुशी का सवाल रचित को वापस अपने वर्तमान में खींच लाया। वह अपने अतीत में इस कदर खो गया था कि भूल ही गया था कि वह एक अस्पताल में है और किसी को अपनी कहानी सुना रहा है।

“ओह सॉरी! राधिका मेरी गर्लफ्रेंड थी” उसने जवाब दिया।

“थी? मतलब? अब क्या हुआ?”

“छोड़ो, मैं इस बारे में कोई बात नहीं करना चाहता। वैसे भी

पुराने जख्मों को कुरेदने से दर्द और तकलीफ़ के अलावा कुछ नहीं मिलता।"

वह एकदम से असहज हो गया। उसे एक खालीपन महसूस हो रहा था, राधिका के जाने के बाद उसे अहसास हुआ कि वह उसके बिना कितना अकेला है। कई बार किसी के ना होने पर ही हमें उसकी अहमियत का पता चलता है, लेकिन तब हम चाहकर भी कुछ नहीं कर पाते।

"ओ हैल्लो, कहां खो गए? मैं तुमसे कुछ पूछ रही हूं? कहीं ऐसा तो नहीं कि इस ब्रेक-अप की वजह से ही तुमने खुदकुशी करने की कोशिश की?" खुशी ने अपनी जांच-पड़ताल जारी रखी।

"नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। मैं तुम्हें सब बताऊंगा, लेकिन सही समय आने पर। अब अगर तुम कहानी सुनना चाहती हो, तो मुझे इसे अपने हिसाब से सुनाने दो। अगर तुम बार-बार परेशान करोगी, तो मैं इसे यहीं पर बंद कर दूंगा।"

"ठीक है बाबा, सॉरी" खुशी ने अपने कानों पर हाथ लगाते हुए कहा। "चलो, अब आगे बताओ।"

"ठीक है" कहकर रचित वापस कहानी सुनाने लगा।

* * * * * *

रचित के घर पर - 2 दिसंबर, 2007, सुबह 10 बजे

"बेटा, तुम्हें इस तरह मुस्कुराते देख बहुत अच्छा लग रहा है। लगता है तुम अपना फैसला ले चुके हो" रचित के पापा ने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा।

"हां, पापा! मैंने कुछ सोचा है" रचित के चेहरे पर शांति के भाव थे।

"मैं जानता था कि तुम हमारे हालात को ज़रूर समझोगे। वैसे मैंने तुम्हारे लिए मेरठ में जे.ई.ई. की ख़ास कोचिंग क्लासेज का पता किया है। यह इंस्टीटयूट जे.ई.ई. की तैयारी के लिए

सबसे बेस्ट इंस्टीटयूट है। क्या पता जे.ई.ई. में इस बार तुम्हारी पहले से भी अच्छी रैंक आ जाए" रचित के पापा ने उसका हौसला बढ़ाते हुए कहा।

"नहीं, पापा ! अब इसकी कोई ज़रूरत नहीं पड़ेगी..." उसने गहरी लंबी सांस लेते हुए कहा।

"लेकिन क्यों?" वो एकदम से चौंक गए।

"अब मैं जे.ई.ई. नहीं करूंगा। मैं कुछ नया करना चाहता हूं" रचित की आवाज़ सपाट लेकिन गंभीर थी।

"नया मतलब? क्या करना चाहते हो तुम?"

"मैं सी.ए. करूंगा..." रचित ने अपना फैसला सुना दिया।

रचित में आए इस बदलाव को देखकर उसके पापा बहुत हैरान थे। वह नहीं समझ पा रहे थे कि रचित सी.ए. क्यों करना चाहता है। वह लड़का जो कल तक आई.आई.टी. जाने के लिए मरा जा रहा था, आज पूरी तरह से उसे छोड़ने की बात कह रहा था। उनका दिमाग शंकाओं से घिरा था।

4

रचित खुशी के साथ अपने अतीत के कुछ ऐसे पलों को सांझा करने में लगा था, जिनमें कहीं पर सपनों और उम्मीदों की चमक थी, तो कहीं बिखरे हुए अरमानो और हसरतों का काला घुप्प अंधेरा।

फरवरी, 2011

अपोलो हॉस्पिटल, दिल्ली

"सी.ए.? सच्ची में!" खुशी हैरान थी।

"हां, मैं इसे लेकर बहुत सीरियस था और अभी भी हूं" रचित ने कहा। उसकी आवाज़ गंभीर थी।

"लेकिन ये ख़्याल तुम्हारे दिमाग में आया कहां से? मेरा मतलब, सी.ए. तो कहीं से कहीं तक तुम्हारी लिस्ट में था ही नहीं" वह अभी भी उलझन में थी।

"खुशी, ज़िंदगी कोई शतरंज का खेल नहीं, जहां आगे क्या करना है आप पहले से ही सोचकर चल सकते हैं। असल ज़िंदगी बहुत अलग होती है। अच्छा या बुरा वक़्त कभी भी बता कर नहीं आता। क्या पता, कब क्या हो जाए" अपने ही ख़्यालों में खोया वह बुदबुदाने लगा।

"हां सच है। वास्तविकता सपनों से अलग होती है। मन ही मन हम चाहे जो भी ख़्वाब बुनते रहें, लेकिन असल ज़िंदगी में

बहुत से समझौते करने पड़ते हैं। लेकिन फिर भी कहीं से तो पनपा होगा, यह सी.ए. करने का ख़्याल” वह होंठ दबाकर हंसने लगी। “अच्छा, सॉरी, अब कोई मज़ाक नहीं। लेकिन फिर भी अचानक से यह सी.ए. करने का ख़्याल कैसे?” खुशी ने दोबारा से पूछा।

“हो सकता है तुम्हें मेरा कारण थोड़ा बकवास लगे, लेकिन यह फैसला मैंने भावनाओं में बहकर या जल्दबाज़ी में नहीं लिया। बल्कि बहुत सोच-समझकर और शांत मन से लिया था।”

रचित एक पल के लिए यहां रूका और उसने खुशी की तरफ देखा। वह उसे पूरे ध्यान से सुन रही थी।

उसने दोबारा कहना शुरू किया, “आई.आई.टी. में दाखिला लेने से पहले पूरी ज़िंदगी मैं एक आम सा स्टूडेंट रहा। चाहते हुए भी कभी ख़ास नहीं बन पाया। और जब ख़ास बनने का मौका मिला, तो इस किडनी प्रॉब्लम ने सभी चाहतों को चकनाचूर कर दिया। अब किसी और कॉलेज में दाखिला लेना मेरे लिए एक समझौते जैसा ही था, वो भी फिर से कोचिंग लेकर एंट्रेन्स टैस्ट पास करने के बाद। एक साल बर्बाद हुआ, वो अलग। मेरी हालत पिंजरे में बंद उस पक्षी के जैसी थी, जिसके पंख काट दिए गए हों” कहते - कहते आंसू की एक बूंद चुपके से उसकी आंख के कोने से फिसल कर गाल पर आ गई। इससे पहले कि खुशी इसे देखती उसने तुरंत इसे पौंछ दिया।

“तो तुमने यह फैसला अपने घमंड के चलते लिया। तुम्हें लगता था कि आई.आई.टी. के अलावा कोई और कॉलेज तुम्हारे लायक नहीं!”

“नहीं, तुम इसे घमंड नहीं कह सकती! हां, संतुष्टि या समझौता कहना ही ठीक रहेगा। हमारे देश में तीन आई हैं, जिनका अपना एक अलग स्टेटस है - आई.आई.टी., आई.आई.एम. और आई.ए.एस.। पहला मैं छोड़ चुका था, दूसरे और तीसरे को करने में मेरी बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं थी।

किसी और इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला लेना मेरे लिए

एक समझौता होता, और मैं अपनी पूरी ज़िंदगी एक समझौते के साथ नहीं जी सकता। इसलिए बहुत सोच-समझकर मैंने सी.ए. करने का फैसला किया। मेरे चाचा जी एक सी.ए. हैं और सोसायटी में उनकी बहुत इज्ज़त है। मुझे लगा कि अगर सी.ए. आई.आई.टी. से ज़्यादा नहीं है, तो उससे कम भी नहीं है। रविवार का अखबार उठाओ और इसका वैवाहिक कॉलम देखो, वर पक्ष वाले हिस्से में आपको सिर्फ तीन तरह के पेशों की मांग देखने को मिलेगी - आई.आई.टी. से बी.टैक, आई.आई.एम. से पी.जी.डी.एम. और सी.ए.” कहते हुए वह खुशी की तरफ देखकर मुस्कुराया।

उसकी बात सुनकर खुशी भी खिलखिलाकर हंस दी।

“अरे हां, शादी की बात से तुम्हारी गर्लफ्रैंड की याद आ गई। क्या नाम था उसका? हां... राधिका। उसके बारे में भी तो बताओ - कहां मिले, कैसे मिले, कैसे अपने प्यार का इज़हार किया, अपनी पहली किस से लेकर अलग होने तक की सारी बातें” खुशी ने चहकते हुए कहा।

“अरे, रूको तो! तुम हमेशा इतनी जल्दी में क्यों रहती हो? अभी तो मैं कम से कम हफ्ता भर यहीं पर हूं। तुम्हें सब कुछ बताऊंगा, लेकिन धीरे-धीरे... हिस्सों में। और फिर मुझे भी तो तुम्हारे बारे में सब जानना है” कहते हुए रचित ने अपनी अकड़ी हुई पीठ को सीधा करने की कोशिश की।

“क्या पता, कल तुम्हारी कहानी सुनने के लिए मैं यहां ना रहूं” खुशी ने कहा।

“क्यों? क्या हुआ? इतनी जल्दी ऊब गई मुझसे?”

“अरे, नहीं! मेरा मतलब कल मुझे छुट्टी मिल जाएगी। और हां, तुम्हारी तरह मेरी कहानी इतनी दिलचस्प नहीं है। मेरा कभी कोई बॉयफ्रैंड नहीं रहा। पूरी-पूरी रात जागकर, समीकरणों के रट्टे मारकर और किताबों के साथ माथापच्ची करके किसी तरह मैंने जे.ई.ई. पार कर ली और आई.आई.टी. दिल्ली में दाखिला लिया... बस यही है मेरी कहानी!” उसने अपनी कहानी चंद लाइनों में समेट दी।

“अरे, पैदा तो हम भी समझदार हुए थे, बस इस पढ़ाई ने निकम्मा बना दिया” रचित ने चेहरे पर शरारत भरी हंसी लाते हुए कहा।

“यह क्या था?” खुशी ने भौंहे चढ़ाकर पूछा। शायद वह उसकी बात का मतलब नहीं समझ पाई थी।

“कुछ नहीं, मज़ाक करने की एक छोटी सी कोशिश... लेकिन यह बहुत बुरा था!” असल में, यह माहौल को हल्का करने की रचित की नाकाम सी कोशिश थी, क्योंकि जो कहानी अब वह खुशी को सुनाने जा रहा था वह अपने आप में ही दर्द से सराबोर थी - एक ऐसा भार जिसे वह जाने कितने दिनों से अपने सीने पर ढो रहा था।

“अच्छा, तो तुम मज़ाक भी कर लेते हो। अच्छा, ये बताओ कि आई.आई.टी के मुकाबले सी.ए. तो तुम्हारे लिए बहुत आसान रही होगी ना?” खुशी ने पूछा।

“यही तो हम इंसानों की सबसे बड़ी प्रॉब्लम है। हमें अपना काम तो काम दिखाई देता है और दूसरों का काम फूलों का बिस्तर। वैसे इसमें तुम्हारा कसूर नहीं है। पहले मैं भी यही सोचा करता था कि यह जे.ई.ई. पार करने से ज़्यादा मुश्किल नहीं होगा, लेकिन सी.ए. ने मुझे गलत साबित कर दिया।”

“मतलब, तुम कहना चाहते हो कि सी.ए. ज़्यादा मुश्किल है?” खुशी ने यूं पूछा मानो उसे रचित की बात पर विश्वास ना हो रहा हो। “खैर बताते रहो और हां, राधिका को मत भूलना” खुशी के उतावलेपन की कोई सीमा न थी जिसे देख रचित हल्का सा मुस्कुरा दिया।

“राधिका मेरा पहला और आखिरी प्यार थी। मेरी सी.ए. की ज़िंदगी और मेरी लव लाइफ दोनों का ग्राफ लगभग एक जैसा ही है” उसने बताना शुरू किया।

उसने धीमे से अपनी आंखें बंद कर ली, मानो अपने अतीत में झांकने की कोशिश कर रहा हो। “मिस राधिका बैनर्जी, मेरी गर्लफ्रैंड, हमारी ब्रांच की सबसे खूबसूरत लड़की थी। मेरा कज़िन

आई.आई.टी. मद्रास में थर्ड ईयर का स्टूडेंट था, इसलिए मैं अपने सीनियर्स के साथ बहुत सहज था। हमारी शुरू की क्लासेज एक नई बनाई इमारत में रखी गई, जो कि हमारे आई.टी. पार्क के काफी नज़दीक थी, लेकिन हमारी हॉस्टल मैस से करीब 2 किलोमीटर दूर (हालांकि एक हफ्ते बाद हमारी सुविधा को ध्यान में रखते हुए बसें लगवा दी गई) हम अक्सर मज़ाक करते कि हमारा कैंपस इतना बड़ा है कि कॉलेज रोमांस भी एक लांग डिस्टैंस रिलेशनशिप जैसा लगता है।"

अपने कॉलेज के दिनों को याद करते हुए रचित के चेहरे पर एक मुस्कान तैर गई। वह मुस्कान जो ज़िंदगी के ऊबड-खाबड़ रास्तों पर चलते हुए शायद किसी संकरे मोड़ पर छूट गई थी।

रचित ने कहना जारी रखा, "कॉलेज के पहले ही दिन, क्लास छोड़कर मैं अपने कज़िन के साथ कैंपस में घूमने लगा। दोपहर में लंच टाइम के दौरान हॉस्टल मैस जाने की बजाय, हम वहीं कैंटीन में बैठ कर स्नैक्स वगैरह खा रहे थे। वहां ज़्यादा भीड़ नहीं थी, क्योंकि फ्रैशर्स का कॉलेज में पहला दिन था और सब रैगिंग से डर रहे थे।

तभी मैंने देखा, एक लड़की सैंडविच की क्वालिटी को लेकर कैंटीन के मालिक के साथ बहस कर रही थी। मेरा ध्यान उस तरफ गया और बस वहीं रह गया। वो दिन मैं कभी नहीं भूल सकता। उस दिन की हर बात मुझे अच्छे से याद है, मानो यह कल की ही बात हो" कहते हुए उसने एक ठंडी सी आह भरी।

"लंबे, घने और चमकते हुए काले बाल, हल्की भूरी आंखें - वैसे एक बात तो है कि आंखों की खूबसूरती के मामले में बंगाली लड़कियों का मुकाबला कोई नहीं कर सकता, तीखी नाक, लाल-गुलाबी होंठ, गोल चेहरा, दिल को छू लेने वाली प्यारी सी हंसी और पतली कमर। तुम्हें यह शायद बहुत फिल्मी लग रहा होगा, लेकिन मेरे लिए यह पहली नज़र का प्यार था। पहला प्यार जो अक्सर बिना बताए अचानक ही होता है... किसी अनजान चेहरे को देखकर एकदम से मन मचल उठता है, दिल में प्यार की

लहरें हिलोरें लेने लगती हैं, कानों में संगीत बजने लगता है और हर जगह नज़र आने लगता है बस वही एक चेहरा। हां मुझे पहली नज़र में ही उससे प्यार हो गया था।"

राधिका का प्यार उसके लिए बहुत ख़ास था। वह उसे बहुत अलग तरह से प्यार करता था- उनका प्यार अनकहा था - जिसे बताने के लिए शब्दों की ज़रूरत नहीं थी और जिसे सिर्फ दिल की गहराइयों से महसूस किया जा सकता था।

"हम्मम.....! प्लीज़, आगे बताओ ना। मुझसे इंतज़ार नहीं होता" खुशी ने कहा।

"मेरे लिए खुद को रोक पाना नामुमकिन था। मैं उसके बारे में सब कुछ जानना चाहता था। मैंने अपने कज़िन से उसके बारे में पूछा। संयोग से हमारे साथ बैठे लड़कों में से एक उसके बारे में जानता था। उसने बताया कि उस लड़की का नाम राधिका है। वह मेरी ही क्लास में है और यहां चेन्नई में अपने रिश्तेदारों के साथ रहती है। पता नहीं क्या था उस चेहरे में कि मैं अनायास ही उसकी तरफ खिंचा चला जा रहा था।"

"रचित और राधिका... सुनने से लगता है जैसे दोनों एक-दूसरे के लिए ही बने हों" खुशी ने हंसते हुए कहा।

"हूंह! काश! यह सच हो पाता" रचित ने घुटी हुई सी आवाज़ में कहा। उसके चेहरे को फिर से उदासी के कोहरे ने ढक लिया।

"अच्छा चलो, छोड़ो। ये बताओ कि तुमने उससे अपने प्यार का इज़हार कैसे किया? जहां तक मेरा ख़्याल है, शुरूआत तुमने ही की होगी, है ना? हां, तो मिस्टर रोमियो, बताओ तो सही ये सब हुआ कैसे? अब तो मज़ा आने वाला है" खुशी ने अपनी हथेलियों को रगड़ते हुए कहा। उसकी आंखों की चमक बढ़ गई।

"उस वक़्त किस्मत मुझ पर मेहरबान थी। उसका रोल नंबर मेरे पीछे ही था। इसलिए हम फिजिक्स और कैमिस्ट्री की लैब

में हमेशा साथ ही होते। मैं शुरू से ही उसे पसंद करता था, लेकिन एक सही मौके के इंतज़ार में था ताकि मौका देखकर चौका जड़ सकूं। और यह मुझे मिला मैथ्स ओलंपियाड के रूप में। मेरी ब्रांच में से तीन और ग्रुप्स के साथ मुझे भी चुना गया और इसमें मेरी पार्टनर थी - राधिका। बस मुझे और क्या चाहिए था बिना कुछ किए मेरे मन की मुराद पूरी हो रही थी।"

उसने कहना जारी रखा, "मैथ्स ओलंपियाड में तीन लेवल होते हैं - पहली लिखित परीक्षा, शब्द पहेली गेम (जैसा कि 'कुछ कुछ होता है' मूवी में था) और मैथ्स क्विज़, जिसके बाद विजेता टीम को चुना जाना था।"

"सुनने में तो दिलचस्प लग रहा है। और ये ओलंपियाड तो तुम ही जीते होगे, ना। आखिर तुम्हें राधिका को इम्प्रैस जो करना था।"

"ओलंपियाड की तैयारी करने के लिए हमें तीन दिन दिए गए। हम अक्सर कॉलेज टाइम में ही प्रैक्टिस करते। यह बहुत मजेदार था। उन तीन दिनों में मुझे उसके बारे में बहुत कुछ जानने को मिला - उसकी पसंद-नापसंद, उसका स्वभाव, उसे किस तरह की फिल्में देखना और म्यूज़िक सुनना पसंद था, उसके शौक, उसके फेवरेट हीरो-हीरोइन, उसकी फैमिली, उसके फ्रेंडस और भी बहुत कुछ। मानो उन तीन दिनों में मैं एक मिशन पर था। मैं हर वो चीज़ जानना चाहता था, जो उससे जुड़ी हो। उसने मुझे अपना फोन नंबर भी दिया, लेकिन हम काम की बात कम, बल्कि इधर-उधर की बातें ज़्यादा करते थे।"

"अरे वाह मेरे हीरो! छा गए तुम तो। वैसे शक्ल से तुम जितने सीधे दिखते हो, उतने हो नहीं" खुशी ने उसकी चुटकी ली, जिस पर रचित थोड़ा झेंप सा गया।

"अच्छा, अब राधिका के नाम की माला जपनी बंद करो और ओलंपियाड के बारे में बताओ।"

"ओलंपियाड बहुत अच्छा रहा। पहले राऊंड में कुल चौबीस टीमें थी। लिखित टैस्ट में मैंने और राधिका ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया और टॉप फाइव में जगह बनाई। दूसरा राऊंड बहुत

मज़ेदार था। अब कम्पिटीशन सिर्फ बारह टीमों के बीच होना था। इस राऊंड से पहले हमें तीन घंटे का ब्रेक दिया गया। ब्रेक के दौरान हम दोनों शब्द पहेली के लिए संकेत बनाने में लगे रहे। गेम के नियम बहुत आसान थे। इसमें हमें इशारों या संकेतों के माध्यम से अपने साथी को गणित से सबंधित किसी शब्द को बताने में मदद करनी थी। हर एक टीम को इसके लिए दो मिनट का वक्त दिया गया। चार से ज़्यादा विजेता होने की सूरत में, लिए गए वक़्त के आधार पर विनर चुना जाना था। छह टीमों ने सही अंदाज़ा लगाया लेकिन हमने तय समय सीमा से बहुत कम वक़्त लिया था। हम दोनों के बीच गज़ब का तालमेल था। आखिरकार हमने फाइनल राऊंड में प्रवेश किया। मैथ्स क्विज़ का यह राऊंड बहुत मुश्किल था। इस राऊंड के अंत में हमारी और इलेक्ट्रिकल डिपार्टमैंट की टीम बराबरी पर रहे। प्रत्येक टीम से पांच सवाल पूछे गए, लेकिन हम दोनों टीमों ने ही सारे सवालों के सही जवाब दिए। बाकी दो टीमें खेल से बाहर हो चुकी थी। अब फैसला टाई-ब्रेकर से होना था। सबके दिलों की धड़कनें बढ़ी हुई थी। आखिरी सवाल हमें दिखाया गया -

$1=1,\ 1=\sqrt{1}$

$1=\sqrt{(-1)\ (-1)}$

$1=\sqrt{-1}\ \sqrt{-1}$

$1=i*i$

$1=i^2$

$1= -1$ (क्योंकि $i^2 =-1$), बताओ कहां गलती है ?

मैंने एकदम से बज़र दबा दिया। ट्रॉफी जीतने का मेरे पास यही एक आखिरी मौका था। फिर एक पल के लिए मैंने अपनी आंखें बंद की, थोड़ा सोचा और कहा, “सर, अगर किसी रियल नंबर का स्कवायर किया जाए, तो इसका स्कवायर रूट उस रियल नंबर की वास्तविक संख्या होती है, इसलिए $\sqrt{(-1)^2}=|-1|=1$, इसलिए तीसरा स्टैप $\sqrt{(-1)\ (-1)}= \sqrt{-1}\ \sqrt{-1}$ गलत था।”

जवाब देते वक़्त मैं बहुत घबराया हुआ था। हालांकि ग्यारहवीं क्लास में मैंने इस बारे में पढ़ा ज़रूर था, लेकिन मैं पूरी तरह से निश्चिंत नहीं था।

मैं बोल तो गया, लेकिन मेरे हाथ-पैर कांप रहे थे। और अगले ही पल, राधिका मुझसे ज़ोर से लिपट गई... मैं समझ गया कि हम ये जंग जीत चुके हैं और मैं अपना प्यार। उस वक़्त मैं खुशी के सातवें आसमान पर था।

अपोलो हॉस्पिटल, दिल्ली (2011)

"मैं जो आज तक अधूरा था, उस एक पल के बाद पूरा हो गया" रचित के चेहरे पर खिली निश्छल मुस्कान उसके अहसास की कहानी ब्यान कर रही थी।

"मैं हॉस्टल पहुंचा ही था, तभी राधिका का मैसेज मिला।"

"हमने कर दिखाया.... इस जीत पर एक पार्टी तो बनती है... चलो ना, कल पार्टी करते हैं..."

"ठीक है, लेकिन मेरी एक शर्त है। तुम्हें कल का पूरा दिन मेरे साथ बिताना होगा और पार्टी मेरी तरफ से होगी और साथ में तुम्हारे लिए एक सरप्राइज़ भी है" मैंने जवाब भेजा।

"ठीक है, पक्का। लेकिन सरप्राइज़ क्या है?"

"जानने के लिए तुम्हें कल तक का इंतज़ार करना पड़ेगा।"

"ठीक है, मैं इंतज़ार करूंगी" उसने लिखा।

"मैं भी..."

"फिर..... अगले दिन क्या हुआ? जल्दी बताओ, मुझसे इंतज़ार नहीं होता" खुशी बेताब हो रही थी।

"हां, हां, बता रहा हूं... थोड़ा सब्र तो रखो" कहते हुए रचित मुस्कुराने लगा।

5

उस रात मैं बहुत खुश था। मैं प्यार में जो था। और यह रात मेरे लिए कुछ ज़्यादा ही ख़ास थी। फ़लक पर निकला अधूरा चांद भी मुझे पूरा लग रहा था। तारे कुछ ज़्यादा ही टिमटिमा रहे थे, मानो मेरी जीत का जश्न मना रहे हों। मैं तुम्हें बता नहीं सकता कि यह कैसा अहसास होता है। दिन के चौबीसों घंटे बस अपने प्यार के बारे में सोचना - सुबह जागने से लेकर रात के सोने तक। ज़हन के हर छोर तक फैली बस उसकी ही कल्पनाएं... कुछ सुलझी तो कुछ उलझी सी, कुछ साफ तो कुछ मद्धिम। आंखों से सपनों तक फैला एक ही चेहरा, जो दिखता है हर एक शह में - किताबों में, फूलों में, फिल्मों में और यहां तक कि मैस की रोटी में भी। जब 'मैं' और 'तुम' जैसे शब्द अपना वजूद खोकर 'हम' बन जाते हैं। हर अहसास की तीव्रता बढ़ जाती है - हम कुछ ज़्यादा हंसते हैं, कुछ ज़्यादा रोते हैं और कुछ ज़्यादा सोचते हैं। उस वक़्त मेरा हाल भी कुछ ऐसा ही था।

हैरानी की बात ये थी कि मेरे जैसा हर वक़्त किताबों में घुसा रहने वाला लड़का, रोमांटिक कविताएं लिखने लगा था, रोमांटिक गाने सुनने लगा था। उस रात भी मैंने अपनी डायरी को खोला, लिखने लगा तो डायरी के खाली पन्नों पर राधिका का अक्स उभर आया, जैसे ही मैंने इसे छूने की कोशिश की, यह एकदम से गायब हो गया। मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि

यह सब मेरे साथ हो रहा था। फिर मैंने पेन उठाया और अपनी डायरी में लिखा-

वो मसरूफ सी सुबह, सूखी सी आंखें और तुम,
एक लंबा सा रास्ता, अनजान सा सफर और हम...

तुम्हारा कुछ पलों का इंतज़ार,
मेरा खामोश सा इज़हार...

तुम्हारी आंखों की घबराहट,
मेरे ओठों की सरसराहट...

तुम्हारे कुछ शब्द, मेरी कुछ खामोशी,
थोड़ा सा होश और थोड़ी सी ही बेहोशी...

तुम्हारा ऊंघना मेरे कांधे पर प्यार से,
मेरा सहलाना तुम्हारे माथे को दुलार से...

तुम्हारा जानबूझ कर जुल्फों को गालों पर गिराना,
मेरा हंस कर उन्हें बार-बार उंगलियों से उठाना...

मेरी रूह में उतरने की तुम्हारी वो कोशिशें,
तुम्हें खुद में बसा लेने की मेरी वो साज़िशें...

तुम्हारा सोचना दिल ही दिल में-
कि ज़रूर कुछ ना कुछ तो बात है,
और मेरा कहना अपने आप से -
कि शायद यह तो बस एक शुरूआत है...

स्पैन्सर प्लाजा, चेन्नई

21 जुलाई, 2007, दोपहर 12.10 पर

"मैं राधिका को इम्प्रैस करने के लिए क्या करूं? उसे ज़्यादा से ज़्यादा हंसाऊँ, ताकि वो मेरे साथ अच्छा महसूस करे। लेकिन, वो तो मेरी पहले ही अच्छी दोस्त है और मेरे साथ काफी सहज है। तो फिर मुझे दिखावा करने की क्या ज़रूरत... और वैसे भी, जितना मैंने उसे जाना था, उसे दिखावा करने वाले लोग बिल्कुल भी पसंद नहीं। तो फिर मैं जैसा हूं, वैसा ही दिखूंगा..., लेकिन इसके लिए

दिखने की क्या ज़रूरत, वैसा तो मैं हूं ही। नहीं, मुझे उसे खुद से दूर नहीं करना, बल्कि पास लाना है। तो फिर क्या करूं? उफ्फ! मुझे लगता है मैं पागल हो जाउंगा...। यह पहली बार तो नहीं है, जब हम मिलने जा रहे हैं। फिर मैं इतना क्यों सोच रहा हूं? कहीं मैं कुछ गड़बड़ ना कर दूं। एक मिनट, मुझे उसके लिए फूल लेकर जाना चाहिए। उसे यह अच्छा लगेगा।" रचित मन ही मन क्या सही, क्या गलत का हिसाब करने में लगा था। यह वही लड़की थी जिसके साथ पिछले तीन दिनों में उसने तीस घंटे बिताए थे। लेकिन फिर भी इस मुलाकात के बारे में सोचकर ए.सी. मॉल में खड़े होने के बावजूद भी वह पसीने-पसीने हो रहा था।

जब भी पहली मुलाकात की बात आती है, तो पता नहीं हम लड़के इतने पागल क्यों हो जाते हैं। भले ही कितना वक़्त लड़की के साथ क्यों न बिताया हो, लेकिन जब प्यार का इज़हार करना हो तो दिल ऐसे कांपने लगता है मानो 440 वोल्ट का करंट लगा हो।

वह जानता था कि वो तो राधिका से प्यार करता है, लेकिन बस उस एक कारण को तलाशने में लगा था जिसकी वजह से राधिका भी उसे प्यार करे। शायद भूल गया था कि प्यार के लिए कोई वजह नहीं होती, कोई कारण नहीं होता, कोई मकसद नहीं होता।

सच था, कि यह उनकी पहली मुलाकात नहीं थी, लेकिन फिर भी पहले वाली मुलाकातों से ख़ास थी, क्योंकि इस मुलाकात के पीछे कोई मकसद नहीं था। दोनों को बस एक-दूसरे से मिलना था, एक-दूसरे को जानना था। मन ही मन रचित खुद को भरोसा दिलवाने की कोशिश में लगा था, लेकिन दिल के किसी कोने में वह जानता था कि उसके लिए यह एक बहुत मुश्किल दिन होगा। दिमाग में बेतुके सवालों की झड़ी लगी थी, जिनसे वह चाहकर भी पीछा नहीं छुड़ा पा रहा था।

वह तेजी से भागता हुआ एक फूलवाले के पास गया, लाल गुलाबों का एक गुलदस्ता लिया और वापस उसी जगह पर आ

गया। वह टकटकी लगाए मॉल के एंट्री गेट की ओर देखे जा रहा था। फिर उसने अपना पर्स टटोला और एक नज़र अपनी घड़ी की ओर दौड़ाई। पिछले पांच मिनटों में यह दसवीं बार था, जब वह घड़ी देख रहा था। देरी से आना लड़कियों की फितरत होती हैं, लेकिन बॉयफ्रेंड ऐसा चाहती हैं जो वक़्त का पाबंद हो।

तभी अचानक से किसी ने उसका नाम पुकारा। वह आवाज़ की दिशा में घूमा। और फिर, अगले कुछ पल के लिए जड़ बन गया। वह वहीं खड़ा बस उसे देखता ही रहा। आवाज़ जैसे गले में ही दब कर रह गई। दिल जैसे सीने से निकलकर भाग जाना चाहता था। वह बला की खूबसूरत लग रही थी।

दिव्य, अद्भुत, शानदार, प्यारी, मासूम, आलौकिक, गजब जैसे शब्द भी उसकी खूबसूरती को ब्यां करने के लिए काफी नहीं थे। आज से पहले वह इतनी खूबसूरत कभी नहीं लगी थी। पता नहीं यह इत्तेफ़ाक़ था या रचित के उमड़ते हुए अहसास कि वह साधारण सलवार-कमीज में भी उसे किसी परी की तरह लग रही थी। वह जब-जब उसकी तरफ देखता, उसे अपना दिल फिसलता सा महसूस होता।

कंधे पर झूलते आधे खुले बाल, काजल से सजी आंखें, मसकारे से सजी पलकें, करीने से बनाई गई पतली भौंहें, होंठों पर लगी हल्की लिपस्टिक, माथे पर सजी वो छोटी सी बिंदी और पतली बलखाती कमर... वह किसी दिव्य लोक की राजकुमारी की तरह लग रही थी। उसकी हर हरकत, हर अंदाज़ रचित को पागल बना रहा था। उसकी तो मानो सिट्टी-पिट्टी गुम थी। बस बेसुध सा होकर राधिका की ओर घूरे जा रहा था।

“अरे, क्या हुआ? कहां खो गए?” राधिका ने उसकी ओर देखकर मुस्कुराते हुए कहा।

“कहीं नहीं! वैसे आज तुम बहुत कमाल की लग रही हो। और हां, इससे पहले कि मैं भूल जाऊं, कि मैं कौन हूं, ये फूल तुम्हारे लिए...” रचित ने फूलों का गुलदस्ता उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा। उसके जज़्बात काबू में नहीं थे।

"सिर्फ आज? मुझे तो लगता था मैं हमेशा से ही तुम्हें अच्छी लगती हूं। वैसे, इतने खूबसूरत फूल लाने के लिए शुक्रिया" उसने पलकें झपकाते हुए कहा। लेकिन जब उसने रचित का लटका हुआ चेहरा देखा तो एकदम से बोली "बुरा मान गए, क्या? मैं तो मज़ाक कर रही थी... वैसे हम जा कहां रहे हैं?"

"ये सब तुम्हें तय करना है, मुझे तो बस इतना पता है कि यह खत्म मेरे सरप्राइज़ के साथ होगा" उसने थोड़ा हिचकिचाते हुए कहा।

"पहले हम एक अच्छे से रेस्टोरेंट में एक अच्छे वाला लंच करेंगे और उसके बाद एक मस्त सी मूवी, क्या कहते हो?" राधिका ने पूछा।

"हुक्म की तामील होगी" रचित ने बड़े नाटकीय अंदाज में आगे की ओर झुकते हुए कहा। और फिर दोनों ही ठहाका लगाकर हंस दिए।

शाम के 5 बजे

"रचित, आज का दिन मुझे हमेशा याद रहेगा। मूवी बहुत अच्छी थी और खाना... खाना भी कमाल का था। पांच बज गए हैं, अब मुझे चलना चाहिए" राधिका ने कहा।

"अरे, ऐसे कैसे? मेरा सरप्राइज़ तो अभी बाकी है।"

"ओह सॉरी, इसके बारे में तो मैं भूल ही गई थी। अच्छा, तो क्या सरप्राइज़ है, अब तो बता दो?"

"आहा... ऐसे नहीं, उसके लिए तुम्हे मेरे साथ आना होगा।"

"तुम्हारे साथ? लेकिन कहां?"

"अरे, चलो तो। यकीन मानो, तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा" रचित ने बाइक स्टार्ट करते हुए कहा।

"ठीक है, चलो देखते हैं, क्या सरप्राइज़ है तुम्हारा" कहते हुए वह उसके पीछे बैठ गई।

करीब बीस मिनट की ड्राइव के बाद, वो एक रेस्टोरेंट के सामने रूके। रचित ने किसी को फोन किया और राधिका को अपने पीछे चलने को कहा।

“रचित, मुझे बहुत डर लग रहा है” राधिका थोड़ी घबरा रही थी।

“क्या तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं? बस पांच मिनट और। तुम अपनी आंखें बंद कर लो और मेरा हाथ पकड़कर मेरे साथ चलती रहो” रचित ने उसे भरोसा दिलाया।

कुछ मिनट और चलने के बाद, राधिका ने पूछा, “क्या अब मैं अपनी आंखें खोल सकती हूं?”

“हां”

और जैसे ही राधिका ने आंखें खोली सामने का नज़ारा सचमुच चौंका देने वाला था।

वे बंगाल की खाड़ी के तट पर खड़े थे। सूरज दिन भर रोशनी बिखेरने के बाद वापस जाने की तैयारी में था। तट से देखने पर यूं लग रहा था मानो यह सागर की अनंत गहराईयों में समा रहा हो। हर बीतते हुए लम्हे के साथ इसका रंग बदल रहा था। वो दोनों खामोश खड़े प्रकृति के इस अद्भुत नज़ारे को अपनी आंखों में समेटने में लगे थे।

रचित शुरू से ही प्रकृति के बहुत करीब रहा था। इसलिए उसकी ज़िंदगी के सभी ज़रूरी फैसलों में प्रकृति का शामिल होना भी लाज़मी था। उसका हमेशा से यही मानना था कि दुनिया का कोई भी ऐशो-आराम, प्रकृति के साथ बिताए कुछ अनमोल पलों से बढ़कर नहीं हो सकता। भगवान का इंसानों से बात करने का अपना एक अलग तरीका है, और वह है - प्रकृति। पक्षियों की चहचहाहट, हवाओं की सरसराहट और नदियों की कल-कल करती हुई आवाज़ें- यह और कुछ नहीं, बल्कि भगवान का बातचीत करने का तरीका ही है। लेकिन यह मधुर संगीत सिर्फ उन लोगों के लिए ही है जो इसे सुनना चाहते हैं, महसूस करना चाहते हैं। और रचित भी ऐसे

लोगों में से ही एक था। आज वह इसी प्रकृति को साक्षी बनाकर अपने प्यार का इज़हार करने जा रहा था।

"रचित, मुझे यहां लाने के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया। इस खूबसूरत नज़ारे के सामने ये मॉल, ये मल्टीप्लैक्स, ये रेस्टोरेंटस तो कुछ भी नहीं। जब हम प्रकृति के करीब होते हैं, तो समझो अपने आप के करीब होते हैं। इससे अच्छा सरप्राइज़ तो कोई हो ही नहीं सकता" राधिका ने कहा। उसके चेहरे पर एक सुकून था, शांति थी जिसे देखकर रचित भी बहुत खुश था।

"लेकिन सरप्राइज़ अभी खत्म नहीं हुआ, ज़रा पीछे मुड़कर देखो।"

वह हल्का सा मुस्कुराई और पीछे मुड़ी। उसने देखा कि कुछ कदमों की दूरी पर एक छोटी सी झोंपड़ी बनाई गई थी। झोंपड़ी के सामने दो कुर्सियां, एक मेज, मोमबत्तियों की हल्की सी रोशनी और मेज के बीचों बीच रखा था एक गुलाब का फूल।

रचित ने बड़ी नज़ाकत से आगे बढ़कर राधिका का हाथ अपने हाथ में लिया और उसे मेज तक ले गया। फिर उसने मेज पर रखा गुलाब उठाया, अपने घुटनों पर झुका और गुलाब का फूल राधिका की ओर बढ़ाते हुए कहना शुरू किया, "जाने कितनी बार मैंने इस इज़हार-ए-मोहब्बत की रिहर्सल की है, लेकिन अब तुम्हारे सामने यूं लग रहा है, जैसे मेरे पास कहने के लिए शब्द ही नहीं है। इस तरह की घबराहट और बेचैनी मुझे पहले कभी नहीं हुई, क्योंकि इससे पहले कभी प्यार ही नहीं हुआ... तुम ओलंपियाड में मेरी पार्टनर बनी, क्या तुम ज़िंदगी भर के लिए मेरी हर खुशी, मेरे हर गम में मेरा पार्टनर बनना पसंद करोगी? मैं इस बात का वादा नहीं करता कि हमारी ज़िंदगी में कभी मुश्किल वक़्त नहीं आएगा, दुख या तकलीफें नहीं आएंगी, लेकिन इस बात का भरोसा ज़रूर दिलवाता हूं कि वक़्त के हर इम्तिहान में, हर मुश्किल घड़ी में, हर दुख-तकलीफ में मैं तुम्हारा हाथ थामें, तुम्हारे साथ खड़ा रहूंगा। मुझमें, मेरे दिल में और मेरी रूह में बसे तुम्हारे इस प्यार के अहसास को कोई नहीं बदल सकता।"

तब तक राधिका की आंखें नम हो चली थी। वह एक कदम आगे बढ़ी और रचित के सीने से लिपट गई। उसके आंसू रचित की शर्ट को भिगो रहे थे, लेकिन ये खुशी के आंसू थे। रचित ने उसके चेहरे को अपनी हथेलियों में भर लिया, फिर धीरे-धीरे उन दोनों के होंठ करीब आए। दोनों ने एक-दूसरे को कई बार चूमा, मानो इस बात की पुष्टि करने में लगे हों कि यह वास्तविकता है या कोई सपना। दोनों बहुत देर तक वहीं बैठे रहे... एक दम खामोश। उनकी आंखें आपस में बातें कर रही थी, शायद शब्दों की अब कोई ज़रूरत ही नहीं बची थी।

अचानक वक़्त का ख़्याल आते ही राधिका एकदम से खड़ी हो गई। उसने घर जाने की बात कही, क्योंकि वह पहले से ही बहुत लेट हो चुकी थी। रचित ने भी ज़िद्द नहीं की। दोनों खुशी-खुशी घर की ओर चल दिए। जैसे-जैसे राधिका का घर नज़दीक आ रहा था, रचित के दिल की धड़कनें स्पीड पकड़ने लगी थी। वह नहीं चाहता था कि राधिका उसे छोड़कर जाए, लेकिन वह मजबूर था।

"मेरा घर आ गया है। आज का दिन मेरी ज़िंदगी का सबसे यादगार दिन था। ऑल थैंक्स टू यू" राधिका ने कहा।

"सिर्फ थैंक्स से काम नहीं चलेगा" रचित की आवाज़ में शरारत थी।

"तो फिर और क्या चाहिए?"

"अपनी आंखें बंद करो" रचित उसके कान में बुदबुदाया।

राधिका ने अपनी आंखे बंद की और मुस्कुराने लगी। उसकी मुस्कुराहट में एक अजीब सा नशा था। रचित चाहता था कि यह पल किसी तरह से यहीं थम जाए और वह ऐसे ही राधिका को देखता रहे। उसने जेब से एक छोटा सा पैकेट निकाला और राधिका के हाथ में थमा दिया।

"ये क्या है? अब और कितने सरप्राइज़ दोगे?" राधिका ने आंखें खोलते हुए हैरानी से पूछा।

"अरे बाबा, रूको तो। तुम लड़कियां इतनी उतावली क्यों हो जाती हो? अच्छा सुनो, इसे घर जाकर खोलना। और हां, मुझे

फोन करके बताना मत भूलना कि यह तुम्हें कैसा लगा। चलो, अब मुझे चलना चाहिए। वैसे भी, अब तुम जो मेरे पास हो, तो मुझे और कुछ नहीं चाहिए।"

इसके बाद रचित वहां से चला आया।

दूसरी तरफ, राधिका दौड़ती हुई अपने कमरे में गई और रचित का दिया पैकेट खोला। इसमें एक पैनडेन्ट था, जो उसे बहुत पसंद आया। इसके साथ ही इसमें एक कागज़ भी था।

वह बैड पर बैठी, कुहनी को दायीं ओर तकिए पर टिकाया और उस कागज़ के टुकड़े में लिखा हुआ पढ़ने लगी-

चल कहीं दूर चलें...
जहां कोई ना हो तेरे मेरे सिवा,
ना तू मुझसे हो दूर ना मैं तुझसे जुदा।
कुछ खामोशी हो कुछ बाते हों,
बातों में लंघती सी कुछ रातें हों।
चल कहीं दूर चलें...

जहां रंग बिखरे हों फिज़ाओं में,
तेरे सांसों की खूशबू हो हवाओं में।
जहां प्यार बरसाते बादल हों,
और उसमे भीगता सा तेरा आंचल हो।
चल कहीं दूर चलें...

जहां तेरे साए से लिपटा रहे मेरा साया
ना पास अपना हो कोई ना ही कोई पराया।
तेरे कुछ शिकवे.. मेरी कुछ शिकायतें हो
कुछ मनमानियां, कुछ हिदायतें हों।
चल कहीं दूर चलें...

जहां जिधर भी देखूं बस तू ही दिखाई दे
जो भी सुनूं बस तेरी ही आवाज़ सुनाई दे।
थोड़ी आस हो.. थोड़ी प्यास हो,
सिर्फ तू ही तू मेरे पास हो।
चल कहीं दूर चलें...

कविता पढ़कर राधिका मुस्कुरा दी। उसे रचित के लिखे ये शब्द भी उतने ही सच्चे जान पड़े, जितना कि रचित का दिल।

उसने जल्दी से अपना फोन उठाया और रचित के लिए एक मैसेज टाइप करना शुरू किया।

"आज के दिन का हर लम्हा, खूबसूरत यादें बनकर ज़िंदगी भर मेरे साथ रहेगा। तुम्हारा दिया गुलाब, तुम्हारा इज़हार-ए-मोहब्बत, तुम्हारी कविता, तुम्हारा दिया पैन्डेन्ट और तुम्हारा प्यार मेरे लिए ज़िंदगी की सबसे बड़ी सौगात है। वैसे मुझे पता नहीं था कि तुम इतना अच्छा लिखते हो! थैंक्स! दिल से।"

रचित यह मैसेज पढ़कर बहुत खुश था। फिर जल्दी से उसने भी राधिका को जवाब दिया।

"तुम्हारे साथ गुज़रा हर लम्हा मेरे लिए भी बहुत ख़ास है। तुम्हारी मुस्कुराहट ही मेरे लिए सब कुछ है।"

6

फरवरी, 2011

अपोलो हॉस्पिटल, दिल्ली

“अरे वाह, क्या स्टोरी है! एकदम फिल्मी-शिल्मी!” खुशी जोश में आकर चिल्लाई।

“हम्मम...”

“अच्छा, तुम्हारे पास उस दिन की कोई फोटो है क्या?” खुशी ने उत्सुकता से पूछा।

इस सवाल ने रचित के दिल में अजीब सी हलचल मचा दी। वह उस दिन जिए हर एक पल को फिर से जीना चाहता था, उस दिन की हर बात को फिर से याद करना चाहता था, क्योंकि वह दिन उसकी ज़िंदगी का सबसे हसीन दिन था। उसने खुशी को कुछ वक़्त के लिए उसे अकेला छोड़ने की गुज़ारिश की। खुशी बिना कोई आना-कानी किए मान गई, क्योंकि उसे भी रचित की भावनाओं का अहसास था।

रचित ने अपनी आंखे बंद की और वापस उस रात में चला गया जिसने राधिका और उसके दिल की डोर को हमेशा-हमेशा के लिए एक-दूसरे के साथ बांध दिया था।

22 जुलाई, 2007
राधिका का घर

राधिका ने सोने की बहुत कोशिश की, लेकिन नींद उसकी आंखों से कोसों दूर थी। वह उस दिन की उन खुशगवार यादों में खोई थी जिन्होंने उसके दिल और रूह को एक नई ज़िंदगी दी थी। प्यार एक बहुत खूबसूरत अहसास होता है और यह और भी प्यारा बन जाता है जब किसी रिश्ते का रूप ले ले। पहली बार उसे इस सच्चाई का अहसास हुआ। उसने अपना फोन उठाया और टाइम देखा। रात के 12 बजे थे। बिना कुछ सोचे, उसने रचित का नंबर लगा दिया।

रचित का फोन बजा। मोबाइल की स्क्रीन पर राधिका का नाम फ्लैश होता देखकर वह एकदम से चौंक गया। सैंकड़ों ख़्याल एकदम से ज़हन में कौंध गए। कंपकंपाते हाथों से उसने फोन उठाया।

"हैल्लो राधिका, सब ठीक तो है ना? क्या हुआ?" राधिका को कुछ कहने का मौका दिए बगैर वह बोल पड़ा।

"पता नहीं, रचित, लेकिन दिल में कुछ-कुछ हो रहा है। तुमसे मिलने का, तुम्हारे साथ कुछ और वक़्त बिताने का मन कर रहा है" वह प्यारी सी आवाज़ में कह उठी। जब भी प्यार जताने की बारी आती है तो लड़कों के मुकाबले लड़कियां कहीं आगे होती हैं। इस बार भी बाज़ी राधिका ने मार ली थी।

"तो, क्या मैं तुम्हारे घर आ जाऊं?" रचित ने पूछा।

"उम्मम... सच कहूं, मेरा दिल तो हां कहने को मचल रहा है" राधिका ने अपने दिल के अहसास ब्यान कर दिए।

"तो फिर इंतज़ार किस बात का, आ रहा हूं मैं" रचित ने शरारत भरी आवाज़ में कहा।

इससे पहले कि राधिका कुछ कह पाती, रचित ने फोन काट दिया।

अपने कमरे में अकेली बैठी राधिका को बहुत बेचैनी सी

महसूस हो रही थी। सिवाय अपने प्यार के, वह किस से अपना हाल-ए-दिल ब्यान करती। इसीलिए उसने रचित को फोन किया और पूरी ईमानदारी से अपने अहसासों को बता दिया। फिर किसी तरह से हिम्मत जुटाई और दबे पांव कमरे से बाहर आ गई।

दो लोगों के बीच का प्यार सिर्फ शारीरिक ही नहीं होता, बल्कि भावनात्मक होता है। और इसका मुख्य आधार होता है- विश्वास। अक्सर ऐसा भी होता है, कि कई चेहरों को देखते ही उनपर भरोसा करने का मन करता है और कुछ को धीरे-धीरे, वक़्त के साथ-साथ विश्वास बनाना पड़ता है। वो रिश्ता, जिसमें भरोसा ना हो, विश्वास ना हो, वह रिश्ता नहीं होता।

जल्दबाज़ी में, राधिका अपना फोन अपने कमरे में ही भूल गई।

उधर दूसरी तरफ, रचित ने अपने एक दोस्त को जगाकर उससे गाड़ी की चाबी ली, फिर किसी तरह बचते-बचाते हॉस्टल से बाहर निकला और राधिका के पास आने के लिए चल दिया। उसने राधिका को बताने के लिए फोन किया कि वह रास्ते में है और किसी भी वक़्त उसके पास पहुंच सकता है।

लेकिन फोन तो कमरे में पड़ा था। उसने कई बार कोशिश की, लेकिन बात ना हो पाई। पंद्रह मिनट पहले हुई बातचीत के बाद से, उनका आपस में कोई संपर्क नहीं हुआ था। दोनों की बेताबी चरम सीमा पर थी।

उधर सफेद शाल में लिपटी राधिका मेन गेट के पास खड़ी, अपने ही ख्यालों में खोई, बेसब्री से रचित के आने का इंतज़ार कर रही थी। रचित से मिलने की कल्पना मात्र से ही उसके चेहरे पर मुस्कान खिल आई थी। रात के उस पहर में चांद उन दोनों के बीच उमड़ते बेपनाह प्यार का गवाह बन रहा था।

थोड़ी दूरी से रचित को किसी के बाहर खड़े होने का अंदेशा हुआ, लेकिन वह उसे पहचान नहीं पा रहा था, क्योंकि राधिका ने सफेद शाल ओढ़ा था। थोड़ा नज़दीक आने पर उसने यकीन हुआ कि यह राधिका ही थी।

रात के 12:20

“बंदा आपकी खिदमत में हाज़िर है, मैडम!” रचित उसे कमर से जकड़ते हुए फुसफुसाया।

राधिका ने खुद को उसकी पकड़ से छुड़ाने की नाकाम कोशिश की। फिर उसने शरमाकर नज़रें झुका ली। उसका चेहरा लाल हो गया था।

“तो फिर चला जाए?” रचित की आंखों में शरारत तैर रही थी।

“हां... ” राधिका भी शरमा रही थी।

बताने की ज़रूरत नहीं है, कि उन दोनों के दिलों में क्या चल रहा था। जब अपने आप पर कोई काबू ना हो, दुनियादारी का खौफ़ दिल से निकल जाए, समाज के बंधन, नियम और कानून ढ़कोसला जान पड़े तो समझो बाबू, आप प्यार में हैं। उन दोनों के साथ भी कुछ ऐसा ही था।

रचित ने चाबी घुमाई, गाड़ी स्टार्ट की और वो एक रोमांटिक लांग ड्राइव के लिए निकल गए।

“पहले तो मेरी बहुत याद आ रही थी, फिर अब इतनी दूर क्यों बैठी हो?” रचित ने मनचले अंदाज में पूछा।

यह सुनकर राधिका ने धीरे से अपना हाथ गियर की ओर बढ़ाया और रचित के हाथ पर रख दिया। उसके हाथों की नज़ाकत और छुअन से रचित के दिल में एक हलचल सी हुई।

“इतनी खूबसूरत रात मैने ज़िंदगी में कभी नहीं देखी” राधिका ने एक मीठी सी, प्यार भरी आवाज़ में कहा।

थोड़ा आगे चलकर, रचित ने गाड़ी रोक दी। राधिका ने अपना सिर उसके कंधे पर टिका दिया।

“थोड़ा करीब आओ, मैं तुम्हारी सांसों को महसूस करना चाहता हूं।”

“मेरे पेट में मानो तितलियां उड़ रही हैं” राधिका ने मासूमियत से कहा।

हाइवे पर आती-जाती गाडियों की रोशनी के बीच, दोनों एक-दूसरे की आंखों में अपना अक्स तलाशने में लगे थे।

रचित ने राधिका को उसकी कमर से पकड़ा और उसके चेहरे को अपने बहुत पास ले आया। वह बार-बार अपने हाथों से चेहरा छिपाने की कोशिश करती, लेकिन रचित के पागलपन के सामने उसकी यह कोशिश बेकार थी।

दोनों इतने करीब थे कि एक-दूसरे के दिल की धड़कन सुन सकते थे। और फिर आया इच्छाओं का एक भयंकर तूफान, जिसमें लाज और हया के सारे बंधन तिनके की तरह बिखर गए। दोनों एक-दूसरे से पागलों की तरह लिपट गए। दोनों एक-दूसरे को चूम रहे थे, नोंच रहे थे, खरोंच रहे थे मानो इस पल के लिए जाने कितनी सदियों से भूखे हों। उन आहों और कराहों का दौर बहुत देर तक चलता रहा। गाड़ी के अंदर की खामोशी में उनके चूमने की आवाज़ साफ सुनाई दे रही थी। उस प्यास की मानो कोई सीमा ना थी।

अचानक गुज़रते वाहनों की आवाज़ से उन्हें अहसास हुआ कि वो सड़क पर थे।

राधिका ने शरमाकर मुंह नीचे कर लिया। लेकिन रचित अभी भी उसके प्यार के नशे में था। "एक बार और..." उसने राधिका से पूछा या बताया, ये तो पता नहीं, लेकिन वो दोनों ही पागलपन की हद तक प्यार करना चाहते थे।

राधिका ने उसका चेहरा अपने हाथों में भरा और अपने होंठों को उसके होंठों पर रख दिया। प्यार का उन्माद जोरों पर था।

"रचित, मुझे दर्द हो रहा है" राधिका ने कराहते हुए कहा।

"क्यों? तुम्हें तो पूरी ज़िंदगी इन्हीं बांहों में गुज़ारनी है, इसलिए अभी से आदत डाल लो" कहते हुए रचित ने अपनी पकड़ ढीली कर ली।

राधिका तेजी से उसकी गोद में पलटी। रचित उसे सीने से लगाए, उसकी सांसों की गर्माहट को महसूस कर पा रहा था।

रचित के चेहरे को अपने हाथों में लिए राधिका, उसकी आंखों में देख रही थी, मानो अपने मन में उठ रहे सैंकड़ों सवालों के जवाब तलाशने में लगी हो, सवाल ये की - "कहीं ये जल्दबाज़ी तो नहीं? ये प्यार है या इच्छाओं का ज्वार? उन दोनों के रिलेशनशिप का भविष्य क्या है? कहीं वो दोनों कोई गलती तो नहीं कर रहे?"

रचित की आंखों में उसे अपने लिए बेपनाह प्यार दिखाई दिया। अपने सारे सवालों का जवाब उसे बस इस एक झलक में मिल गया। उसने रचित के माथे को चूम लिया। लेकिन इस बार का चुम्बन बहुत हल्का और शांत था, इसमें इच्छाओं से ज़्यादा अहसासों की प्रबलता थी।

उनका प्यार मासूम था और निर्दोष भी, शांत था और उन्मत्त भी, पवित्र था और थोड़ा दागदार भी।

रात के 1.15 बजे, नेशनल हाइवे

अचानक उन्हें एक पुलिस वाले की सीटी की आवाज़ सुनाई दी, वो जल्दी से एक-दूसरे से पीछे हट गए और गाड़ी के आस-पास देखने लगे कि कहीं कोई उन्हें देख तो नहीं रहा।

वहां कोई नहीं था, जानकर उन्होंने चैन की सांस ली। कुछ पुलिस वाले हाइवे पैट्रोलिंग पर थे और खुशकिस्मती से वो अभी भी वैन से बाहर नहीं निकले थे।

रचित ने जल्दी से सीट बैल्ट लगाई और वापस जाने के लिए गाड़ी स्टार्ट की। रचित को म्यूजिक सुनना बहुत पसंद था, पुलिस वाली घटना से राधिका का ध्यान हटाने के लिए उसने म्यूजिक सिस्टम ऑन किया और रोमांटिक गाने चला दिए। राधिका ने अपनी आंखें बंद की और रचित के कंधे पर सिर टिका कर लेट गई।

रात का समय, चलती हुई गाड़ी, ठंडी-ठंडी हवा और एक-दूसरे का साथ। वो दोनों मानो किसी स्वपनलोक में थे। यूं ही लेटे- लेटे राधिका की आंख लग गई। ठंडी हवा के झोंकों से

राधिका के बाल बार-बार उड़कर रचित के चेहरे पर आ रहे थे। गाड़ी चलाते वक़्त रचित बार-बार सोई हुई राधिका के मासूम चेहरे की ओर देख रहा था। और तभी सड़क पर सामने से आती हुई गाड़ी की पीली रोशनी उसकी आंखों में पड़ी और उसने एकदम से ब्रेक लगा दिए। झटके की वजह से एकदम से राधिका की नींद खुली।

"क्या हुआ? सब ठीक है ना?" राधिका ने एक सहमी सी आवाज़ में पूछा।

"हां, सब ठीक है। बस, तुम्हें देखने में इतना खो गया कि ध्यान ही नहीं रहा कि मैं गाड़ी चला रहा हूं" रचित ने जवाब दिया।

"ओह सॉरी, गलती मेरी है। मेरी ही आंख लग गई थी। मुझे सोना नहीं चाहिए था" कहते हुए उसने रचित के चेहरे को छुआ।

"कोई बात नहीं, तुम चाहो तो थोड़ा और सो सकती हो" कहते हुए वह राधिका के बालों को सहलाने लगा।

"वैसे, टाइम क्या हुआ है?" राधिका ने उसे बीच में टोका।

"रुको, मैं अपनी घड़ी लाना भूल गया। अभी मोबाइल में देखकर बताता हूं।"

"ओह शिट, मैं अपना फोन तो घर पर ही भूल आई" राधिका ने चिंतित स्वर में कहा।

"तभी मैं सोच रहा था कि तुमने मेरा फोन क्यों नहीं उठाया"

"2 बज रहे हैं" रचित ने बताया।

"इससे पहले कि घर पर किसी को पता चले, मुझे लगता है हमें अब वापस चलना चाहिए।"

"हां, मैं तुम्हें सही-सलामत घर पहुंचा दूंगा, लेकिन इतनी जल्दी नहीं" रचित ने उसकी कमर में हाथ डालते हुए कहा।

"मतलब ? तुम फिर से सड़क के बीचों बीच रोमांस करना चाहते हो?"

"क्यों? कोई शक?" रचित ने झटके से उसे अपनी तरफ खींचा।

उसे अपनी बांहों में लेकर, फिर से उसे प्यार करने लगा।

करीब दस मिनट बाद, उन्होंने अपनी आंखें खोली। राधिका ने एक लंबी सांस ली और खुद को शांत किया। रचित यह देखने के लिए कि कहीं कोई आस-पास है तो नहीं, गाड़ी से बाहर निकला।

"चिंता मत करो, सब ठीक है" उस ने गाड़ी में वापस बैठते हुए कहा।

"ठीक है, लेकिन अब हमें चलना चाहिए।"

यह सुनते ही रचित का चेहरा उतर गया। "उदास मत हो, हम सब सुबह कॉलेज में तो मिल ही रहे हैं ना" राधिका ने समझाया।

"बेशक, लेकिन अभी मैं तुम्हें ऐसे जाने नहीं दूंगा" रचित ने ज़ोर देकर कहा।

"रचित, मैं, खुद तुम्हें एक पल के लिए भी नहीं छोड़ना चाहती, लेकिन हमारे पास इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है।"

राधिका ने उसे गले से लगाया और उसके गाल पर चूमते हुए दिलासा देने की कोशिश की और फिर वे वापस घर की ओर चल दिए।

"राधिका, आज की रात मेरे लिए ज़िंदगी में बहुत ख़ास है। अगर तुम इजाज़त दो, तो मैं इन कुछ सुहाने पलों को अपने मोबाइल में कैद करना चाहता हूं" रचित ने कहा।

"मैंने पहले कभी तुम्हें किसी बात के लिए मना किया है?" राधिका मुस्कुरा दी।

"ये हुई ना बात" कहते हुए उसने प्यार से राधिका के गालों को खींचा। राधिका का घर वहां से बस थोड़ी दूरी पर ही था। उन्होंने गाड़ी साइड में लगाई। इससे पहले कि राधिका गाड़ी से

बाहर निकलती, रचित ने उसे कसकर गले से लगा लिया। इस तरह एक बार फिर से दोनों कुछ पलों के लिए अपने प्यार की दुनिया में खो गए।

अपने इन हसीन पलों को उन्होंने एक तस्वीर के रूप में रचित के मोबाइल में कैद कर लिया।

"रचित, वादा करो, तुम कभी मुझे छोड़कर नहीं जाओगे। तुम्हारी हर सांस पर मेरा नाम होगा और मेरी हर सांस पर तुम्हारा। हम हमेशा एक-दूसरे के लिए जिएंगे और आखिरी सांस तक ऐसे ही एक-दूजे को प्यार करते रहेंगे" कहते हुए राधिका की आंखों में नमी उतर आई।

"वादा रहा। तुम जैसा चाहती हो, वैसा ही होगा। मैं तुम्हारी हर ख़्वाहिश पूरी करूंगा। आई लव यू!" उत्तेजना में रचित की आवाज़ थोड़ी तेज़ हो गई।

राधिका ने उसके मुंह पर हाथ रखा और उससे चुप होने की गुज़ारिश की। रचित ने शरारत में उसके हाथ पर ज़ोर से काट लिया।

सुबह के 3:40 बजे

अब दोनों का एक-दूसरे से अलग होने का वक़्त आ चुका था।

राधिका ने उसके गाल पर चूमा और कहा, "बाय रचित, अपना ख़्याल रखना।"

"तुम भी। और हां, अपने कमरे में पहुंचकर मुझे मैसेज कर देना, नहीं तो मुझे चिंता लगी रहेगी।"

"ठीक है। अच्छा, अब मैं गाड़ी से उतर रही हूं और मेरे उतरते ही तुम तुरंत यहां से चले जाना" उसकी आंखों में चिंता थी।

"नहीं! मैं तुम्हारा मैसेज मिलने के बाद ही यहां से जाऊंगा" रचित ने ज़िद्द की।

"रचित, तुम सचमुच बहुत ज़िद्दी हो" राधिका ने झूठा गुस्सा दिखाते हुए कहा।

राधिका हौले से गाड़ी से उतरी और अपने घर की ओर चल पड़ी। रचित वहीं गाड़ी के अंदर से ही उसे जाते हुए देखता रहा... जब तक वह आंखों से ओझल न हो गई।

राधिका बालकॉनी के रास्ते अपने कमरे में पहुंची, अपना फोन उठाया और रचित को सुरक्षित अपने कमरे में पहुंचने के बारे में मैसेज कर दिया। उसके बाद रचित भी वहां से चला आया और हॉस्टल पहुंच कर कार के अंदर खिंची उन दोनों की तस्वीर को देखते-देखते वह गहरी नींद में सो गया।

7

फरवरी, 2011

अपोलो हॉस्पिटल, दिल्ली

रचित अपने अतीत की यादों से बाहर आया, उसने खुशी से वादा किया कि थोड़ा ठीक होते ही वह उसे राधिका और उसकी पहली मुलाकात वाली फोटो ज़रूर दिखाएगा।

"अच्छा, मुझे अपने कॉलेज और हॉस्टल के बारे में भी तो बताओ ? सुना है तुम लड़के अपने हॉस्टल में बहुत धमाल मचाते हो" खुशी रचित की ज़िंदगी के किसी भी किस्से को जाने बिना छोड़ना नहीं चाहती थी।

"हा हा हा... एक लड़के के कमरे में जाना... सोच लो, कहीं लेने के देने ना पड़ जाएं!" रचित खिलखिलाकर हंसा।

"जैसा कि मैंने तुम्हें पहले बताया है, हम एक कमरे में चार लड़के थे, और वो भी अलग-अलग राज्यों से। इकट्ठे रहकर हमने एक-दूसरे के कल्चर्स को जाना। लेकिन एक चीज़ है, जो देश के सभी हॉस्टल्स में एक जैसी होती है, फिर चाहे वो हॉस्टल सी.ए. का हो, एम.बी.ए. का हो या फिर बी-टैक का।"

"और वो क्या?" खुशी ने उत्सुकता से पूछा।

"रात को 2 बजे से पहले कोई नहीं सोता। सारे के सारे रविवार को ही अपने कपड़े धोते हैं और हर एक के कमरे में '*सुटटा*' होता है" रचित ने आंखें मटकाते हुए कहा।

"पहली दो बातें तो मुझे समझ में आ गई, लेकिन ये तीसरी वाली का क्या मतलब हुआ?"

"यह एक मशहूर गाना है।"

"अच्छा, लेकिन मैंने तो ऐसे किसी गाने के बारे में कभी नहीं सुना? कब रिलीज़ हुआ?" खुशी ने मासूमियत से पूछा।

"इस तरह के गाने रिलीज नहीं होते, बल्कि इन्हें डाउनलोड किया जाता है और फिर ब्लूटुथ के ज़रिए एक फोन से दूसरे फोन में ट्रांसफर किए जाते हैं" रचित उसे बताते हुए गर्व महसूस कर रहा था।

"हूंह। अच्छा, मुझे इसके बोल ही बता दो, क्या पता बोल सुनकर कुछ याद आ जाए।"

"यार प्लीज़, मैं तुम्हारे सारे सवालों के जवाब दूंगा, लेकिन इस गाने-वाने के चक्कर में मुझे मत फंसाओ, वैसे भी यह लड़कों वाला गाना है। किसी लड़की के सामने नहीं गा सकते" दिल ही दिल में वह खुशी की मासूमियत पर हंस रहा था।

"हम्म्म... ठीक है। तुम्हारी मर्ज़ी। चलो फिर, अपने दोस्तों के बारे में ही कुछ बता दो।"

"हमारा बहुत बड़ा ग्रुप था। हालांकि, शुरूआत में मुझे उन साऊथ इंडियन के साथ रहने में काफी परेशानी हुई, लेकिन वक़्त के साथ-साथ हमें एक-दूसरे की आदत पड़ गई।

संदीप, राज और जय मेरे बहुत करीबी दोस्त थे।

राज जोकि मेरा रूममेट था - एक नंबर का कंजूस। जब कभी हम खाना खाने बाहर जाते, तो खाना ऑर्डर करने में तो वो सबसे आगे रहता और जब बिल चुकाने की बारी आती, तो किसी न किसी बहाने वहां से रफूचक्कर हो जाता।"

"ऐसे कैसे?" खुशी ने हैरानी से पूछा।

"कैसे, मतलब? बहानों की कोई कमी होती है क्या। बिल चुकाने के वक़्त या तो वह वॉशरूम भाग जाता या फिर वही घिसे-पिटे डायलॉग, *'सॉरी, मैं अपना पर्स लाना भूल गया'*, *'यार,*

इस बार बहुत कड़की है', 'यार, इस बार तुम दे दो, अगली बारी मेरी पक्का' कई बार तो हम सोचने को मजबूर हो जाते कि उसके कपड़ों में कोई जेब है भी या नहीं! हमारी आपस में शर्त लगा करती कि अगर कोई राज की जेब से पैसे निकलवा ले, तो उसका एक महीने का कैंटीन का बिल हम भरेंगे।"

यह सुनकर खुशी खिलखिलाकर हंस पड़ी।

"एक कहावत है कि मारवाड़ी बहुत अच्छे बिजनेसमैन होते हैं। और ऊपर से, वो तो था भी गुजराती। एक बहुत मज़ेदार मारवाड़ी चुटकुला है, जिसे लेकर हम अक्सर उसकी खिंचाई किया करते थे।"

एक मारवाड़ी मरकर भगवान के पास जाता है और स्वर्ग और नरक के बीच में जाकर खड़ा हो जाता है।

भगवान: मैं तुम्हें कहां भेजूं और क्यों भेजूं ?

एक नज़र दोनों ओर मारने के बाद, वह बोला, ये जो बीच की जगह है ना, इसपर एक दुकान करवा दो।

"बकवास बंद करो, रचित। मैं भी एक बनिया (गुप्ता) हूं। सभी एक जैसे नहीं होते" खुशी ने चिढ़ते हुए कहा।

"अरे, इसमें चिढ़ने वाली क्या बात है। मैं भी तो एक बनिया हूं और मुझे नहीं लगता कि खुद का मज़ाक उड़ाने से बेहतर कुछ है। चलो, छोड़ो... मिट्टी डालो। अब मेरे दूसरे दोस्त जय की ओर चलते हैं। जय एक बंगाली और मस्त-मौला टाईप लड़का था। वह कभी कोई टैंशन नहीं लेता था। सारा दिन हंसता रहता। लेकिन उसकी एक बुरी आदत भी थी- सिगरेट।"

"ओह ! मुझे सिगरेट पीने वालों से सख़्त नफ़रत है" खुशी ने नाक-मुंह सिकोड़ा।

"और मुझे भी। लेकिन उसका दिल बहुत साफ़ था। और वैसे भी, दोस्ती में इन बातों को दरकिनार करना पड़ता है। हालांकि, उसका सरनेम 'घोष' था, लेकिन हम उसे *'घोस्ट'* बुलाया करते थे।"

"किसी के सरनेम का मज़ाक बनाना अच्छी बात नहीं है" खुशी ने थोड़ा गुस्सा करते हुए कहा।

"अरे, हम उसके सरनेम की वजह से नहीं, बल्कि उसकी बुरी आदतों की वजह से उसे 'घोस्ट' बुलाते थे। पूरे हॉस्टल में वह सबसे आखिर में सोने वाला लड़का था। पूरे आई.आई.टी. में यह बात मशहूर थी कि *'जय एक ऐसा लड़का है जो कभी नहीं सोता।'* हमेशा एक हाथ में सिगरेट और दूसरे हाथ में मोबाइल पकड़े अपनी गर्लफ्रैंड के साथ बात करता रहता है। लांग डिस्टैन्स रिलेशनशिप की यही सबसे खराब बात है" बताते हुए रचित ने रुक कर खुशी की तरफ देखा।

"बोलते रहो, मैं सुन रही हूं?" खुशी ने कहा।

"तीसरा था, संदीप। वह हमारे ग्रुप का सबसे महत्वाकांक्षी लड़का था। एक ठेठ बिहारी। मतलब, जो भी करता पूरी जान लगा देता। दूसरे शब्दों में कहूं, तो वो एक पैदायशी नेता था। वह एक मजबूत शख्सियत था और कभी किसी भी मुद्दे पर अपनी बात कहने से नहीं चूकता था। इसी वजह से उसे हमारे सैक्शन का सी.आर. (क्लास का प्रतिनिधि) चुना गया। वह हमारे *चाय-सुट्टा सैशन* की जान था। इसके अलावा सिद्धार्थ, तेजा, प्रत्यूष और राम कुमार भी हमारे ग्रुप का हिस्सा थे।"

"और ये *चाय-सुटटा सैशन* क्या है?"

"कॉलेज से थक कर आने के बाद, हम सारे इकट्ठा बैठ जाते और चाय, मठरी और सिगरेट के दौर चलते।"

"ओहो.....! मतलब गपशप। वैसे यह तो हम लड़कियों का काम है" खुशी ने आंख मारी।

"जानता हूं, लेकिन हम, तुम लड़कियों जैसे बिना सिर-पैर की बातें नहीं करते थे। हमारा बातचीत करने का मकसद सिर्फ और सिर्फ अपनी जानकारी बढ़ाना होता था"

"जानकारी, लेकिन किस बारे में ?"

"नई लड़कियां, फिल्में, पॉलिटिक्स, शिक्षक और एग्ज़ाम में

अच्छे मार्कस लाने के लिए शार्ट-कट के बारे में। यह थकान मिटाने का सचमुच बहुत बढ़िया तरीका था।"

"आहा"

"सच में, सी.ए. ज्वाइन करने के बाद, राधिका के अलावा यही वो चीज है जिसे मैं सबसे ज़्यादा याद करता हूं। वो मेरी ज़िंदगी के सबसे खुशनुमा दिन थे..." कहते हुए वह फिर से अपने अतीत की यादों में खो गया।

आई.आई.टी. मद्रास, 8 अगस्त, 2007

चाय - सुटटा सैशन

"अरे, कहां खोए हो, भाई? सुबह से दिखाई ही नहीं दिए। यहां तक कि सूब्बु सर की क्लास में भी नहीं आए?" संदीप ने जय से पूछा।

"अरे जाएगा कहां घोष बाबू, ज़रूर अपनी उस बंगालन के साथ बतियाने में लगा होगा" सिद्धार्थ ने चाय में रस्क डूबोते हुए चुटकी ली।

"सिद्धार्थ, मैंने कितनी बार बताया है कि उसका नाम स्वागनिका है और वो तुम्हारी भाभी है" जय ने सिगरेट का कश लेते हुए थोड़े गुस्से में कहा। 'वैसे भैया, हम तो जल्दी ही उड़ने वाले हैं।'

"मतलब?" सब एक साथ चिल्लाए।

"मतलब यह कि मैं कोलकाता जाने की टिकट करवा रहा हूं।"

"भाई, एग्ज़ाम सिर पर हैं और तुझे घूमने की पड़ी है। और वैसे भी अभी तो बहुत वक़्त बाकी है, अभी अगस्त में टिकटें बुक करवा कर क्या करोगे" प्रत्यूष ने हैरानी से कहा।

"यार, मुझे इन रेलवे वालों पर ज़रा भी भरोसा नहीं। इसलिए मैंने सात-सात दिन के अंतर से तीन टिकटें बुक करवा दी है। जैसे ही डेटशीट आएगी, बाकी की दो कैंसल करवा दूंगा" उसने

अपना कॉलर ऊपर करते हुए कहा, जैसे पता नहीं क्या तोप चलाकर आया हो। उसे अपनी चालाकी पर बहुत मान हो रहा था।

“बहुत बढिया! बहुत बढिया! और राज, तुम्हारा क्या प्लान है?” रचित ने पूछा।

“उम्मम, मैं तो जाने से दो दिन पहले तत्काल में ही करवा लूंगा।”

“तत्काल में... पागल हो क्या? तत्काल कोटा में बुकिंग करवाने का मतलब समझते हो? - यह जे.ई.ई. पास करने से कम नहीं है” कहते ही रचित और पूरा ग्रुप ठहाका मारकर हंस पड़ा।

“वैसे, तुम कल कहां गायब थे?” राम ने रचित की ओर देखते हुए पूछा।

“अरे, क्या बात कर रहे हो! तुम्हें नहीं पता?” सिद्धार्थ ने दिल्लगी करते हुए कहा। “कल तो हमारे रोमियो का जन्मदिन था और यह पूरा दिन अपनी जूलियट के था।”

“क्या? साले, तू तो मतलबी निकला, एक पार्टी तक नहीं दी” राज ने मुंह फुलाते हुए कहा।

“अरे, देखो तो सही, कौन बोल रहा है! जिसने कभी अपनी जेब से पैसे निकाल कर कभी टॉफी भी खिलाई है हमें!” रचित ने ताना मारते हुए कहा। सब के सब ताली पीटने लगे।

“घंटा !! बात को मत बदलो। हमें तो पार्टी चाहिए, बस। 10 अगस्त को तुम हमारे पूरे ग्रुप को *‘चक दे! इंडिया’* दिखाने ले जा रहे हो, यह तय रहा” राज ने कहा। “और हां, यह लड़कों की पार्टी है, इसलिए लड़कियों को बुलाने का सोचना भी मत। फिल्म देखने के बाद मरीना बीच पर हम दारू पार्टी भी करेंगे।”

“मेरे पास एक और अच्छा आइडिया है। क्यों ना हम हमारे सुपरस्टार रजनीकांत की शिवाजी देखने चलें” राम ने बीच में ही बात काटते हुए कहा।

"बहुत ही वाहियात आइडिया ! यार, पंद्रह बार तो देख चुके हो यह मूवी, और कितनी बार देखोगे? गिनीज बुक में नाम दर्ज करवाना है क्या? और रजनी सर तुम्हारे सुपरस्टार कब से हो गए? वो पैदा हुए बैंगलोर में और फिल्में करते हैं कन्नड़ में, वो तो हमारे हीरो हैं, तुम्हारे कैसे हुए..." तेजा ने इस तरह से राम का विरोध किया, मानो रजनीकांत पर उसका निजी अधिकार हो।

"तो क्या? उनकी पहली फिल्म तमिल भाषा में थी। जिसमें कमल हसन ने अभिनय किया था और इसका निर्देशन के. बालाचंद्रन ने किया था। इसलिए वह एक तमिलियन हैं और इस वक़्त चेन्नई में रहते हैं। उन पर तुम्हारा कॉपीराइट है क्या?" राम कुमार ने अपना तर्क रखा।

"अबे ओ, हर बात पर मेरे साथ बहस करने और मुझे गलत साबित करने में मज़ा आता है क्या?" तेजा ने रौब दिखाया।

"तेजा"

"राम"

"तेजा"

"ये तेजा तेजा क्या है... ये तेजा तेजा" जय ने माहौल को हल्का करने की कोशिश की।

"जय, बकवास बंद करो। हमें पता है कि *अंदाज अपना अपना* तुम्हारी पसंदीदा फिल्म है, लेकिन यह मज़ाक करने का वक़्त नहीं है" तेजा गुस्से में चिल्लाया।

"अरे यार, तुम लोग हर बात को इतना सीरियस क्यों ले लेते हो? थोड़ा शांत हो जाओ, भाई। वैसे, तुम्हारी जानकारी के लिए बता दूं कि रजनीकांत का जन्म एक महाराष्ट्रियन परिवार में हुआ था और उनका असली नाम शिवाजी राव गायकवाड़ था, इस हिसाब से तो वो एक महाराष्ट्रियन हैं। इसलिए बेहतर होगा कि तुम अपना तमिल और आंध्र का युद्ध यहीं बंद कर दो, क्योंकि उनका कद इन राज्यों से कहीं ऊंचा है। वो पूरे देश के

सुपरस्टार है और हमें उन पर गर्व है। और अब हमारा सुट्टा सैशन खराब करना बंद करो। अच्छा, अब *चक दे* फाइनल हुआ, ठीक है रचित?" जय ने मामला ठंडा करते हुए कहा।

"तय रहा। *चक दे! इंडिया*। पहले दिन का दूसरा शो और एक मस्त दारू पार्टी। ठीक है, फिर?"

"हां" सब एक साथ ज़ोर से चिल्लाए।

8

अपोलो हॉस्पिटल, दिल्ली

"वाह ! यार... तुम कितने खुशकिस्मत हो ! मुझे तो तुमसे जलन होने लगी है। हमारे यहां तो ऐसा कुछ भी नहीं होता... " खुशी ने मुंह बनाते हुए कहा।

"तुम बताना जारी रखो, मुझे मज़ा आ रहा है?"

"ठीक है" कहते हुए रचित ने फिर से बताना शुरू किया।

* * * * * *

10 अगस्त 2007

ईगा सिनेमा, किल्पॉक चेन्नई

(दोपहर के 2 बजकर 30 मिनट)

"चक दे इंडिया ! अट्ठारह टिकटें" रचित ने टिकट काउंटर पर बैठे लड़के से कहा।

"अट्ठारह ! अरे भाई, अगले तीन दिनों तक कोई टिकट नहीं है। सब हाऊसफुल है" उसने कोई दिलचस्पी ना दिखाते हुए कहा।

"लेकिन, यह कैसे हो सकता है?" रचित एकदम से चौंक गया।

“अरे भाई, शाहरूख खान की मूवी है, इसलिए सारी बिक गई... इसमें हैरान होने वाली क्या बात है। अब जाओ यहां से, मुझे अपना काम करने दो” उसने व्यस्त होने का दिखावा करते हुए कहा।

“जब सारी टिकटें पहले ही बिक गई हैं, तो क्या काम कर रहा है?” रचित मन ही मन बड़बड़ाया और वापस अपने दोस्तों के पास चला गया।

“सॉरी, यार... सारी टिकटें बिक गई।”

“क्या, यार... अपनी तो साली किस्मत ही खराब है” राज ने मायूस होते हुए कहा।

“कोई बात नहीं, हम फिर किसी और दिन देख लेंगे” रचित ने उन्हें दिलासा दिया।

इसके साथ ही उनका पूरा ग्रुप थियेटर से बाहर जाने लगा, लेकिन तभी किसी की तेज़ आवाज़ ने उनका ध्यान खींचा।

“चक दे... चक दे... चक दे... स्टॉल के 100 और बालकनी के 150।”

एक मोटी सी औरत बहुत ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रही थी और सबका ध्यान अपनी ओर खींच रही थी। उसके बालों में इतना तेल था मानो नारियल तेल की पूरी बोतल ही सिर में उड़ेल ली हो। और सोना पहनने के मामले में तो उसने ‘*बप्पी दा*’ को भी पीछे छोड़ दिया था।

और दूसरी दिलचस्प बात थी - एक औरत का फिल्मों की टिकटें बेचना, और वो भी ब्लैक में। हालांकि, नॉर्थ इंडिया में इस तरह की कालाबाज़ारी आम बात है। दिल्ली के दरियागंज इलाके में डिलाइट सिनेमा के आस-पास टिकटों की कालाबाज़ारी का धंधा करने वाले लड़के आसानी से मिल जाएंगे, लेकिन एक औरत को इस तरह का काम करते देख सब हैरान रह गए। सबका दिल मूवी देखने के लिए मचल रहा था, लेकिन समझ नहीं आ रहा था कि उस औरत के साथ सौदा कैसे करें। आपसी

सहमति से तय हुआ कि राज उस औरत से जाकर बात करेगा और दोपहर बाद 3 बजे के शो की टिकटें लेकर आएगा। मोल-भाव करने में वह एक नंबर का चैम्पियन था।

वह उसके पास गया और बोला, "अम्मा, चक दे... कितने की?"

"क्यों, सुनाई नहीं दिया ? स्टॉल वाली 100 की और बालकनी वाली 150 की" वह अकड़ते हुए ज़ोर से बोली।

"अरे अम्मा ! वो तो एक टिकट के लिए है ना... मेरा मतलब, अट्ठारह टिकटों का कितना लोगी?"

"1800 स्टॉल के और 2700 बालकनी के... सीधा सा हिसाब है... इतना भी नहीं समझते, बेवकूफ़ कहीं के..."

उन दोनों की बातें सुनकर हमें बहुत मज़ा आ रहा था। एक आईआईटियन लड़के के लिए यह शर्मिंदगी की बात थी, और वो भी ख़ासकर एक मारवाड़ी के लिए, जिसने दो साल तक रातें काली कर-कर के बीसियों किताबें पढ़ी, हज़ारों गणित के सवाल हल किए, लेकिन आज सड़क पर टिकटें बेचने वाली एक मामूली सी औरत से गणित के साधारण फार्मूलों पर भाषण सुन रहा था।

"अरे, अम्मा! मैं पूछ रहा हूं अट्ठारह टिकटों पर डिस्काउंट कितना दोगी?" उसने खीझते हुए पूछा।

"डिस्काउंट किस बात का? ताकि मुझसे टिकटें खरीदकर आगे ब्लैक में ऊंची कीमतों पर बेच सको? तुम मुझसे मेरी रोजी-रोटी छीनना चाहते हो? शक़ तो मुझे पहले ही हो गया था जब तुमने अट्ठारह टिकटों की बात की थी। लेकिन अब तो मुझे पूरा यकीन हो गया है। रुको, अभी तुम्हें सबक सिखाती हूं। अन्ना, जल्दी यहां आओ" उस औरत ने चिल्लाना शुरू कर दिया।

"अरे, तुम मुझे गलत समझ रही हो, अम्मा। मैं एक स्टूडेंट हूं" राज घबरा गया।

"मतलब, तुम ये सब पॉकेट मनी के लिए करते हो" वह पहले से ज़्यादा गुस्से से चिल्लाई।

"नहीं, अम्मा। मैं तो यहां अपने दोस्तों के साथ आया हूं। रचित, सिद्धार्थ, राम, तेजा... यार तुम सब वहां क्या कर रहे हो? जल्दी आओ भाई, नहीं तो ये अम्मा मेरी जान निकाल देगी।"

मौके की गंभीरता को भांपते हुए हम सब तुरंत वहां पहुंचे और हालात को संभाला। यही नहीं अम्मा ने हमें 300 रूपए का डिस्काउंट भी दिया। फिल्म शुरू होने में अभी दस मिनट बाकी थे। वे सभी अपनी-अपनी सीट पर जाकर बैठ गए। संयोग से राम और तेजा साथ-साथ बैठे थे।

"यार, माना कि तुम्हारे मां-बाप ने तुम्हारा नाम राज रख दिया और हमने तुम्हें शाहरूख खान की मूवी की टिकट लाने भेज दिया, तो इसका मतलब यह नहीं कि लड़कियां तुम्हें शाहरूख खान समझ लेंगी और तुमसे इम्प्रैस हो जाएंगी। अरे, तुम एक आंटी को तो पटा नहीं सके, लड़कियां क्या खाक पटाओगे" सिद्धार्थ ने राज की टांग खिंचते हुए कहा।

"सिद्धार्थ, बकवास बंद करो और मुझे फिल्म देखने दो" राज की त्यौरियां चढ़ गई। जबकि अंदर ही अंदर वह अभी भी उस बात को लेकर सदमे में था।

और तभी फिल्म शुरू हुई। पूरा थियेटर तालियों की आवाज़ से गूंज उठा। फिल्म का हरेक सीन और हरेक डायलॉग बहुत अद्भुत था। लेकिन तभी एक ऐसा डायलॉग आया जिसे सुनकर हम सब हंस-हंसकर लोट-पोट हो गए।

नाम?

नेत्रा रेड्डी।

तमिलियन हो?

नहीं, तेलुगू।

हां हां, वही... दोनों में अंतर ही क्या है?

तमिल और तेलुगू में वही अंतर है, जो एक पंजाबी और बिहारी के बीच में होता है।

हंसते-हंसते हमारे पेट में बल पड़ गए, लेकिन हंसी थी कि रुक ही नहीं रही थी। जबकि दूसरी तरफ, राम और तेजा लगातार एक-दूसरे को घूरे जा रहे थे। उन दोनों पर यह डायलॉग बिल्कुल फिट बैठता था। फिल्म खत्म हुई और हम सब बाहर आ गए।

मरीना बीच, चेन्नई (शाम के 7 बजे)

राम का एक दोस्त, जो मूवी के दौरान उनके साथ नहीं था, ने उन सब के लिए बीयर का इंतजाम कर रखा था। और दूसरी अच्छी बात थी, वहां का खूबसूरत नजारा। यह बंगाल की खाड़ी के किनारे एक बहुत खूबसूरत बीच था। सबके सब मस्ती के मूड में थे और एक-दूसरे की टांग-खिचाई में लगे थे।

"जय, प्लीज एक बीयर मुझे भी" सिद्धार्थ ने दूर से ही जय को बोतल उछाल कर देने के लिए कहा।

"मुझे लगता है तुम लोगों ने इस फिल्म से कुछ नहीं सीखा। हम *चक दे इंडिया* देखकर आए हैं, *लगान* नहीं!" रचित चिल्लाया।

"मतलब ? अब इसका क्या मतलब हुआ ? और बीयर से इसका क्या लेना देना?" जय ने पूछा।

"अरे, उसमें शाहरूख खान कहता है ना, छोटे-छोटे पास दो। इतनी दूर से फैंककर तो तुम सारा फ्लो ही खराब कर दोगे। तुम्हें बारी से चलना चाहिए जैसे - जय से राम, राम से तेजा, तेजा से राज, राज से रचित मतलब कि मैं और मुझसे सिद्धार्थ को... बिल्कुल सागर की इन लहरों की तरह धीरे-धीरे और लय में, क्यों क्या कहते हो?"

"अच्छा, दोस्तों- एक ब्रेकिंग न्यूज है। रचित को बीयर चढ़ गई है... तालियां" राज ने उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा।

"मेरे भाई को कोई कुछ नहीं कहेगा। वह प्यार में है... सच्चा प्यार" जय चिल्लाया।

"सॉरी सॉरी सॉरी, मैं तो भूल ही गया था कि हमारा एक और रोमियो भी तो है। और पता है क्या... दोनों के दोनों बंगालनों के

प्यार में पागल हैं। वैसे भी इन बंगालनों की आंखें बड़ी नशीली होती हैं, और सुना है बंगाल में काला जादू भी बहुत चलता है। कहीं इसी का शिकार तो नहीं बने दोनों...” उन दोनों को छेड़ने का सुनहरा मौका राज कहां हाथ से जाने देने वाला था।

“हम्म्म्... सच कहा, उसके जैसी खूबसूरत आंखें मैंने कभी नहीं देखी” रचित को सचमुच चढ़ गई थी।

“यार, जय का तो समझ में आता है, लेकिन रचित तुम? तुम्हें क्या हो गया? तुम तो पढ़ाई को लेकर बहुत सीरियस थे और दुनिया के सामने खुद को साबित करने के इरादे से यहां आए थे... तुम कैसे इस प्यार-व्यार के चक्कर में पड़ गए ?” राम ने गंभीरता से कहा।

“अरे यार! ये आई.आई.टी. है और यहां कुछ भी हो सकता है। यहां आने वाले स्टूडेंट पहले ही इतना पढ़-पढ़कर पक चुके होते हैं कि उनका दिमाग खराब हो जाता है। भाई, आई.आई.टी. में दो तरह के लोग आते हैं- एक ताड़ने वाले, जो हर वक़्त बस लड़कियों को ही देखते हैं और दूसरे पढ़ने वाले। ‘पढ़ने वाला कब ताड़ने वाला बन जाए और ताड़ने वाला कब पढ़ने वाला’ कोई कुछ नहीं कह सकता” राज ने रचित की तरफ से जवाब दिया।

“चलो, छोड़ो यार, बहुत हुआ। 11 सितंबर से साऊथ अफ्रीका में पहला टी 20 वर्ल्ड कप शुरू हो रहा है और पता है क्या? इसमें इंडिया की ओर से सब नए खिलाड़ी हैं। इस बार मैच देखने में बहुत मज़ा आएगा” जय ने बातचीत का मुद्दा बदलने की कोशिश की।

“भई, ये तो वक़्त ही बताएगा। सचिन, गांगुली और द्रविड़ के बिना भारतीय टीम कुछ नहीं है। मैं बता रहा हूं, वो पहले ही राउंड में बाहर हो जाएंगे” राज सचिन का बहुत बड़ा प्रशंसक था। इसीलिए जय को गलत साबित करने के लिए वह उससे बहस करने लगा।

“देख लेंगे...”

“बेशक़”

टी20 वर्ल्ड कप, 2007

भारत बनाम पाकिस्तान

14 सितंबर, 2007- ग्रुप डी

यह इस टूर्नामैंट का सबसे रोमांचक मैच होने जा रहा था। पाकिस्तान पहले ही सुपर 8 में पहुंच चुका था, अब क्योंकि भारत और स्कॉटलैंड के बीच मैच बारिश की वजह से स्थगित हो गया था, इसलिए सुपर 8 में जाने के लिए भारत को यह मैच जीतना बहुत ज़रूरी था। भारत ने पहले बल्लेबाज़ी करते हुए 20 ओवर में 9 विकेट पर 141 रन बनाए। जवाब में पाकिस्तान भी निर्धारित ओवरों में 7 विकेट पर 141 रन ही बना पाया। मैच टाई हो चुका था। अब विजेता का फैसला बॉल-आऊट द्वारा होना था। रोमांच अपनी चरम सीमा पर था। भारत 3-0 से बॉल-आऊट जीत कर सुपर 8 में पहुंच गया।

इसी टूर्नामैंट के दौरान, युवराज सिंह ने सिर्फ 12 बॉल में 50 रनों की शानदार पारी खेली और स्टूअर्ट ब्रॉड को एक ओवर में 6 छक्के भी जड़े। ऑस्ट्रेलिया को सेमीफाइनल में पटखनी देकर भारत ने फाइनल में जगह बनाई और अपने धुर विरोधी पाकिस्तान से फाइनल में भिड़ने को तैयार हो गया।

तलवारें खिंच चुकी थी, हर तरफ, हर न्यूज़ चैनल, हर गली-नुक्कड़, हर स्कूल-कॉलेज, हर ऑफिस, सब जगह बस एक ही चर्चा थी - भारत और पाकिस्तान के बीच फाइनल।

24 सितंबर, 2007

आई.आई.टी. हॉस्टल- इंडिया वर्सेज पाकिस्तान - फाइनल

हॉस्टल के सारे लड़के नज़रें गड़ाए टीवी के सामने बैठे थे। यह इस टूर्नामैंट का सबसे दिलचस्प मैच होने जा रहा था। भारत ने टॉस जीता और पहले बैटिंग करने का फैसला लिया। 20 ओवर में भारत ने 5 विकटों पर 157 रन बनाए। अब बारी पाकिस्तानी टीम की थी। आखिरी ओवर चल रहा था और पाकिस्तान को मैच जीतने के लिए 13 रनों की ज़रूरत थी और सिर्फ एक

विकेट बाकी थी। भारतीय बॉलर जोगिन्दर शर्मा की पहली बॉल वाइड थी और उसके बाद वाली बॉल पर कोई रन नहीं आया। इस से अगली ही बॉल पर मिस्बाह ने छक्का जड़ दिया। वहां बैठे सभी लड़कों के कलेजे मुंह को आ गए। अब पाकिस्तान को जीतने के लिए 4 बॉल में 6 रनों की ज़रूरत थी। अगली बॉल पर मिस्बाह ने फाइन लैग पर ज़ोर से बल्ला घुमाया, लेकिन बॉल आसमान को छूती हुई, फाइन लैग पर खड़े श्रीसंथ के हाथों में समा गई। पाकिस्तान की पारी 152 रनों पर ही सिमट गई। सबके सब खड़े होकर ज़ोर से चिल्लाए। खुशी इतनी थी कि संभाले नहीं संभल रही थी।

सब एक-दूसरे को गले मिलकर बधाइयां दे रहे थे। हर कोई 'चक दे इंडिया' की धुन पर नाच रहा था। भारत की इस जीत की खुशी में आतिशबाज़ी की गई, पटाखे फोड़े गए, मिठाईयां बांटी गई। सभी स्टूडैंटस टीम इंडिया की जर्सी पहने और चेहरे को तिरंगे रंग में रंगे सड़कों पर घूम रहे थे। सबके लिए यह एक ख़ास मौका था, क्योंकि उनमें से किसी ने भी भारत को 1983 में वर्ल्ड कप जीतते नहीं देखा था।

"रचित, आओ बाहर चलें। बाहर सब पार्टी कर रहे हैं और तुम यहां मुंह लटकाए क्यों बैठे हो?" राज ने रचित से कहा।

"नहीं, यार! मेरी तबीयत ठीक नहीं है। मैं थोड़ी देर आराम करना चाहता हूं" रचित ने मुरझाई सी आवाज़ में कहा।

पिछले एक हफ्ते से उसके यूरिन में खून आ रहा था, लेकिन उसने इसके बारे में किसी को कुछ नहीं बताया था। इसके अलावा, उसकी अंतड़ियों में भी दर्द हो रहा था। उसे लगा थोड़े आराम से ही यह ठीक हो जाएगा।

"ठीक है, तुम आराम करो। लेकिन रात को तुम्हें हमारे साथ जय की बर्थ डे पार्टी में शामिल होना है।"

रचित ने 'हां' में सिर हिला दिया।

रात को ठीक 12 बजे वह जय के कमरे में गया। जन्मदिन की सारी तैयारियां पहले ही हो चुकी थी। हॉस्टल के बाकी लड़के

भी उसे जन्म दिन की बधाई देने के लिए आ गए। संदीप एक बहुत अच्छा कुक था। उसने जय के लिए खुद अपने हाथों से केक बनाया। इसके अलावा मैगी भी बनाई गई, जिसे वो स्नैक्स के तौर पर आने - जाने वालों को दे रहे थे। सबको केक का बमुश्किल से छोटा सा टुकड़ा खाने को मिला, क्योंकि इसका ज़्यादातर हिस्सा जय के मुंह पर लगाने में चला गया था। इसके बाद सबने मिलकर उसे उठाया और ज़ोर-ज़ोर से ऊपर उछाला भी। पार्टी के दौरान बीयर और शराब के जाम भी चले। कई घंटे नाचने-कूदने और पार्टी करने के बाद जब सब थक गए तो, करीब साढ़े तीन बजे सब अपने - अपने कमरों में वापस चले गए। उनकी हालत देखकर अंदाज़ा लगाया जा सकता था कि अगले दिन उनमें से कोई भी कॉलेज जाने की हालत में नहीं था।

24 सितंबर, 2007

आई.आई.टी. हॉस्टल- रचित का कमरा- सुबह के 4 बजे

“तेजा, प्लीज़ जल्दी उठो।”

“क्या है, रचित? प्लीज़, सोने दो ना... अभी तो पार्टी से आए हैं और मैं बहुत ज़्यादा थक चुका हूं” तेजा ने करवट बदलते हुए भारी आवाज़ में कहा।

“यार, मेरे यूरिन में खून आ रहा है और मेरी कमर में भी बहुत ज़ोर से दर्द हो रहा है” रचित ने कराहते हुए कहा। उसकी आवाज़ भर्रा रही थी।

“क्या?” स्थिति की गंभीरता को समझते हुए वह तुरंत उठ खड़ा हुआ। “यह कब हुआ?”

“पिछले एक हफ्ते से। आज भी रात 11 बजे बहुत तेज दर्द हो रहा था, लेकिन मैंने सिद्धार्थ से प्रॉक्सीवोन (एक दर्द निवारक दवा) ले ली थी” कहते हुए रचित उससे नज़रें नहीं मिला पा रहा था।

“क्या ? तुम पागल हो क्या ? जानते हो ना प्रॉक्सीवोन कितनी तेज़ दवा है और बिना डॉक्टरी सलाह के लेने से इससे

कितना नुकसान हो सकता है। और वैसे, यह सब तुम मुझे आज क्यों बता रहे हो?" तेजा ने लगभग चिल्लाते हुए से कहा।

उसकी चिल्लाने की आवाज़ सुनकर राज भी जाग गया। तेजा ने राज को सारी बात बताई। हर गुजरते पल के साथ रचित का दर्द बढ़ता जा रहा था। स्थिति की गंभीरता और वक़्त की नज़ाकत को देखते हुए उन्होंने रचित को एक और प्रॉक्सीवोन देना ही उचित समझा। और अगले ही दिन उसे सिटी हॉस्पिटल में नेफ्रोलॉजिस्ट के पास लेकर जाने का फैसला किया।

सिटी हॉस्पिटल - अगली सुबह

"कुछ ज़रूरी टैस्ट और एक्स-रे करवाने पड़ेंगे" डॉक्टर ने राज और तेजा को बताया।

"डॉक्टर साहब, आप बता सकते हैं कि इसे प्रॉब्लम क्या है?" तेजा ने पूछा। वह रचित की तबीयत को लेकर काफी परेशान था।

"सॉरी, रिपोर्ट आने से पहले मैं कुछ नहीं कह सकता। लेकिन तब तक इसका सही इलाज होना बहुत जरूरी है। हम इस प्रॉब्लम की सही वजह जानने की कोशिश कर रहें हैं। हमारी सलाह यही है कि इसे जल्द से जल्द हॉस्पिटल में एडमिट करवा दो।"

"अच्छा, डॉक्टर साहब, थैंक्स" राज के चेहरे पर परेशानी के भाव थे।

"मुझे लगता है तुम्हें अपने घरवालों को इस बारे में बता देना चाहिए। यहां तुम्हारे साथ किसी समझदार और ज़िम्मेदार व्यक्ति का होना बहुत ज़रूरी है" तेजा ने रचित को समझाने की कोशिश की।

"तुम पागल हो क्या? इतनी जल्दबाज़ी मचाने की क्या ज़रूरत है। और वैसे भी, क्या पता यह इतनी गंभीर बात न हो, जितना कि हम सोच रहे हैं। अगर मेरे पापा को मेरी तबीयत के बारे में ज़रा भी भनक लगी, तो वो अपना सारा काम-धंधा

छोड़कर यहां चले आएंगे। और मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से उन्हें कोई परेशानी हो" रचित ने उसके सुझाव को मानने से साफ इंकार कर दिया।

"लेकिन, फिर भी हमें यहां हमारी मदद के लिए कोई ना कोई तो चाहिए। मेरा मतलब, हमारे पास इतने पैसे नहीं है कि हम टैस्ट वगैरह का खर्चा उठा सकें। और फिर डॉक्टर तो तुम्हें यहां एडमिट होने को भी कह रहे हैं" तेजा ने तर्क दिया।

"चलो, अगर हम किसी तरह पैसे का बंदोबस्त कर भी लें, तब भी हम इतने बड़े भी नहीं हुए कि अपने घरवालों से इतना बड़ा सच छुपाएं" राज ने भी अपनी बात रखी।

"ज़रूर यह पैसे की ही बात है और मुझे यकीन है राज ने ही तुम्हें यह पट्टी पढ़ाई होगी" तेजा की तरफ देखते हुए रचित ने गुस्से में कहा।

"नहीं, ऐसी बात नहीं है, यार" तेजा ने उसे शांत करने की कोशिश की।

"मैं अपने भाई को फोन कर रहा हूं। वो दो-तीन घंटे तक यहां पहुंच जाएंगे। मुझे तुम में से किसी की मदद की कोई ज़रूरत नहीं..."

"रचित..."

"बस... मैं और कुछ नहीं सुनना चाहता" इससे पहले कि राज कुछ बोल पाता, रचित ने उसे बीच में ही रोक दिया।

कुछ घंटो बाद

"हाय! मैं अभय, रचित का बड़ा भाई। तुम ज़रूर तेजा होगे। रचित कहां है?" अभय ने चिंतित स्वर में कहा।

"डॉक्टर्स ने उसे एक वार्ड में शिफ्ट कर दिया है। कुछ टैस्ट हो चुके हैं। प्लीज़ भैया, आप एक बार डॉक्टर से बात कर लें, वही आपको रचित के बारे में अच्छे से बता पाएंगे।"

"थैंक्स, इस मुश्किल घड़ी में तुम सबने उसका बहुत ख़्याल रखा।"

रचित का कमरा

"हाय रचित, क्या हो रहा है?"

"नमस्ते, भैया। आप कैसे हो?"

"मैं ठीक हूं। वैसे, मेरी इतनी ही याद आ रही थी, तो एक फोन कर देते, मैं ऐसे ही आ जाता, इसके लिए हॉस्पिटल में एडमिट होने की क्या ज़रूरत थी" अभय ने माहौल को हल्का बनाने की कोशिश की।

रचित हंस पड़ा। "कोई गंभीर बात है, क्या?" उसने आगे पूछा़।

"नहीं! लेकिन हम तुम्हें चेन्नई के अपोलो हॉस्पिटल में शिफ्ट कर रहे हैं, वहां तुम्हारा इलाज बेहतर तरीके से हो पाएगा।"

"ठीक है, जैसा आपको ठीक लगे। लेकिन पहले यहां का बिल तो क्लीयर कर दो।"

"यह तो पहले ही दिया जा चुका है" अभय ने शांत आवाज़ में कहा।

"किसने दिया?" रचित एकदम से चौंक गया।

"राज ने।"

9

अपोलो हॉस्पिटल, चेन्नई 30 सितंबर

"रचित" अभय ने कहा।

"हां, भैया"

"मैं तुम्हें कुछ बताना चाहता हूं" अभय के माथे पर चिंता की लकीरें थी।

"हां भैया, कहिए ना।"

"तुम्हारी किडनी में कुछ प्रॉब्लम है। हम कल तुम्हें यहां से दिल्ली के अपोलो हॉस्पिटल में शिफ्ट कर रहे हैं।"

"लेकिन क्यों?" रचित हैरान था।

"मेरा कॉलेज भी तो है। मैं पहले ही सात दिन की छुट्टियां ले चुका हूं। और फिर अब तो मेरे एग्ज़ाम भी सिर पर हैं। मेरा अपने कॉलेज वापस जाना बहुत ज़रूरी है। दिल्ली हमारे घर से बहुत ज़्यादा दूर नहीं है। वहां पर पापा तुम्हारी अच्छे से देखभाल भी कर पाएंगे। तुम चाहो, तो जाने से पहले अपने दोस्तों से भी मिल सकते हो" अभय ने अपना फैसला सुना दिया।

"ठीक है, भैया" रचित ने धीमी आवाज़ में कहा।

अगले दिन

यह एक व्यस्त दिन था। सुबह से शाम तक, उसके क्लासमेट्स और दोस्त रचित से मिलने आते रहे। लेकिन वो सिर्फ़ एक इंसान के आने का इंतज़ार कर रहा था। नज़रें लगातार दरवाज़े पर टिकी थी। शाम होने को आई थी, उसके लगभग सारे बैचमेट्स आकर चले गए लेकिन राधिका की कुछ खबर नहीं थी। थोड़ी देर बाद, प्राची (राधिका की दोस्त) वहां आई, लेकिन वो अकेली थी।

"राधिका कहां है?" रचित ने उसके आते ही सवाल किया।

"वह घर पर है" उसने बताया।

"वह यहां क्यों नहीं आई ? यह जानते हुए कि आज मुझे दिल्ली शिफ्ट किया जा रहा है और इसके बाद हम कई महीनों तक एक-दूसरे को देख तक नहीं पाएंगे, फिर भी वो आखिरी बार मुझसे मिलने नहीं आई" रचित गुस्से में था।

"इसका जवाब तो वही दे सकती है, लेकिन उसने मुझे यह खत तुम्हें देने को बोला है" कहते हुए प्राची ने कागज़ का एक टुकड़ा उसकी ओर बढ़ा दिया।

राधिका का अजीबो-गरीब व्यवहार देखकर रचित बहुत घबरा गया। खुद आने की बजाय, उसने सिर्फ एक खत भेज दिया। उसे राधिका से यह उम्मीद बिल्कुल भी नहीं थी। उसे तो इस मुश्किल घड़ी में रचित के साथ हॉस्पिटल में होना चाहिए था, उसका हौंसला बढ़ाना चाहिए था।

रचित ने खत खोला और भारी मन से इसे पढ़ना शुरू किया।

हाय रचित,

मैं जानती हूं कि तुम इस वक़्त मुझसे बहुत गुस्सा हो और तुम्हारा गुस्सा होना जायज़ भी है। मैं इसके लिए मैं तुमसे दिल से माफी मांगती हूं। तुम इसे मेरी कमज़ोरी कह सकते हो, लेकिन मैं तुम्हें इस हालत में नहीं देख सकती। अगर आज मैं वहां आती, तो मेरे लिए अपने आप पर काबू रखना मुश्किल हो जाता। मैं

हमेशा तुम्हारी ताकत बनना चाहती हूं, कमज़ोरी नहीं...। मुझे यकीन है कि तुम जल्दी ठीक हो जाओगे और हम फिर से एक साथ होंगे।

तुम्हें कुछ बताना चाहती हूं...

प्यार क्या है और प्यार का अहसास क्या होता है, यह तुमने मुझे बताया। हर बार जब भी तुम मुझे छूते, मुझे चूमते, मुझे प्यार करते मुझे अपने होने पर गर्व होता। तुम्हें पाकर मैंने जाना कि मैं कितनी खुशनसीब हूं।

तुमने मेरे दिल पर एक ऐसी अमिट छाप छोड़ी है जो ताउम्र मेरे साथ रहेगी। मैं अपनी पूरी ज़िंदगी तुम्हारे साथ बिताना चाहती हूं। मैं चाहती हूं कि तुम जानो कि मेरी ज़िंदगी में तुम्हारी क्या अहमियत है। तुम मेरी पूरी दुनिया हो और मैं तुम्हें अपनी जान से भी ज़्यादा प्यार करती हूं। तुम दिल्ली में रहो, या चेन्नई में, इससे मुझे कोई फर्क़ नहीं पड़ता.. दूरियां हमें अलग नहीं कर सकती।

जानते हो क्यों?

क्योंकि तुम मेरे दिल की धड़कन हो, मेरी रूह हो, मेरी हर सांस में हो, मेरे होने की वजह हो तुम और तुम्हारे बिना मेरा कोई अस्तित्व नहीं। मैं तुम्हारा इंतज़ार करूंगी। जल्दी ठीक होकर आना।

तुम्हें बहुत सारा प्यार

राधिका।

अपोलो, दिल्ली (फरवरी, 2011)

“तुम्हारे लिए उसके बिना रहना बहुत मुश्किल हुआ होगा, है ना?” खुशी ने उदासी भरे स्वर में पूछा।

“हां, बहुत मुश्किल... इतना कि तुम सोच भी नहीं सकती। लेकिन राधिका और उसके प्यार ने हमेशा मुझे आगे बढ़ने का हौंसला दिया। यह उसका विश्वास ही था कि मैं सी.ए. ऐन्ट्रैंस

टैस्ट बिना किसी कोचिंग के पास करने में कामयाब हो पाया और वो भी पहली बार में।”

“अरे वाह! लेकिन मैंने सुना है कि सी.ए. बहुत मुश्किल होती है और कुछ लोग तो ये तक कहते हैं कि सी.ए. का मतलब होता है ‘बार-बार एग्ज़ाम’ देना” कहते हुए वह रचित की ओर देखने लगी।

रचित हंस पड़ा। “ऐसा कुछ भी नहीं है। मेरा मतलब, यह मुश्किल है, लेकिन इतना भी नहीं, जितना तुम सोच रही हो। हां, इसके स्ट्रक्चर में थोड़ा बहुत बदलाव ज़रूर आया है। जब मैंने सी.ए. करना शुरू किया था, इसमें तीन लेवल थे - सी.पी.टी. जो एक तरह से ऐन्ट्रैंस एग्ज़ाम जैसा ही था, जिसमें 10+2 की कॉमर्स की जानकारी के आधार पर एग्ज़ाम लिया जाता है, पी.सी.सी., जो कि बाद में बदलकर आई.पी.सी.सी. हो गई और अब इसे इंटरमीडिएट कहा जाता है और सी.ए. फाइनल। सी.पी.टी. पास करने के तुरंत बाद हमें सी.ए. की निगरानी में साढ़े तीन साल की आर्टिकलशिप ट्रेनिंग करनी पड़ती थी।”

“लेकिन तुम्हारा तो कॉमर्स से कोई वास्ता ही नहीं था, फिर तुमने सी.पी.टी कैसे पास की, वो भी पहली बार में और बिना किसी कोचिंग के ? मुझे तो यकीन ही नहीं होता” खुशी ने अपनी हैरानी ज़ाहिर की।

“हम्म्म... इसका पूरा श्रेय गणित और उस टीचर को जाता है जिसने मुझे अपनी सी.पी.टी. की कोचिंग क्लास में लेने से मना कर दिया था। ”

“कोचिंग क्लास में लेने से मना कर दिया? लेकिन क्यों?” खुशी हैरान थी।

“सी.पी.टी. का फार्म भरने के बाद, मैं अपने शहर में सी.पी.टी. की कोचिंग के लिए इंस्टीटयूट तलाशने लगा। मुझे आज भी याद है, यह जनवरी का पहला हफ़्ता था जब मैं कोचिंग के लिए एक एकाउंट्स टीचर के पास पहुंचा।”

राजपूत सर का घर, जनवरी 2008

"बेटा, तुम्हारे पापा ने मुझे तुम्हारे बारे में बताया था। लेकिन मुझे अफ़सोस है कि इतने थोड़े से समय में मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर पाऊंगा। मेरा मतलब, तुम फरवरी में एग्ज़ाम देना चाहते हो और अब जनवरी का पहला हफ़्ता चल रहा है। इतने कम वक़्त में तैयारी कर पाना नामुमकिन है। अगर तुम अगस्त वाला सैशन करते, तो मैं तुम्हारी मदद कर सकता था... लेकिन तब भी मैं तुम्हें पास होने की गारंटी नहीं दे सकता था। यहां तो लोग दो-दो साल से मेहनत कर रहे हैं और तुम दो-चार महीने में ही सब सीखना चाहते हो। लेकिन फिर भी कोशिश करके देख सकते हो..."

"सर, मेरा एक साल पहले ही बर्बाद हो चुका है और अब मैं और ज़्यादा वक़्त खराब नहीं कर सकता । दिल्ली में पी.सी.सी. के टीचर्स साल में दो बार बैच लगाते हैं और पहला बैच मई में शुरू होना है। अगर मैंने ये मौका छोड़ दिया, तो मेरे छह महीने और खराब हो जाएंगे और मैं नवंबर में ही वहां जा पाउंगा।"

"मैं समझ सकता हूं बेटा, लेकिन तुम भी तो मेरी बात को समझो। इतने कम समय में तैयारी करना असंभव है और मैं तुम्हें कोई झूठा दिलासा नहीं देना चाहता। हां, तुम अपने तरीके से पढ़ाई कर सकते हो और अगर कहीं कोई प्रॉब्लम हो, तो मेरे पास चले आना।"

रचित वहां से जाने ही वाला था कि तभी उनके एक स्टूडैंट ने उसे क्लास खत्म होने के बाद उससे बाहर मिलने को कहा।

एक घंटे बाद (राजपूत सर के घर के बाहर)

"हाय, मैं दीपक" उस लड़के ने रचित की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"हैल्लो, मैं रचित।"

"तो तुम हो वो, जिसने सी.ए. में आने के लिए आई.आई.टी. छोड़ दी?" दीपक ने उत्साहित होकर पूछा।

"हां, मैं ही हूं वो बेवकूफ़ जिसके बारे में तुम बात कर रहे हो" रचित उसके सवाल से थोड़ा चिढ़ गया।

"अरे, ऐसा क्यों कह रहे हो... वैसे भी, हमें अपने काम की हमेशा इज़्ज़त करनी चाहिए। सी.ए. करना तुम्हारा खुद का फैसला है, किसी ने तुम्हें इसके लिए मजबूर नहीं किया।"

"देखो, मेरा मूड पहले से ही बहुत खराब है, इसलिए तुम अपना ज्ञान बघारना बंद करो और सीधे-सीधे बताओ, मुझे यहां क्यों बुलाया है? क्या चाहते हो, मुझसे?" रचित खीझ कर बोला।

"ओह हैल्लो... ये आईआईटियन वाला रौब मुझे मत दिखाओ। मुझे कोई शौक नहीं है तुम्हारे साथ बात करने का। मैं तो यहां तुम्हारी मदद के लिए आया था और तुम मुझे ही एटीट्यूड दिखा रहे हो।"

"मेरी मदद ? लेकिन, कैसे?" रचित हैरान था।

"मैं बी.काम फर्स्ट ईयर का स्टूडेंट हूं और राजपूत सर हमें फाइनेंशियल एकाउंटिंग और स्टेटिस्टिक्स पढ़ाते हैं। तुम तो जानते हो, डिग्री कॉलेज में अटैंडेंस का कितना बुरा हाल है... मुश्किल से आठ-दस स्टूडेंट आते हैं। इसलिए मैं ज़्यादातर समय खाली ही रहता हूं।"

"हम्म्म... तो फिर?"

"देखो, सी.पी.टी. में हमारे चार विषय हैं- गणित, इकोनॉमिक्स, मर्केनटाइल लॉ और एकाउंटेंसी। गणित पढ़ाने की तुम्हें कोई ज़रूरत नहीं, क्योंकि तुम्हारे जैसे आई.आई.टीयन के लिए यह बाएं हाथ का खेल है। मर्केनटाइल लॉ के लिए तुम पी.सी. तुलसीयन की किताब पढ़ लेना। यह बहुत आसान विषय है, इसके लिए तुम्हें ज़्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।"

"लेकिन तुम मर्केनटाइल लॉ के बारे में इतने विश्वास से कैसे कह सकते हो?" रचित ने पूछा।

"बी.कॉम फर्स्ट ईयर में हमारे एक विषय में बिज़नेस लॉ के

नाम से एक पेपर होता है जिसमें मर्केनटाइल लॉ के बारे में सब कुछ बताया गया है।"

"इसलिए, मैं जैसा कहता हूं, तुम वैसा ही करो। वैसे भी अगर कहीं कोई प्रॉब्लम होगी, तो मैं तो हूं ही..." उसने पूरे विश्वास से कहा।

"ठीक है, लेकिन फिर तुम क्या करोगे?" रचित ने पूछा।

"मैं तुम्हें एकाउंटस के बेसिक सिखाऊंगा।"

"सिर्फ बेसिक? बाकी की एकाउंट्स और इकोनॉमिक्स का क्या?" रचित ने हैरानी से उसकी ओर देखते हुए पूछा।

"भाई, तुम 20 दिन में किला तो जीतने से रहे" दीपक ने ताना मारा। "इसलिए पढ़ाई पर ध्यान दो और जितनी कोशिश बन पड़े, करो।"

"तुम्हारा मकसद है - सी.पी.टी. का एग्ज़ाम पास करना। यह कोई 12वीं के एग्ज़ाम तो है नहीं, जो तुम 90-95 प्रतिशत नंबर लाने का सोचो। अपने आप पढ़ाई करके भी अगर तुम 75 से 80 प्रतिशत तक तक नंबर ले आए, यही बहुत बड़ी बात होगी। मैं तुम्हें एकाउंट्स पढ़ा दूंगा, जिससे 60 में से 35-40 नंबर तो तुम्हारे पक्के हो जाएंगे। बाकी रही मैक्रो इकोनॉमिक्स की बात, इसमें सामान्य जानकारी से जुड़े सवाल हैं, जिन्हें तुम आसानी से कर लोगे, इससे 10-15 नंबर और हो जाएंगे और अगर सब कुछ हमारी योजना के मुताबिक चलता रहा तो 100 के आंकड़े तक पहुंचने से तुम्हें कोई रोक नहीं सकता। वैसे भी, तुम्हारे पास कुछ खोने के लिए तो है नहीं... इसलिए जो होगा, देखा जाएगा... टैंशन नहीं लेने का" दीपक ने उसका हौंसला बढ़ाते हुए कहा।

अगले 20 दिनों तक, रचित ने दीपक के मार्गदर्शन में अपनी सी.पी.टी. की तैयारी की। ज़िंदगी में यह पहली बार था कि उसे परीक्षा के नाम पर डर लग रहा था। किसी तरह से उसने एग्ज़ाम दिया और फिर आखिरकार रिज़ल्ट का दिन भी आ गया।

मार्च, 08

सी.पी.टी. का रिज़ल्ट घोषित हो चुका था। जैसे ही रचित ने अपने से पीछे वाले पांच रोल नंबर टाइप किए, कंप्यूटर की स्क्रीन पर उनके नंबरों की लिस्ट आ गई- 78, 36, 85, 91, 12

"दीपक, प्लीज़ मेरा रोल नंबर टाइप करो... मेरा दिल बहुत घबरा रहा है।"

दीपक ने उसका रोल नंबर टाइप किया। जैसे ही उसका रिज़ल्ट स्क्रीन पर आया दीपक की आंखे खुली की खुली रह गई...

नाम:	**रचित अग्रवाल**
प्राप्तांक:	**121**
अधिकतम अंक:	**200**
परिणाम:	**पास**

रचित खुशी के मारे उछलने लगा और दीपक को कस कर गले से लगा लिया। उसके पैर ज़मीन पर नहीं टिक रहे थे।

"रचित, ये तो सिर्फ एक शुरूआत है, अभी तो तुम्हें बहुत आगे जाना है। यह तो सिर्फ एक एंट्रेंस टैस्ट था... सी.ए. बहुत मुश्किल है... बहुत ज़्यादा।"

"मैं जानता हूं, लेकिन प्लीज़, अभी तो मुझे अपनी जीत का मज़ा लेने दो।"

हां, यह तो एक सफ़र की शुरूआत थी, आगे रास्ता बहुत पथरीला और कांटो भरा था। उसकी इस जीत से उसके घरवालों और उसके दोस्तों के दिल में एक उम्मीद की किरण जगी थी। अब उसे सबकी उम्मीदों पर खरा उतरना था और साबित कर के दिखाना था कि उसकी जीत कोई तीर या तुक्का नहीं थी।

ख़्वाहिशों का कारवां चल पड़ा था।

10

22 मार्च, 2008 (शनिवार)

रचित का घर (सुबह 8 बजे)

“बेटा, तुमने पीयूष को तो अपने वहां पहुंचने के बारे में बता दिया ना? मेरा मतलब, तुम्हें लक्ष्मी नगर के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं है ना। वहां जाकर अकेले सारा बंदोबस्त करना तुम्हारे लिए मुश्किल हो जाएगा” उसके पापा ने पूछा।

“हां, पापा, आप टेंशन मत लो... मेरी उससे सारी बात हो चुकी है। वह पिछले चार साल से वहां रह रहा है । इसलिए उसे वहां आस-पास के सारे कोचिंग सेंटर्स और पी.जी. के बारे में पूरी जानकारी है। उसने मेरी आर्टिकलशिप का बंदोबस्त भी कर दिया है, और वो भी लक्ष्मीनगर में ही।”

“लेकिन, तुम आज ही क्यों जा रहे हो? मेरा मतलब, कल चले जाते, इतनी क्या जल्दी है?” उसके पापा ने सवालों की झड़ी लगा दी।

“पापा, कल रविवार है। और कल प्रॉपर्टी डीलर्स, कोचिंग इंस्टीट्यूट और बाकी सभी ऑफिस भी बंद रहेंगे।”

“जैसा तुम्हें ठीक लगे। मैंने तुम्हारे अकांऊट में पैसे जमा करवा दिए हैं। अगर और ज़रूरत हो, तो फोन कर देना। हम सबको तुमसे बहुत उम्मीद है, बेटा। और मैं जानता हूं, तुम इन

उम्मीदों पर खरा उतरोगे" कहते हुए उन्होंने रचित को गले से लगा लिया। उस वक़्त उनकी आंखों में आंसू थे।

इस तरह एक नए सपने को आंखों में लिए रचित दिल्ली के लिए निकल पड़ा।

अपोलो, दिल्ली, (सुबह साढ़े छः बजे) - फरवरी, 2011

"दिल्ली जाते वक़्त तुम्हें कैसा लग रहा था?" खुशी ने पूछा।

"यह एक बहुत अद्भुत अहसास था। एक नया कैरियर और एक नया शहर मेरा इंतज़ार कर रहा था। एक तरफ खुशी थी, अपनी ज़िंदगी को एक नए मुकाम पर लेकर जाने का जुनून था, तो वहीं दूसरी तरफ राधिका, अपने प्यार से बिछुड़ने का ग़म भी था। थोड़े से वक़्त में ही हमने बहुत सी ज़िंदगी जी ली थी। ढेरों सपने बुने थे। कुछ नए सपने जन्म ले रहे थे, तो कुछ पुराने धुआं हो चुके थे। मीलों की दूरी ने हमें एक-दूसरे से दूर कर दिया।"

"मैं तुम्हारा दर्द समझ सकती हूं। लेकिन तुमने तो कहा था कि दूरियां प्यार को कभी कम नहीं कर सकती। अगर प्यार सच्चा है तो, आप चाहे दूर रहो या पास, कोई फर्क़ नहीं पड़ता। बल्कि वक़्त बीतने के साथ प्यार मजबूत होता है। और फिर ये यादें ही तो हैं जो आपके रिश्ते की खूबसूरती को बढ़ाती है, है ना?" खुशी ने सवाल किया।

रचित ने एक लंबी सांस ली और वो फिर से अपने अतीत में चला गया और बोला, "हां, तुम सही कह रही हो। लेकिन हम हैं तो इंसान ही, और गलतियां भी इंसानों से ही होती हैं। कहां तो पहले हम रोज 10-12 घंटे इकट्ठे रहते, मस्ती करते, प्यार करते, झगड़ते, रूठते और फिर एक-दूसरे को मनाते, लेकिन अब हमारे पास बातचीत का सिर्फ एक ज़रिया था- मोबाइल।"

"अपनी सी.ए. की ज़िंदगी के बारे में भी तो बताओ। मेरा मतलब वहां का माहौल कैसा था? तुम्हारे लिए तो सब कुछ बहुत अलग रहा होगा ना? कोचिंग क्लासेज वगैरह, यह सब

आई.आई.टी. की तरह ही था क्या?” खुशी जानने को बेताब थी, क्योंकि सी.ए. उसके लिए भी एक नई चीज़ थी।

“नहीं... आई.आई.टी. और सी.ए. दोनों एक-दूसरे से बिल्कुल अलग है। जे.ई.ई. की कोचिंग करवाने वाले अच्छे इंस्टीट्यूट में एडमिशन ऐंट्रेंस टैस्ट से होता है, जबकि सी.ए. की कोचिंग करवाने वाले इंस्टीटयूट ‘पहले आओ, पहले पाओ’ के सिद्धांत पर चलते हैं। उन्हें कोई फर्क़ नहीं पड़ता कि आप सीबीएसई के टॉपर हैं या आपके 95 प्रतिशत नंबर हैं। यहां अगर आप अपनी मर्ज़ी का ट्यूटर चाहते हो तो आपको पहले ही रजिस्ट्रेशन करवाना होगा। एक और मज़े की बात... यहां हमें ऑडिटोरियम में पढ़ाया जाता है।”

“क्या?” वह एकदम से चौंक गई।

“हां, यहां एक बैच में कम से कम 700-750 स्टूडैंट्स होते हैं। और इस तरह के बैच साल में दो बार लगाए जाते हैं- एक मई में और दूसरा नवंबर में। इसके लिए फीस होती है करीबन 15 से 20 हज़ार रुपए।”

“पूरे कोर्स के लिए 15000, यह तो बहुत सही है” खुशी ने उसकी पूरी बात सुने बगैर कहा।

“अरे, यह पूरे कोर्स की नहीं, बल्कि सिर्फ एक विषय की फीस है । पीसीसी में हमारे छह विषय है जो दो ग्रुप में बाटे हुए होते है। एक ग्रुप में तीन विषय पढ़ाए जाते हैं। यह आपकी मर्ज़ी है कि आपको एक ग्रुप देना है या दोनों साथ में। लेकिन इससे पहले, हमारी 15 महीने की आर्टिकलशिप ट्रेनिंग होती है, जो कि एक चार्टर्ड एकाउंटेंट के नेतृत्व में रहकर की जाती है।”

रचित ने कहना जारी रखा। “अपनी निजी और व्यावसायिक ज़िंदगी को एक साथ लेकर चलना मेरे लिए बहुत मुश्किल था। दिल्ली मेरे लिए किसी दूसरी दुनिया के जैसी थी। पूरा दिन क्लासेज और आर्टिकलशिप में गुज़र जाता। सिर्फ रात ही बचती थी बात करने के लिए। वो तो भला हो टाटा के एस.टी.डी. पैक का, जिससे हम बिना किसी परेशानी के घंटों बात कर सकते

थे। हमने ऐसा ही एक-एक मोबाइल खरीद रखा था जिसे हम अपने घरवालों से छिपा कर रखते थे" बताते हुए रचित के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई।

"यही तो इस रिश्ते की खूबसूरती है। वैसे, घरवालों से छुपकर प्यार करने का मज़ा ही कुछ और है, नहीं?" खुशी ने भौंहे नचाते हुए पूछा।

"दिल्ली में तुम कहां रहते थे?"

"लक्ष्मी नगर में।"

"लक्ष्मी नगर! इसके बारे में तो मैंने काफी कुछ सुन रखा है। यह ईस्ट दिल्ली में है ना? प्रीत विहार के पास?"

"हां, वहीं, लेकिन इन दोनों जगहों की आपस में कोई समानता नहीं। प्रीत विहार एक बहुत शानदार कॉलोनी है, जबकि लक्ष्मी नगर और शकरपुर स्टूडैंटस वाला इलाका है, जहां एक थोड़ी सी जगह में स्टूडैंट्स को भेड़-बकरियों की तरह भरा जाता है।"

"लेकिन, फिर तुम लोग इतनी छोटी-सी जगह में क्लासेज कैसे करते थे?"

"नहीं, हमारी क्लासेज वहां नहीं, बल्कि आई.टी.ओ. मंडी हाऊस, कश्मीरी गेट और पहाड़गंज में लगा करती थी।"

"तो फिर तुम लोग वहां क्यों रहते थे?"

"क्योंकि यह स्टूडैंटस के लिए काफी सस्ता एरिया है। यहां हरेक दूसरी-तीसरी बिल्डिंग में कोचिंग इंस्टीट्यूट के ऑफिस, सी.ए. ऑफिस और प्रॉपर्टी डीलर्स के ऑफिस देखने को मिल जाएंगे। वहां के बारे में एक बात कहावत मशहूर है कि अगर आपके पास करने को कुछ नहीं है, तो लक्ष्मी नगर में छोले-भटूरे, खस्ता कचौरी, फोटोस्टेट, साइबर कैफे या मोबाइल रिचार्ज की दुकान खोल लो, कुछ दिनों में ही तुम मालामाल हो जाओगे।"

रचित की बात सुनकर खुशी खिलखिलाकर हंस पड़ी।

"और अगर लक्ष्मी नगर में आपकी कोई प्रॉपर्टी है तो बस आपसे खुशकिस्मत इंसान कोई है ही नहीं। ऐसे में आपको कुछ करने की ज़रूरत नहीं है, बस एक टू-लैट का बोर्ड उठाओ और घर के बाहर लगा दो, दो-चार घंटों में ही वहां किराए पर कमरा लेने वालों की भीड़ लग जाएगी।"

"अब बस करो लक्ष्मी नगर को, अपनी वहां की लाइफ के बारे में बताओ" खुशी ने उसे वापस मुद्दे पर लाने की कोशिश की।

"हां हां, बता रहा हूं" रचित थोड़ा झेंप सा गया। मेरी कोचिंग क्लास का वो पहला दिन मैं चाहकर भी कभी नहीं भुला सकता। हमारी क्लासेज पीतमपुरा में लगने वाली थी। पहली बार मुझे मैट्रो में सफ़र करने का मौका मिला।"

"यह बहुत रोमांचक रहा होगा, ना?"

"हां, मज़ेदार तो था, लेकिन मैं बहुत घबराया हुआ था। कोचिंग क्लास पहुंचकर देखा, तो एक बहुत बड़े हाल में हमारी क्लास लगने वाली थी। पहली बार मैं कॉमर्स के स्टूडैंट्स से मिल रहा था। यह सब मेरे लिए बिल्कुल नया था। ज़्यादातर स्टूडैंट ग्रुप्स में आ रहे थे। शायद वो पहले से ही एक-दूसरे को जानते थे। उनके साथ घुलने - मिलने में मुझे थोड़ा वक़्त लगा। जल्दी ही निखिल, शालिनी और दीक्षा मेरे बहुत अच्छे दोस्त बन गए। दीक्षा और निखिल दिल्ली से ही थे, जबकि शालिनी चंडीगढ़ से थी। निखिल और मैं एक ही कंपनी से आर्टिकलशिप कर रहे थे।"

"हमारी क्लासेज़ चार घंटे लगातार चलती, जिस दौरान हमें सिर्फ पंद्रह मिनट का ब्रेक दिया जाता। शुरूआत में हम अपनी पढ़ाई को लेकर बहुत सीरियस थे, इसलिए सिर्फ ब्रेक टाइम में ही क्लास से बाहर जाते। लेकिन जैसे-जैसे वक़्त गुज़रता गया, हमने इसे हल्के में लेना शुरू कर दिया। हम ब्रेक से पंद्रह मिनट पहले ही क्लास से चले जाते और ब्रेक खत्म होने के पंद्रह मिनट बाद वापस आते। इस दौरान हम खूब बातें करते, चाय पीते और

जी भर कर मौज-मस्ती करते। मैं उन्हें अपने पी.जी. के किस्से सुनाता। यह जाट भवन के नाम से मशहूर था।"

"जाट भवन? क्यों?"

"जिस पी.जी. में मैं रहता था, वहां जाट लड़के ज़्यादा थे। पीयूष भैया ने बताया था, वहां मुझे जंग बहादुर नाम का एक आदमी मिलेगा, जो कि वहां का केयरटेकर है। जैसे ही मैंने पी.जी. में कदम रखा, मैंने देखा कि एक बूढ़ा आदमी लड़कों को सफाई न रखने के लिए डांट रहा था। मैंने उससे पूछा, 'अंकल, यहां जंग बहादुर जी मुझे कहां मिलेंगे?' सुनते ही वह बोला, 'मैं ही जंग बहादुर हूं" मैंने बड़ी मुश्किल से अपनी हंसी रोकी। जंग तो मुझे नज़र आ रही था, लेकिन बहादुर दूर-दूर तक कहीं नहीं। और जंग भी युद्ध वाली जंग नही, बल्कि लोहे पर लगने वाला ज़ंग। उसका नाम सुनकर मैंने सोचा था कि यह कोई पहलवान टाइप का आदमी होगा, लेकिन यह तो ऊपर से लेकर नीचे तक थर-थर कांप रहा था। शरीर के नाम पर हडिड्यों का ढांचा मात्र था जिस पर मांस की हल्की परत चढ़ा दी गई हो।

"अगर ये जंग बहादुर है, फिर तो मैं स्पाइडर मैन हूं" मैं दबे होंठों में बुदबुदाया।

"क्या... क्या कहा तुमने?" वह ज़ोर से गरजा।

"नहीं, कुछ भी तो नहीं। मैं तो ये कह रहा था कि मुझे एक कमरा चाहिए।"

"ठीक है, आ जाओ" उसने मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया।

"फिर उसने एक रजिस्टर में मेरा नाम दर्ज किया, जहां वह अपने सभी किरायेदारों के नाम-पते और उनकी डाइट का रिकॉर्ड रखता था। फिर मुझे पी.जी. के सारे कायदे-कानून बताए गए, जैसे कि - पी.जी. में शराब नहीं पीना, लड़की को लेकर नहीं आना, शोरगुल या लड़ाई-झगड़ा नहीं करना, रात को दस बजे तक लौटकर आ जाना वगैरह-वगैरह। सुनकर मुझे लगा कि यहां

का माहौल बहुत सख्त होगा, लेकिन...” यहां आकर रचित रुक गया।

“लेकिन क्या?” खुशी आगे क्या हुआ जानने को बेताब थी।

“जब मैं अपने कमरे (रूम नंबर 102) में जाने के लिए बालकनी से गुजरा, तो मेरे होश ही उड़ गए। तेज आवाज़ में म्यूज़िक बज रहा था। मेरे साथ वाले कमरे में शराब की महफिल जमी थी, तो सामने वाले कमरे में तीन पत्ती का दौर...। यह एक डोरमैट्री रूम था। मेरा रूममेट करीब तीस साल का उम्रदराज़ लड़का था। उसकी लंबी बढ़ी दाढ़ी, लाल आंखें, बिखरे बाल और फटी-पुरानी शॉर्टस देखकर लगता था कि वह ना सिर्फ़ पढ़ाई से, बल्कि ज़िंदगी से भी उकता चुका हो। कमरे की हालत ब्यां कर रही थी कि इसे कई महीने से साफ नहीं किया गया है।”

“फिर तुम ऐसी जगह पर रहे कैसे?” खुशी ने चौंकते हुए पूछा।

“हां, मैं मानता हूं कि वो लोग थोड़े लापरवाह लोग थे, मुझसे उम्र में थोड़े बड़े थे और उनमें कुछ बुरी आदतें भी थी, लेकिन वो दिल के अच्छे थे। सबके सब ज़िंदगी के खाए हुए थे। कोई ऑफिस की गंदी राजनीति का शिकार था, तो कोई घरवालों के तानों का। सबकी अपनी-अपनी कहानी थी और सबके अपने-अपने दुखड़े। उनमें से ज़्यादातर तो सी.ए. के पूरा होने का इंतज़ार कर रहे थे, ताकि शादी कर सकें।”

“उनके घरवाले उन्हें धमकियां दिया करते थे कि उनकी शादी तभी होगी, जब वो अपनी सी.ए. पूरी कर लेंगे। दिल के किसी कोने में मुझे भी इसी बात का डर था, क्योंकि चार साल में राधिका की बी.टैक होना तो तय था, लेकिन मेरे कोर्स में कितना समय लगेगा, कुछ खबर नहीं थी। कई तो पिछले सात-आठ सालों से इसे कर रहे थे। लेकिन दूसरी तरफ, जब वो अपने इंजीनियर दोस्तों को पढ़ाई खत्म होने से पहले ही नौकरी लगते, तरक्की पाते, देश-विदेश घूमते और शादी करके अपनी ज़िंदगी में सैटल होते देखते, तो थोड़ा बुरा लगता।”

"और दूसरी तरफ़, हमारे आस-पड़ोस वाले और रिश्तेदार भी घरवालों के कान भरने का कोई मौका नहीं चूकते। मेरा मतलब वो जिन्होंने आपके जन्मदिन पर कभी आपको बधाई तक नहीं दी, रिजल्ट वाले दिन फोन करके ज़रूर पूछते कि कितने नंबर आए हैं। उस दुनिया में यह मायने नहीं रखता कि आपने कितनी बार कोशिश की, बस आपके नाम के आगे सी.ए. लगा होना चाहिए।"

"यार, मैं तो कल्पना भी नहीं कर सकती कि तुम लोग इस हद तक हताश थे। इसका मतलब, तुम्हारे पी.जी. को लेकर कोई अच्छी बात नहीं है बताने को" खुशी ने लंबी सांस लेते हुए कहा।

"नहीं, ऐसा नहीं है। कुछ अच्छी बातें भी हैं, जैसे कि - अगर मैं एक मिस कॉल देता तो इसका मतलब मुझे चाय चाहिए और अगर दो मिस कॉल देता तो मैगी। हम हमारे केयरटेकर को ताऊ कहकर बुलाते थे। हर महीने 45 डाइट लेना लाज़मी था, लेकिन ताऊ जानबूझकर हर एक के खाते में 4-5 डाइट ज़्यादा लिख देता।"

"और हां, वहां के एक बहुत ख़ास नियम के बारे में तो मैं तुम्हें बताना ही भूल गया। ताऊ के हिसाब-किताब पर कोई उंगली नहीं उठा सकता था। ताऊ का लिखा, समझो पत्थर की लकीर थी। लेकिन रात के दस बजे वाला नियम मेरे रूममेट और मेरी मंजिल के दूसरे लड़कों पर लागू नहीं होता था, कारण यह कि वो कभी-कभार ताऊ और बाकी के वर्कर्स को दारू का एकाध पैग पिला देते थे। क्रिकेट मैच के दिनों में उन्हें अपने कंप्यूटर पर मैच दिखा देने के बदले हमें सुबह के नाश्ते में एक परांठा ज़्यादा मिल जाया करता।"

"और तुम्हारी आर्टिकलशिप ? उसका क्या हुआ?"

"जिस कंपनी में मेरी ट्रेनिंग लगी, वो ना तो बहुत बड़ी थी और ना ही बहुत छोटी। यह लक्ष्मी नगर में ही थी। काम की ज़्यादा जानकारी न होने के कारण, शुरूआत में मुझे करने के लिए बहुत कम काम दिया जाता। बॉस के मामले में भी, मेरी

किस्मत बाकी दोस्तों की तुलना में बहुत अच्छी थी, क्योंकि मेरा बॉस ज़्यादा सख्त नहीं था।"

"सख्त? मतलब?"

"क्योंकि मैं नया था और मुझे ज़्यादा जिम्मेदारियां भी नहीं दी गई। ऑफिस से मुझे जल्दी आने दे दिया जाता था, जिससे मैं एकाउंट्स की क्लास में भी जा सकता था। आमतौर पर फर्म के मुख्य सी.ए. ट्रेनिंग के दौरान अपने ट्रेनीज़ को क्लास लेने की इजाजत नहीं देते। मेरे कुछ दोस्तों ने तो ट्रेनिंग के दौरान होने वाले दुर्व्यवहार की भी शिकायत की। कई छोटी फर्म में गर्ल्ज़ ट्रेनिज़ को चाय बनाने के लिए कहा जाता और लड़कों को अपने क्लाइंट्स के लिए पानी लाने के लिए। कई तो ऐसे थे जिन्होंने बदतमीज़ी की हद ही कर दी, वो ट्रेनिज़ को राशन की दुकान पर या सब्जी मंडी में सामान लाने तक को भेज देते थे।"

"क्या? तुम मज़ाक तो नहीं कर रहे?" सुनकर खुशी के होश उड़ गए।

"नहीं... मैं सच कह रहा हूं। अगर किसी दिन आपको चाय के साथ बिस्कुट खाने के लिए दे दिया जाए, तो बहुत बड़ी बात है। ट्रेनिज को हमेशा ऑडिट पर जाने का इंतज़ार रहता... इसलिए नहीं कि कुछ नया सीखने को मिलेगा, बल्कि वहां होने वाली आवभगत की वजह से। किसी क्लाइंट के ऑफिस में ऑडिट कर रहे ट्रेनी और किसी सी.ए. के ऑफिस में काम कर रहे ट्रेनी की हैसियत के बीच जमीन-आसमान का अंतर होता है। पहले केस में वह किसी जंगल में खुले घूमते शेर की तरह होता है और दूसरे केस में वह किसी पिंजरे में बंद सर्कस के शेर की तरह। यानि कि बॉस कहे तो बैठ जाओ और बॉस कहे तो खड़े रहो। बॉस की गालियां सुनो, बदतमीजियां सहो, लेकिन फिर भी बिना किसी शिकायत के काम करते रहो।"

"यार, ये तो बहुत बुरा है" खुशी मानो किसी नई दुनिया से रू-ब-रू हो रही हो।

"हां, वो तो है। लेकिन क्या कर सकते हैं, यही दस्तूर है।"

"ऑफिस की टाइमिंग 9:30 से लेकर 4:30 तक होती है। बावजूद इसके, उन्हें रात के 9-9 बजे तक बिठाकर काम करवाया जाता है। सिर्फ इतना ही नहीं, क्लोज़िंग पीरियड (31 मार्च और 30 सितंबर) में तो उन्हें रात-रात भर काम करना पड़ता है। शायद सभी सी.ए. को अपने संघर्ष के दिनों में यह सब झेलना पड़ा होगा और इसीलिए वह इसका बदला अपने ट्रेनीज़ से लेते हैं। हालांकि अपने समय में उन सब ने कसम खाई होती है कि वे अपने ट्रेनीज़ के साथ ऐसा व्यवहार कभी नहीं करेंगे।"

"खुशकिस्मती से मेरा बॉस ऐसा नहीं था।"

"चलो, कहीं तो तुम्हारी किस्मत ने साथ दिया।"

"बिल्कुल" रचित हंस पड़ा।

"क्लासेज, आर्टिकलशिप, रिलेशनशिप और अपनी पढ़ाई... इतना सब कुछ कैसे मैनेज करते थे, तुम??"

"शुरूआत में तो पढ़ाई और आर्टिकलशिप को एक साथ करना कुछ मुश्किल नहीं लगा, लेकिन फिर धीरे धीरे दिक्कतें बढ़ने लगी। यह राधिका ही थी जो हर रोज सुबह मुझे फोन करके उठाया करती, वरना मैं तो एकदम आलसी और दोपहर को ही सुबह मानने वाला बंदा हूं। अपनी इसी आदत के चलते ही मैंने क्लासेज़ के लिए शाम का वक़्त चुना। हम ज़्यादातर रात को ही बात किया करते थे। लक्ष्मी नगर से पीतमपुरा आने-जाने में एक घंटा लग जाता था। मैं रोज रात को 10 बजे वापस आता और फिर हम दोनों फोन पर लग जाते और सुबह के 4 बजे तक यूं ही लगे रहते।"

"यार, मुझे एक बात समझ नहीं आती, ये तुम लोग इतनी बातें लाते कहां से हो। हर रोज बात करते हो, वो भी कई घंटे। बोलते-बोलते थकते नहीं, क्या?"

"एक बार प्यार करके तो देखो, मैडम, सब पता चल जाएगा। बाकियों का तो पता नहीं, लेकिन हमारे पास तो करने के लिए

बहुत सी बातें होती थी, जैसे उसके कॉलेज और दोस्तों के बारे में, मेरे कॉलेज और दोस्तों के बारे में। सबके बारे में खबर होना भी तो ज़रूरी है" उसने शरारती अंदाज़ में हंसते हुए कहा।

"बिल्कुल सही कहा... मतलब कि तुम मानते हो कि सिर्फ लड़कियां ही बातूनी नहीं होती, बल्कि लड़के भी बातों में लड़कियों से पीछे नहीं हैं" आखिरकार खुशी को उसकी टांग खिंचाई का मौका मिल ही गया।

"बिल्कुल नहीं... यह तो उस बंदे या बंदी पर निर्भर करता है जिससे आप बात कर रहे हो। राधिका की मेरे कॉलेज, मेरे दोस्तों और मेरे ऑफिस की लड़कियों के बारे में जानने में ज़्यादा दिलचस्पी थी। उसे हमेशा डर लगा रहता था कि कहीं कोई लड़की मुझे अकेला देखकर अपने जाल में ना फंसा ले।"

"आहा... जैसे तुम ही शाहरूख खान हो और लड़कियां तुम्हारे करीब आने को मर रही हैं" खुशी ने कटाक्ष किया।

"हुंह... सबके लिए ना सही, लेकिन अपनी राधिका के लिए तो था। हम दोनों एक-दूसरे से बहुत प्यार करते थे... बहुत ज़्यादा। हमारी हमेशा यही कोशिश रहती है कि इस मीलों की दूरी का हमारे प्यार पर कोई असर ना पड़े। जब आप किसी से प्यार करते हो, तो वह आपके लिए बहुत ख़ास बन जाता है, उसकी हर बात आपके लिए बहुत मायने रखने लगती है।"

"सच कहा। एक-दूसरे से दूर होते हुए भी प्यार करना... सुनने में ही कितना रोमांटिक लगता है" खुशी ने कहा।

"हां, जब उसकी एक आवाज़ ही आपके लिए सब कुछ होती है, जब इससे ज़्यादा की आप कामना नहीं कर सकते और ना ही इतना कम होने की शिकायत। हालांकि, कभी-कभी दूरियों के साथ-साथ कुछ गलतफहमियां भी जन्म ले लेती हैं। इसी तरह के छोटे-मोटे झगड़े हम दोनों के बीच में भी होते थे। लेकिन यही झगड़े हमारे प्यार को, हमारे रिश्ते को और खूबसूरत बना

देते हैं" कहते - कहते रचित को बहुत तेज खांसी हुई। खुशी ने उसे पानी पिलाया और बिस्तर पर लेटा दिया।

"अभी तुम आराम करो, बाकी की बातें हम बाद में करेंगे" खुशी ने उसे कंबल ओढ़ाते हुए कहा।

"ठीक है।"

11

अपोलो हॉस्पिटल, दिल्ली (सुबह 7:30 बजे)

“कई बार, बीच की यह दूरी गलतफहमी की वजह बन जाती है। हम जो समझाना चाहते हैं, वो समझा नहीं पाते और ना ही सामने वाला उस तरीके से समझ पाता है। ऐसा ही कुछ हमारे साथ भी हुआ” रचित ने धीमी आवाज़ में कहा।

“मतलब ? मुझे तो तुम्हारी कहानी में इस तरह का कुछ नज़र नहीं आया?”

ठीक उसी वक़्त, किसी ने बाहर से दरवाजे की कुंडी घुमाई। आवाज़ सुनते ही रचित और खुशी दरवाज़े की ओर देखने लगे।

“ब्लड टैस्ट!” नर्स ने अंदर आते हुए कहा।

“ठीक है... कर लो” खुशी ने चिढ़कर कहा।

“ये तुम्हारे ब्लड टैस्ट किस चीज़ के हो रहे हैं? तुम्हें क्या प्रॉब्लम है?” रचित ने पूछा।

“अरे, कुछ नहीं, हल्का सा बुखार है। तुम अपनी कहानी जारी रखो।”

“यह कब और कैसे शुरू हुआ? मुझे भी ठीक से याद नहीं है... शायद उस दिन जब एकाउंट्स क्लास में मेरा आखिरी दिन

था” अपने ही ख्यालों में खोया रचित बड़बड़ाने लगा, मानो किसी याद का सिरा तलाशने की कोशिश कर रहा हो।

3 अक्तूबर, 2008

पीतमपुरा मेट्रो स्टेशन के सामने (सुबह 10:30 बजे)

(एकाउंट्स क्लास का आखिरी दिन)

रचित, शालिनी, दीक्षा और निखिल मुंह लटकाए एक कोने में खड़े थे, जबकि उनके बाकी के बैचमेट्स मस्ती-मज़ाक में लगे थे। कोचिंग क्लास में आज उनका आखिरी दिन था। एक-दूसरे से बिछुड़ने के ग़म में सब उदास थे।

“कम-ऑन, यार, ऐसी शक्लें क्यों बना रखी हैं? किसी के मातम में आए हो, क्या?” निखिल ने खामोशी तोड़ते हुए कहा।

“निखिल, तुम और तुम्हारे घटिया जोक्स... कोई हंसे या रोए, तुम्हें कोई फर्क़ नहीं पड़ता ना। जानते हो ना, कल शालिनी वापस अपने घर, चंडीगढ़ जा रही है। शायद ये आखिरी बार है, जब हम सब साथ हैं, क्योंकि वो अपने एग्ज़ाम वहीं से देगी। लेकिन, तुम्हें क्या?” कहते - कहते दीक्षा की आंखें छलक आई।

“मैं समझ सकता हूं, लेकिन...” निखिल ने कहना चाहा।

“नहीं, तुम कुछ नहीं समझते। तुम्हारे और रचित के एग्ज़ाम तो अगले साल नवंबर में हैं, लेकिन उसके बारे में तो कुछ सोचो, यार। अगले महीने ही उसके एग्ज़ाम हैं। हम तीनों तो यहां फिर भी साथ में रहेंगे, लेकिन ये वहां अकेली पड़ जाएगी। पिछले कुछ महीनों में ही हम सबके बीच एक गहरा रिश्ता सा बन गया है। एक-दूसरे की इतनी आदत लग गई है कि दूर जाने के ख़्याल से भी डर लगने लगा है” दीक्षा ने भारी मन से कहा। और तभी निखिल ने उसे बीच में ही टोका।

“अरे भई, बहुत हुआ रोना-धोना। शालिनी अपने घर ही तो

जा रही है, कौन सा देश छोड़कर भाग रही है। और फिर अपनी यह मॉडर्न टैक्नॉलजी, ये फोन किस काम के... इससे तो हम सब कान्टैक्ट में रहेंगे ही ना। चलो, अब सब अपना-अपना मूड ठीक करो। जब अलग होना ही है, तो हंसते-खेलते होंगे, रोते हुए नहीं" निखिल ने कहा।

"ठीक है फिर, वैसे प्लान क्या है?" रचित ने उत्साहित होकर पूछा।

"भाई, आज मैं तुम्हें दिलवालों की दिल्ली घुमाऊंगा। ये मल्टीप्लैक्स और मॉल तो बस ट्रेलर भर है... असली दिल्ली तो अभी तुमने देखी कहां है। आज हम पूरा दिन दिल खोलकर मस्ती करेंगे। ना ऑफिस की टेंशन और ना घर जाने की जल्दी, फुल टाइम मस्ती होगी। तुम सब अभी से अपने-अपने मोबाइल बंद कर दो, नहीं तो बाद में बहाना लगाओगे कि बॉस ने बुलाया है या घर से फोन है" निखिल ने कहा।

निखिल और दीक्षा स्कूल के समय के दोस्त थे और दोनों दिल्ली के ही रहने वाले थे। इसलिए रचित और शालिनी की तुलना में वे इस शहर को बेहतर तरीके से जानते थे।

"आइडिया तो अच्छा है, लेकिन मोबाइल बंद करने की क्या ज़रूरत।"

"भई, जब प्लान मेरा है, तो चलेगा भी मेरे हिसाब से। और फिक्र मत कर, कहीं ना तुझे ओबामा फोन करने वाला है। मैं कोई गड़बड़ नहीं चाहता। और वैसे भी, कुछ घंटों की तो बात है, मज़ा आएगा" निखिल ने रचित को मनाने की कोशिश की।

आइडिया वाकई में बहुत अच्छा था, कौन मना कर सकता था। सबने तुरंत अपने-अपने मोबाइल बंद किए और घूमने जाने को तैयार हो गए।

निखिल और रचित जिन जगहों पर जाना था, उसकी लिस्ट बनाने में लग गए, जबकि लड़कियां कोने में खड़ी होकर अपना मेकअप ठीक करने लगी *(भगवान जाने इन लड़कियों का ध्यान*

हमेशा लिपस्टिक और बिंदी पर क्यों लगा रहता है। और भी ग़म है यारों दुनियां में, मेक-अप के सिवा)।

ख़ैर, हमारी घुमक्कड़ी की शुरूआत इंडिया गेट से हुई। फिर अक्षरधाम होते हुए राजघाट, जामा मस्जिद और सूरज ढ़लते-ढ़लते हमारी सवारी जा पहुंची लाल किले पर।

लाल किला शाम 7:30 पर

"थैंक्स निखिल, आज का दिन मैं कभी नहीं भूलूंगी" शालिनी ने कहा।

"थैंक्स की क्या बात है, दोस्तों के लिए तो जान भी हाज़िर है। वैसे, अभी तो एक और जगह जाना बाकी है" निखिल ने आंखों में शरारत वाली हंसी हंसते हुए कहा।

"यार, पहले से ही बहुत लेट हो चुका है। मुझे लगता है हमें वापस जाना चाहिए।"

"अरे, तुम परेशान क्यों होती हो, मैं हूं ना। मैं तुम्हें और दीक्षा को घर छोड़ दूंगा। बस, अभी तुम दिल खोलकर मज़े करो"

"और मेरा क्या?" रचित ने फटाक से पूछा।

"फिक्र मत करो, भाई। यहां दिल्ली में ब्लू लाइन बसों की सर्विस बहुत अच्छी है। मैं तुम्हें बस में चढ़ा दूंगा" निखिल ने मज़ाक करते हुए कहा। सब ठहाका मारकर हंस दिए।

"बस बस, बहुत हुआ, वक़्त बर्बाद मत करो और मुझे मेरे मास्टर प्लान को अंजाम तक पहुंचाने दो।"

"और वह क्या, निखिल?" दीक्षा ने उत्सुकता से पूछा।

"दिल्ली-6, दिल्ली की रूह" निखिल ने बताया।

"ये दिल्ली-6 क्या है?" शालिनी ने पूछा।

"रुको, मैं बताती हूं। दिल्ली-6 का मतलब है- पुरानी दिल्ली। यह दिल्ली का सबसे अलग और ख़ास हिस्सा है, जिसकी अपनी अलग संस्कृति है और इसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता...

सबसे पुराना, सबसे अद्भुत, और सबसे अनोखा। चांदनी चौक, जामा-मस्जिद, राम-लीला ग्राउंड और दरियागंज का एरिया इसी के अंदर आता है।" दीक्षा ने अपना ज्ञान बघारते हुए कहा। "और पूरी दिल्ली में सबसे लज़ीज़ खाना यहीं पर मिलता है। और अगर मैं गलत नहीं हूं, तो हम मशहूर करीम होटल में जा रहे हैं, है ना" उसने निखिल की ओर देखते हुए पूछा।

"कुछ हद तक तुम सही हो। लेकिन, रचित शाकाहारी है तो इसीलिए हम परांठा वाली गली में जाएंगे" निखिल ने कहा।

परांठे तो भारत के हर घर में बनते हैं। लेकिन चांदनी चौक की परांठा वाली गली में परांठे बनाने का अपना एक अलग स्टाइल है। यह जगह अक्षय कुमार के कारण भी मशहूर है। कहा जाता है कि बॉलीवुड में अपना करियर बनाने से पहले सुपर स्टार अक्षय कुमार चांदनी चौक की इन्हीं गलियों में रहा करता था।

निखिल ने खुरचन परांठा, मेथी परांठा और भिंडी परांठा के साथ लस्सी का ऑर्डर भी दिया। खाने के बाद घूमते-घुमाते वो गुरुद्वारा सीसगंज साहिब तक पहुंच गए।

दीक्षा और शालिनी को उनके घर सुरक्षित पहुंचाने के बाद निखिल ने रात दस बजे के करीब रचित को भी उसके हॉस्टल छोड़ दिया।

अपोलो, दिल्ली (सुबह 8 बजे)

अस्पताल के बिस्तर पर बैठा रचित उस दिन को याद कर रहा था, क्या वह दोबारा अपनी ज़िंदगी में उसी तरह का दिन जी पाएगा? क्या ऐसे दोस्त उसे फिर से मिल पाएंगे? अगर तराजू के एक पलड़े में पूरी ज़िंदगी रखी हो और दूसरे पलड़े में वैसे चंद दिन, और उसे एक पलड़ा चुनने को कहा जाए, तो वह पूरी ज़िंदगी को छोड़, उन चंद दिनों को गले लगाएगा। किसी महान आदमी ने कहा है, कि आप एक ज़िंदगी में कितने पल जीते हैं, ये मायने नहीं रखता, मायने ये रखता है कि आप हर पल में ज़िंदगी को कितना जीते हैं।

उसे याद आया कि कैसे दिन भर की थकावट के बाद, रात को जब उसने अपना फोन ऑन किया तो राधिका के 16 मैसेज आए हुए थे।

12

लोग आए दिन मुझसे एक ही सवाल पूछते- “सी.ए.? क्यों?” हां, मैं मानता हूं कि मैं कभी सी.ए. नहीं करना चाहता था। मैंने ऐसा किया, क्योंकि आई.आई.टी. के बाद किसी भी ऐरे-गैरे कॉलेज से पढ़ाई करना मुझे बिल्कुल भी गवारा नहीं था। शायद यह मेरी ज़िंदगी की सबसे बड़ी गलती थी। मैं वो चीज़ कर रहा था, जिसमें मेरी ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी। मेरे लिए सी.ए. करना, किसी बोझ से कम नहीं था। ना तो मुझमें आर्टिकलशिप ट्रेनिंग को लेकर कोई उत्साह था और ना ही ऑडिट में कोई दिलचस्पी। सुबह से लेकर रात तक, मैं किसी मिशन की तरह लगा रहता- पहले ट्रेनिंग, फिर क्लासेज और फिर उसके बाद पढ़ाई। मेरे लिए सबकुछ एकदम नीरस था। और मेरी सबसे बड़ी गलती थी इस बात को राधिका के साथ शेयर ना करना, जो कि मेरे लिए सब कुछ थी। मैंने सोचा था कि अपनी निजी और प्रोफेशनल ज़िंदगी को अलग-अलग रखना ही हमारे लिए सही होगा। दिल्ली में रहने के दौरान जो एक चीज़ मेरे लिए सबसे ज़्यादा यादगार रहीं, वो थी- निखिल, दीक्षा और शालिनी के साथ मेरा दोस्ती का रिश्ता।

उस दिन जब मैं अपने दोस्तों के साथ मज़े लूट रहा था, राधिका मेरा नंबर बंद देखकर परेशान हुई जा रही थी। जैसे ही मैंने अपना फोन ऑन किया, राधिका के 16 मैसेज थे। मैने इन्हें पढ़ा-

1. हाय, माय लव! कैसे हो? आज का दिन कैसा रहा?
2. कहां हो?
3. मिस्टर बिज़ी?
4. कोई तो जवाब दो।
5. रचित, तुम ठीक तो हो ना?
6. तुम जवाब क्यों नहीं दे रहे?
7. मुझसे गुस्सा हो, रचित?
8. तुम हो यहां?
9. कहां हो, प्लीज़ मेरे साथ बात करो ना?
10. प्लीज़ रचित, एक बार आ जाओ...
11. कुछ हुआ है क्या?
12. प्लीज़ यार, कम से कम बता तो दो, तुम कहां हो?
13. मुझे डर लग रहा है... कुछ तो जवाब दो।
14. प्लीज रचित.... ;)
15. गुडनाइट...:/
16. अच्छा, मैं सोने जा रही हूं... जब भी तुम्हें मेरे मैसेज मिले, फोन कर लेना।

मैंने मैसेज पढ़े और बिना ये सोचे कि पूरे दिन से मेरा फोन बंद था, पता नहीं राधिका पर क्या बीत रही होगी। मैंने उसे फोन मिलाया और उसके फोन उठाते ही भभक पड़ा।

“आखिर प्रॉब्लम क्या है तुम्हारी? सोलह मैसेजिज़? और पता नहीं कॉल कितनी बार किया होगा? तुम्हें क्या लगता है, मैं यहां किसी लड़की के साथ गुलछर्रे उड़ा रहा हूं? विश्वास नहीं है तो साफ बोल दो। यूं बार-बार फोन करके मेरी जासूसी करना बंद करो?”

“लेकिन मैं तो... मुझे तो सिर्फ तुम्हारी चिंता हो रही थी” राधिका ने कहने की कोशिश की।

“मैं कोई बच्चा नहीं हूं, अपना ख़्याल खुद रख सकता हूं। साला, सुबह से शाम तक ट्रेनिंग और पढ़ाई के चक्कर में रहो और रात में आकर तुम्हारा लैक्चर सुनो। थक गया हूं मैं, हर रोज की इस चिक-चिक से” मैं बिना सोचे-समझे, जो मुंह में आया, बोलता चला गया।

“लेकिन उस दिन के मेरे गुस्से ने हमारे रिलेशनशिप को हमेशा के लिए खराब कर दिया। वो पूरी रात रोती रही और मैंने क्या किया ? मैंने उसकी कोई बात सुने बिना ही फोन काट दिया। यह पहली बार था जब मैंने उससे इस तरह की बात की थी, लेकिन आखिरी बार नहीं। लेकिन धीरे-धीरे यह मेरी आदत बनती गई। जब कभी हमारे बीच कोई बहस होती, तो मैं बिना उसे सुने, पूरा इल्ज़ाम उसके सिर पर मढ़ देता। कुल मिलाकर यह कहना गलत नहीं होगा कि उस वक़्त हमारा रिश्ता एक बुरे दौर से गुज़र रहा था।”

आज अगर ईमानदारी से मेरे उस व्यवहार के पीछे की वजह तलाश करने की कोशिश करता हूं, तो मुझे मेरी ही गलती दिखाई देती है। सच कहूं, तो मैं अपनी उस मशीनी ज़िंदगी से तंग आ चुका था। सुबह उठने से लेकर रात को बिस्तर पर जाने तक मैं भागता ही रहता। और फिर रात देर रात तक राधिका से होने वाली बातें। इस वजह से मेरी नींद भी पूरी नहीं हो पाती थी। मेरे जैसा लड़का जो कभी अपनी एक क्लास भी नहीं छोड़ता था, ज़्यादातर अपनी मॉर्निंग क्लासेज़ बंक करने लगा था। एकाउंट्स में तो मैं पहले से ही काफी कमज़ोर था और मैंने सोचा था कि पी.सी.सी. में अपनी गलती सुधार लूंगा, लेकिन मैं गलत था... मैं पहले से भी ज़्यादा पिछड़ गया।

मैं जानता था कि इसमें दोष मेरा ही था, लेकिन हम लड़के अपनी प्रॉब्लम कभी किसी के साथ शेयर नहीं करते। हम इन्हें खुद ही हल करना चाहते हैं और इसके चलते हमारा लोगों से बात करना तक कम हो जाता है। मैं भी उनमें से ही एक था।

नवंबर में मेरे एग्ज़ाम होने वाले थे और मैं बहुत डरा हुआ था। यह बात मैंने राधिका को भी नहीं बताई, लेकिन इसका सीधा असर हमारे रिश्ते पर पड़ रहा था। हर रोज़ होने वाली बातचीत अब कम होकर हफ्ते में एक बार होने लगी थी।

क्या उसके लिए यह समझना इतना मुश्किल था, कि मैं यह सब उसी के लिए तो कर रहा था। उस वक़्त वह बी-टैक के सातवें सेमेस्टर में थी। उसके करियर का ग्राफ स्पष्ट था। कभी भी उसे देश की टॉप मॉस्ट आई.टी. कंपनी में नौकरी मिल सकती थी। और दूसरी तरफ मैं, जिसे यह भी नहीं पता था कि वह एग्ज़ाम पास भी कर पाएगा या नहीं। और अगर पास कर भी लिया तो कोई नौकरी मिल भी पाएगी या नहीं। मैं खुद उसे कैसे यह सब बताता” रचित बोलता रहा।

फरवरी 2011

अपोलो, दिल्ली (सुबह 8:30)

“किसी रिश्ते को बनने में सालों-साल लग जाते हैं, लेकिन खराब होने में कुछ पल भी नहीं लगते। एक छोटी-सी गलती या फिर गुस्से में कही हुई कच्ची बात कई बार ऐसी दरार पैदा कर देती है, जिसे भरना बहुत मुश्किल होता है। और अगर इस दरार को वक़्त रहते ना भरा जाए तो यह खाई बन जाती है। और तब रिश्ते को गर्त में जाने से कोई नहीं रोक सकता” खुशी ने जाने-अनजाने एक सच्ची और गहन बात बोल दी थी।

बात सीधा रचित के दिल पर लगी। वह कुछ पल के लिए चुप रहा। फिर अपने कमर के नीचे का तकिया ठीक किया और कुछ सोचते हुए बोला, “हां, तुम ठीक कह रही हो। उस वक़्त शायद मुझे भी इस बात का अंदाजा था। इसीलिए मैं अपनी तरफ से हमारे रिश्ते को बचाने की हर संभव कोशिश कर रहा था। सितंबर में मेरा कोलकाता ट्रिप भी इन्हीं कोशिशों में से एक था। दो साल के लंबे समय के बाद आखिरकार हम मिलने जा रहे थे।”

न्यू दिल्ली रेलवे स्टेशन - अजमेरी गेट

1 सितंबर, 2009, शाम 4 बजे

“तुम जानते भी हो कि तुम कितनी बड़ी बेवकूफी करने जा रहे हो? एग्ज़ाम सिर पर हैं और तुम्हें गर्लफ्रैंड से मिलने की पड़ी है... मेरी मानो तो यह ख़्याल दिमाग से निकाल दो और अपना ध्यान पढ़ाई में लगाओ। वैसे भी, गर्लफ्रैंड कौन सा भागी जा रही है, बाद में मिल लेना। जहां उसने सितंबर तक तुम्हारा इंतज़ार किया है, दो महीने और कर लेगी। कम से कम अपने करियर के साथ खिलवाड़ तो मत करो” निखिल ने रचित को समझाने की बहुत कोशिश की, लेकिन रचित अपनी ज़िद्द पर अड़ा था।

“निखिल मेरे भाई, मैं जानता हूं तुम जो कुछ भी कह रहे हो, बिल्कुल सही कह रहे हो और मेरी भलाई के लिए ही कह रहे हो। लेकिन मैं इन रोज़-रोज़ के झगड़ों से तंग आ चुका हूं। पिछले कई महीनों से हमारी बातें कम होती है और बहस ज़्यादा। अगर यह सब ऐसे ही चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा रिश्ता पूरी तरह खत्म हो जाएगा और मैं ऐसा नहीं होने देना चाहता। मैं हमारे रिश्ते को कैसे भी करके बचाना चाहता हूं, फिर चाहे इसके लिए मुझे कोई भी कीमत क्यों न देनी पड़े” रचित की आवाज़ में बेबसी थी।

“अगर तुमने फैसला कर ही लिया है, तो बहस करना बेकार है। चलो फिर, ऑल द बेस्ट!” कहते हुए निखिल रचित से गले मिला और अपनी मां के हाथ की बनी आलू-पूरी का डिब्बा उसके हाथ में थमा दिया। इसके बाद रचित चल पड़ा अपने प्यार से मिलने।

कोलकाता : हावड़ा जंक्शन

2 सितंबर, 2009, शाम 7 बजे

पूर्वा एक्सप्रैस, जो दिल्ली से लेकर कोलकाता तक का 1450 किलोमीटर का सफर 24.5 घंटे में तय करती थी, सिर्फ दो घंटे लेट थी। हर गुजरते पल के साथ रचित की बेचैनी भी बढ़ती जा

रही थी। इन दो घंटो में राधिका उसे कम से कम बीस फोन कर चुकी थी। दोनों बेसब्री से एक-दूसरे को मिलने का इंतज़ार कर रहे थे। आखिर, वो घड़ी आ ही गई, जिसका उन्हें कब से इंतज़ार था। पूर्वा एक्सप्रैस जैसे ही प्लेटफार्म पर पहुंची, रचित की आंखें राधिका को यहां-वहां ढूंढने लगी। और तभी किसी ने उसका नाम पुकारा।

"रचित" राधिका ने दूर से ही आवाज़ लगाई। गुलाबी टॉप, नीली जीन्स और चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कान लिए वह उसका इंतज़ार कर रही थी।

राधिका को देखकर रचित भागता हुआ आया और उसे गले से लगा लिया। भावनाओं के आवेश में उसने राधिका को गाल पर चूम लिया। राधिका का चेहरा शर्म से लाल हो गया। उसने रचित को धीरे से पीछे की ओर धकेल दिया।

"रचित, क्या कर रहे हो? लोग देख रहे हैं?"

"ओह! सॉरी... इतने वक़्त बाद तुम्हें देख रहा हूं, इसलिए खुद पर काबू नहीं रहा।"

"आई लव यू रचित। तुम्हारा सफर कैसा रहा? कोई प्रॉब्लम तो नहीं हुई ना? और तुमने इतनी जल्दी टिकटों का बंदोबस्त कैसे किया?"

"टिकटें तो कन्फर्म हुई नहीं, इसलिए टी.टी. को पैसे देकर पटाया। वैसे ये बताओ, कि तुम्हें घरवालों ने आने कैसे दिया?" रचित ने पूछा।

"मम्मा को झूठ बोला कि दोस्तों के साथ मोना दी के यहां पजामा पार्टी में जा रही हूं" राधिका ने हंसते हुए बताया।

"लेकिन मुझे तो पजामा कहीं नजर नहीं आ रहा" रचित ने उसे छेड़ा।

"रचित..."

"क्या?"

"कुछ नहीं..."

"आहां... तो क्या प्रोग्राम है? मुझे अपने घर लेकर जा रही हो क्या?" रचित, मानो वही पुराने वाला रचित बन गया था... बिंदास और मुंहफट।

"बकवास बंद करो! एक टैक्सी लो, हम हाज़रा जाएंगे। वहां कुछ अच्छे और सस्ते होटल हैं। एक बार तुम्हें कमरा मिल जाए, फिर हम कालीघाट मंदिर जाएंगे और वहां से तुम मुझे मोना दी के घर छोड़ देना। मैं कल सुबह तुमसे मिलने आउंगी और तुम्हें अपना पूरा शहर घुमाऊंगी। देखना, बहुत मज़ा आएगा" राधिका की आंखों में एक चमक थी। वह बच्चों की तरह चहक रही थी, शायद यह रचित के साथ होने का असर था।

"मंदिर क्यों? तुम जानती हो ना, मैं आर्यसमाजी हूं। कहीं ओर नहीं चल सकते क्या?"

"रचित"

"क्या?"

"बकवास मत करो और मैं जैसा कह रही हूं, वैसा ही करो।"

उन्होंने टैक्सी ली और होटल की तलाश में हाज़रा की ओर चल पड़े। होटल लेने के बाद, वो कालीघाट की ओर चले गए। यह हुगली नदी के किनारे पर था। यहां काली माता का मंदिर है। लोगों का इस मंदिर में बहुत विश्वास है। लोगों का मानना है कि इस मंदिर में मांगी गई मन्नतें ज़रूर पूरी होती हैं। मंदिर में माथा टेकने के बाद, रचित ने राधिका के कहे अनुसार उसे उसकी दोस्त के घर छोड़ा और वापस होटल चला आया।

कोलकाता

अगले दिन, सुबह 10 बजे

वादे के मुताबिक, राधिका अगले दिन तय वक़्त पर रचित से मिली और दोनों शहर घूमने के लिए निकल गए।

कोलकाता - इस शहर की अपनी अलग ही संस्कृति है। यही एक ऐसी जगह है जहां आपको आज भी हाथ से चलाए जाने

वाले रिक्शा और ट्राम्स देखने को मिल जाएंगे। यह भारत के साहित्यिक जगत का केंद्र है। देश के जाने-माने साहित्यकार जैसे रविंद्र नाथ टैगोर, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, शरत चंद्र चट्टोपाध्याय, अपर्णा सेन, गायक मन्ना डे, फिल्मकार सत्यजित रे और भी बहुत से महानुभावों का जन्म इस कोलकाता की धरती पर हुआ। कोलकाता अपनी मिठाईयों के लिए भी मशहूर है जैसे कि रोशोगुल्ला, सोंदेश और मिष्टी दोई। यहां के लोगों में साहित्य के साथ-साथ स्पोर्टस को लेकर भी उतना ही उत्साह है। लैंडमार्क ईडन गार्डन और साल्ट लेक स्टेडियम में नेशनल और इंटर-नेशनल मैच खेले जाते हैं। दुर्गा-पूजा के मौके पर इस शहर को एक नई नवेली दुल्हन की तरह सजाया जाता है। पूरा शहर दीयों, मोमबत्तियों और रंग-बिरंगी रोशनी से जगमगाने लगता है। यहां अलग-अलग तरह के पोडियम और पंडाल देखने को मिल सकते हैं जिन्हें पूजा के लिए बांस और कपड़े से बनाया जाता है। इन पंडालों के बारे में सबसे अच्छी बात है इनकी अद्भुत रचना और कारीगरी। काली मां की बड़ी-बड़ी प्रतिमाओं को सजाकर पोडियम में स्थापित किया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि दुर्गा पूजा के मौके पर ही बंगाली औरतों का पारंपरिक और नैसर्गिक रूप देखने को मिलता है। उस दिन वो चमक-धमक वाली रंग-बिरंगी साडियां पहनती हैं और माथे पर बड़ी सी बिंदी लगाती हैं।

शाम होने तक वो शहर भर में अलग-अलग जगहों पर घूमते रहे। तब तक दोनों ही थककर चूर हो चुके थे। दोनों एक कॉफी शॉप में बैठे कॉफी पी रहे थे, कि तभी रचित का मोबाइल बजा। रचित ने मोबाइल उठाकर देखा और अचानक से उसके चेहरे के भाव बदल गए।

“क्या हुआ?” राधिका ने शायद उसके चेहरे के भावों को पढ़ लिया था।

“कुछ नहीं... ऐसे ही एक बकवास मैसेज है” रचित थोड़ा बौखला सा गया था।

"जरा दिखाओ तो" कहते हुए राधिका ने रचित के टेबल पर पड़ा मोबाइल उठा लिया। और अगले ही पल उसके पैरों तले जमीन खिसक गई।

"रचित, तुम्हारी बहुत याद आ रही है। प्लीज, जल्दी वापस आना... श्रुति।"

"ये क्या बकवास है, रचित? तुमने तो कहा था कि तुम अब उससे बात नहीं करते, फिर वो तुम्हें मैसेज क्यों कर रही है?" राधिका उस पर चिल्लाई।

श्रुति रचित के ऑफिस में उसके साथ काम करती थी और वह रचित को बहुत पसंद करती थी। हालांकि रचित के दिल में उसे लेकर ऐसा कुछ भी नहीं था और उसने राधिका को श्रुति के बारे में सब बता भी दिया था। श्रुति को लेकर उनका कई बार झगड़ा भी हो चुका था। फिर एक दिन उसने राधिका से वादा किया था कि वो श्रुति से कोई दोस्ती नहीं रखेगा।

"यार, मैं उसे मैसेज करने से कैसे रोक सकता हूं ? मैंने तो कब से उससे बात करना बंद कर रखा है, चाहो तो मेरी कॉल डिटेल देख लो" राधिका का गुस्सा देखकर रचित घबरा गया।

अगले कुछ पल के लिए राधिका खामोश रही। शायद अपने भीतर सुलग रही आग को ठंडा करने की कोशिश कर रही थी। वह जानती थी कि अगले दिन रचित को वापस जाना है और नहीं चाहती थी कि इस मुलाकात का अंत भी एक झगड़े के साथ हो।

"ठीक है, मुझे तुम पर पूरा भरोसा है" उसने एक लड़खड़ाई सी आवाज़ में कहा। लेकिन दोनों का ही मूड खराब हो चुका था। दोनों कुछ देर तक और साथ रहे और इसके बाद राधिका वापिस अपने घर चली गई।

अगले दिन रचित भी वापिस दिल्ली लौट आया। उसके सी.ए. के एग्ज़ाम पास थे, इसलिए अगले कुछ दिन तक उसने अपने आप को पढ़ाई में झोंक दिया। इस दौरान उन दोनों के

बीच बहुत कम बात हुई और अगर कभी दो-चार दिन बाद बात होती भी तो सिर्फ दो-चार मिनट के लिए और वह भी बहुत औपचारिक सी।

आखिरकार उसके एग्ज़ाम हुए और रिजल्ट का दिन भी आ गया।

7 फरवरी, 2010 (पी. सी. सी. का रिजल्ट)

रचित ने अपना रोल नंबर टाइप किया। हालांकि उसे पास होने की कोई उम्मीद नज़र नहीं आ रही थी। लेकिन अपने अंक देखकर उसकी यह निराशा और बढ़ गई -

कॉस्ट एकाउंटिंग एंड फाइनेंशियल मैनेजमैंट	**50**
टैक्सेशन	**31**
इन्फॉर्मेशन टैक्नॉलजी एंड स्ट्रैटेजिक मैनेजमैंट	**57**
कुल अंक	**138**
परिणाम	**फेल**

13

8 फरवरी, 2010 - राधिका का 21 वां जन्मदिन

राधिका बहुत देर से रचित का नंबर लगा रही थी, लेकिन यह बंद आ रहा था। उसे रचित की बहुत फिक्र हो रही थी। हारकर, उसने निखिल को फोन किया और उसे पता चला कि रचित अपने एग्ज़ाम में फेल हो गया है। निखिल ने बताया कि वह थोड़ा परेशान है और कुछ देर अकेला रहना चाहता है। इसी वजह से उसने अपना फोन बंद कर रखा है।

अपोलो, दिल्ली - फरवरी 2011

“क्या? तुम उसका जन्म दिन भूल गए, वो भी अपने रिज़ल्ट की वजह से! इसमें उस बेचारी का क्या कसूर था” रचित की इस बेवकूफ़ी पर खुशी बहुत हैरान थी।

“नहीं, मुझे उसका जन्मदिन याद था, लेकिन उससे बात करने की हिम्मत नहीं हो रही थी। सब मेरे रिज़ल्ट के बारे में बात कर रहे थे। एक गलती तो मैं पहले ही कर चुका था, जो मैंने सिर्फ एक ही ग्रुप का एग्ज़ाम दिया और अब उसमें भी फेल हो गया। जबकि मेरे ज़्यादातर दोस्तों ने दोनों ही ग्रुप्स पास कर लिए थे। मुझे खुद पर शर्म आ रही थी” रचित ने बताया, वह खुशी से नज़रें नहीं मिला पा रहा था।

"मुझे लगा था कि तुम सिर्फ बेवकूफ़ हो, लेकिन तुम तो कायर भी हो। मेरा मतलब, तुम अपनी कामयाबी का आंकलन दूसरों की असफलता देखकर करते हो। तुम इस बात से दुखी नहीं थे कि तुम फेल हो गए, बल्कि इस बात से शर्मिंदा थे कि तुम्हारे दोस्त पास हो गए। कैसे इंसान हो तुम... मैं दावे से कहती हूं, अगर निखिल भी तुम्हारे साथ फेल हुआ होता, तो तुम राधिका को फोन ज़रूर करते, क्यों?"

"प्लीज़, अब मुझे ताने मारना बंद करो। मैं जानता हूं कि मैं गलत था। और मैं यह भी मानता हूं कि मैंने अपनी ज़िंदगी में बहुत सी गलतियां की हैं। दरअसल, मैं बहुत डरा हुआ था, मुझे पता था कि वह मुझसे रिज़ल्ट के बारे में ज़रूर पूछेगी। मुझे डर इस बात का था कि कहीं मैं गुस्से में आकर मैं उसे कुछ उल्टा-सीधा ना बोल दूं, जिससे हमारा रिश्ता हमेशा-हमेशा के लिए खत्म हो जाए।"

"मतलब?" खुशी ने तिरछी नज़रों से सवाल किया। "मतलब कि कॉस्ट एकाउंटिंग और आई.टी.-एस.एम. में तो मैंने काफी अच्छे नंबर लिए थे। मैं सिर्फ टैक्सेशन की वजह से फेल हुआ था क्योंकि जिस वक़्त मुझे क्लास में होना चाहिए था, मैं कोलकाता में राधिका के साथ मस्ती कर रहा था।"

"ओह, तो तुम अपने फेल होने का दोष भी उसके सिर पर मढ़ना चाहते हो? हद है यार!!"

"नहीं, ऐसा नहीं है..."

इससे पहले कि रचित अपनी बात पूरी कर पाता, खुशी ने बीच में ही टोका।

"प्लीज़, मैं तुम्हारी कोई सफाई नहीं सुनना चाहती। मैं जानती हूं, ऐसा ही है" खुशी ने कठोर आवाज़ में कहा।

रचित ने एक गहरी सांस ली और कहना जारी रखा, "अब मेरे अगले एग्ज़ाम मई में थे। इस बार मेरे इरादे पक्के थे और मैं किसी भी कीमत पर पास होना चाहता था। मैंने ऑफिस से तीन महीने की छुटटी ली और पढ़ाई में जुट गया। इस बार मैंने

दोनों ग्रुप्स के लिए फार्म भरे। मेरी ये कोशिशें कितनी कारगर साबित होंगी, ये तो वक़्त ही बता सकता था। लेकिन इस बार मैं अपनी कोशिशों में किसी तरह की कोई कमी नहीं करना चाहता था। लेकिन एग्ज़ाम से एक महीना पहले राधिका को जाने क्या हो गया। वह बहुत असुरक्षित और अकेला सा महसूस करने लगी। वह मुझसे बात करना चाहती थी - वो भी हर रोज़। मैं जानता था कि वह मुझसे कुछ ना कुछ छुपा रही है, लेकिन मैं अपनी पढ़ाई में इस कदर खोया था कि कभी उससे उसकी परेशानी जानने की ज़हमत ही नहीं उठाई" कहते कहते रचित रुका, उसने एक नज़र खुशी की ओर देखा।

"कहते रहो" खुशी ने सिर्फ इतना ही कहा।

"मैं उससे बात तो करता, लेकिन इस दौरान भी मेरा ध्यान सिर्फ अपनी पढ़ाई में ही लगा रहता। खुद को लेकर मैं थोड़ा स्वार्थी हो गया था। लेकिन मैं भी तो एक इंसान हूं और गलतियां इंसानों से ही होती हैं... ज़िंदगी में इससे पहले मैंने कभी हार का सामना नहीं किया था। पिछले रिज़ल्ट से मेरे अहंकार को ठेस पहुंची, जो मेरी बर्दाश्त के बाहर था।"

"खैर, किसी तरह एग्ज़ाम हुए। और मैंने आखिरी पेपर वाले दिन निखिल और अपने कुछ दोस्तों के साथ जम्मू जाने के लिए ट्रेन पकड़ ली। असल में कश्मीर का यह ट्रिप हम पहले से ही प्लान कर चुके थे और मैं राधिका को भी इस बारे में पहले ही बता चुका था। लेकिन मुझे नहीं पता था कि कश्मीर में प्रीपेड नंबर नहीं चलते। यह पंद्रह दिन का टूर था। वहां पहुंचते ही मेरा मोबाइल बंद पड़ गया। इससे हम दोनों के बीच का तनाव और भी बढ़ गया, जिसका एहसास मुझे बाद में हुआ।"

"ज़ाहिर सी बात है, ऐसा तो होना ही था। वो तो बेचारी तुम्हारे एग्ज़ाम खत्म होने का इंतज़ार कर रही थी, ताकि तुम्हारे साथ वक़्त बिता सके। लेकिन तुम उसे अकेला छोड़कर अपने दोस्तों के साथ घूमने निकल गए। तुम्हारे पास तो तुम्हारे दोस्त थे, लेकिन उसका क्या रचित?"

"उसके भी दोस्त थे, जिनसे वो अपनी परेशानी बांट सकती थी" रचित ने खुद को सही साबित करने की कोशिश की।

"एक ये चीज तुम्हें बहुत अच्छे से आती है... अपनी गलतियों को छिपाना या सफ़ाई देना। खैर, ये बताओ, तुम्हारे रिज़ल्ट का क्या हुआ? इस बार पास हुए या फिर से लटक गए? वैसे भी इस बार तो तुमने एग्ज़ाम्स के लिए अपने रिश्ते तक को दांव पर लगा रखा था" खुशी ने ताना मारा।

"सबके साथ-साथ, मुझे भी उम्मीद थी कि इस बार मैं ज़रूर पास हो जाऊंगा। हमारा रिजल्ट जो 5 अगस्त को आना था, 7 अगस्त तक टाल दिया गया। संयोग से उस दिन मेरा जन्मदिन भी था। मैं उम्मीद कर रहा था कि शायद भगवान ने इस ख़ास दिन पर मेरे लिए कुछ स्पेशल प्लान बना रखा हो। राधिका भी मेरे जन्मदिन पर दिल्ली आ रही थी, इसलिए मैं बहुत खुश था।"

"अरे वाह, मैं उम्मीद करती हूं, सब ठीक रहा हो?"

"हां, शुरूआत में तो सब ठीक था। हम दोनों मिले और काफी अच्छा वक़्त साथ में गुज़ारा, जब तक कि मेरा रिज़ल्ट नहीं आया था। लेकिन जब मुझे पता चला कि मेरा रिज़ल्ट आ चुका है और इस बार फिर से मैं हार गया। मेरा सारा उत्साह और सारी उम्मीदें धरी की धरी रह गई।" मेरे नंबर कुछ इस तरह थे-

ग्रुप 1

एकाउंटिंग	**43**
बिज़नेस लॉ एंड कम्युनिकेशन	**58**
ऑडिटिंग	**48**
कुल अंक	**149**
परिणाम	**फेल**

ग्रुप 2

कॉस्ट अकाउंटिंग एंड फाइनेंशियल मैनेजमैंट	**50**
टैक्सेशन	**56**
इन्फोर्मेशन टैक्नोलॉजी एंड स्ट्रेटेजिक मैनेजमैंट	**42**
कुल अंक	**148**
परिणाम	**फेल**

कुल अंक :	**297**
अधिकतम अंक :	**600**
परिणाम	**फेल**

"इस बार फिर से फेल?" खुशी को मानो यकीन नहीं हो रहा था।

"हां, फिर से" रचित की आंखें झुकी थी।

"और इस बार इसका जिम्मेदार कौन था?"

"गलती पर तो मैं ही था, लेकिन उस वक़्त मुझे लगा कि जैसे मेरी इस हार की जिम्मेदार राधिका है। इसे मेरी नासमझी कहो या बचपना, लेकिन मुझे लगा कि कहीं ना कहीं हर रोज उससे फोन पर होने वाली बातचीत की वजह से मैं अपनी पढ़ाई पर उतना ध्यान नहीं दे पाया, जितना देना चाहिए था। इस बार मैंने अगले एग्ज़ाम्स होने तक उससे सारे संपर्क तोड़ दिए। इसकी एक वजह यह भी थी कि मुझे खुद पर शर्म आ रही थी और मुझमें उसका सामना करने की हिम्मत नहीं थी। मैंने सोच लिया था, कि अब मैं उससे तभी बात करूंगा जब मैं अपना खोया हुआ सम्मान वापस पा लूंगा। इस दौरान उसने बहुत बार मुझसे कॉन्टैक्ट करने की कोशिश की, लेकिन मैंने उसका मोबाइल नंबर और उसका ई-मेल आई.डी. ब्लॉक कर दिया। मेरे सिर पर जैसे कोई जुनून सवार था। अप्रैल से लेकर नवंबर तक, मैंने उससे कोई बात नहीं की। मेरे लिए जैसे वो दुनिया में थी ही नहीं। लेकिन पता नहीं क्यों, फिर भी मुझे यकीन था कि मैं

चाहे कुछ भी करूं, वह मुझे छोड़कर कभी नहीं जाएगी। आखिर, मेरी मेहनत रंग लाई और मैं दोनों ग्रुप्स में पास हो गया।"

"फाइनली" खुशी ताली बजाने लगी।

"हां, फाइनली" लेकिन रचित की आवाज़ में से उत्साह नदारद था।

"तो, इसके बाद तुम गए राधिका से मिलने?"

"हां, मैंने कोलकाता की टिकट बुक करवाई और उससे मिलने के लिए चल पड़ा। 8 फरवरी 2011, उस दिन राधिका का जन्म दिन भी था। सोचा था, उसे सरप्राइज़ दूंगा। इस दिन के लिए मैं पिछले कई दिनों से तैयारी कर रहा था। रास्ते में मैंने उसका फेवरिट केक लिया और उसके मनपसंद फूलों का गुलदस्ता भी। मैं जानता था कि वह मुझे देखकर बहुत खुश होगी। उसके घर के बाहर पहुंचकर, मैं दो मिनट के लिए रूका, अपने बाल बनाए और कपड़ों को ठीक किया। मेरा दिल जोरों से धड़क रहा था। आखिरकार, मैंने घंटी बजाई। उसकी मॉम ने दरवाजा खोला।"

फरवरी 8, 2011 - कोलकाता - राधिका का घर

रचित, राधिका की मॉम से उनकी दिल्ली यात्रा के दौरान पहले भी मिल चुका था। फोन पर भी उनकी कई बार बात हो चुकी थी। वह उन दोनों के रिलेशनशिप के बारे में भी जानती थी।

"नमस्ते आंटी जी, राधिका कहां है?" रचित ने उनके पैर छूते हुए पूछा।

वह एकदम से दो कदम पीछे हटी। रचित को अपने सामने देखकर वो सकते में थी। और फिर एकदम से उसका हाथ उठा और एक ज़ोर का तमाचा रचित के चेहरे पर पड़ा। इससे पहले कि वह संभल पाता एक के बाद एक, कई और थप्पड़। वह रो रही थी और रचित को मारे जा रही थी। रचित किसी पत्थर की मूर्ति की तरह जड़ बना खड़ा था, यह समझ पाने में असमर्थ कि यह उसके साथ क्या हो रहा था।

“तुमने मेरी बेटी के साथ ऐसा क्यों किया? क्या गलती थी उसकी?” उनके आंसुओं का कोई अंत ना था।

“आंटी, राधिका ठीक तो है ना? कहां है वो?” एक अंजान सी आशंका से उसका दिल थर्रा उठा।

उन्होंने उंगली से एक कमरे की तरफ इशारा किया।

रचित बिना कोई देर किए उस कमरे की ओर भागा। घर के अंदर एक खामोशी छाई थी। गैलरी से होता हुआ वह उसके कमरे तक पहुंचा। उसने दरवाजा खोला और अंदर गया, लेकिन वहां कमरे में कोई नहीं था। कमरा इस तरह बिखरा और बेजान सा लग रहा था, मानो कई दिनों से यहां कोई न आया हो। उसने राधिका का नाम पुकारा... कई बार। लेकिन कोई जवाब नहीं आया। तभी उसकी नजर बिस्तर के साथ वाले टेबल पर रखी एक डायरी पर गई, जिसका टाइटल था - “मेरा प्यार” और इसके नीचे राधिका का नाम लिखा था। उसने इसे उठाया और पन्ने पलटने लगा।

14

राधिका की डायरी

21 जुलाई, 2007: आज का दिन मेरी ज़िंदगी का सबसे खूबसूरत दिन था। आखिरकार, आज रचित ने मुझसे अपने दिल की बात कह ही दी। यह तो मैं जानती थी कि एक ना एक दिन मेरे सपनों का राजकुमार ज़रूर आएगा, लेकिन वो इस तरह से आएगा, मैंने कभी सोचा नहीं था। सब कुछ जैसे किसी सपने की तरह था। वो पहली मुलाकात, वो माहौल, समुद्र किनारे कैंडल-लाइट डिनर, वो हल्का-हल्का रोमांटिक म्यूज़िक और इन सबके बीच मैं और मेरा रचित।

इस सुहानी सी शाम में, हम दोनों के सिवा वहां कोई नहीं था। आज हमारी ज़ुबान नहीं, बल्कि हमारी आंखें एक-दूसरे से बातें कर रही थी। वक़्त मानो उस लम्हे में कहीं ठहर सा गया था। एक लड़की का हमेशा एक ही सपना होता है कि उसे ऐसा जीवन-साथी मिले जो उसे दुनिया में सबसे ज़्यादा प्यार करता हो, जिसे खुद से ज़्यादा उसकी फिक्र हो, जो उसे अच्छे से समझता हो, जो हर मुश्किल घड़ी में उसके साथ खड़ा रहे और रचित बिल्कुल वैसा ही है। मुझे उस पर पूरा भरोसा है। मैं जानती हूं कि वो मुझे कभी छोड़कर नहीं जाएगा, मुझे हमेशा खुश रखेगा और मुझसे बहुत प्यार भी करेगा। आज मुझे

अपनी किस्मत पर बहुत गुमान हो रहा है, लग रहा है जैसे इस पूरी कायनात में मुझसे ज़्यादा खुशकिस्मत कोई है ही नहीं...।

7 अगस्त, 2007

आज का दिन मेरे लिए बहुत ख़ास है... क्योंकि? आज रचित का जन्मदिन है। इसलिए आज हमने कॉलेज बंक करके एक रोमांटिक डेट पर जाने का प्लान बनाया। हमने पूरा दिन जमकर मस्ती की। मैंने उसके लिए मिष्टी (एक बंगाली मिठाई) बनाई। वो हमेशा से मुझे साड़ी में देखना चाहता था, इसलिए उसकी ख़्वाहिश पूरी करने के लिए मैंने लाल रंग की साड़ी पहनी और माथे पर बिंदी भी लगाई। मैं जानती हूं कि रचित को सिर्फ दो ही चीजें पसंद हैं - प्रकृति और म्यूज़िक। इसलिए मैंने उसे रोमांटिक गानों की एक सीडी गिफ्ट की। जैसे ही उसने इसे सुना, वह हैरान रह गया। यह गाने उसके लिए मैंने खुद अपनी आवाज़ में रिकॉर्ड किए थे। उसने मेरी आवाज़ की बहुत तारीफ की।

1 अक्तूबर, 2007

आज का दिन हम दोनों के लिए ही मुश्किल था। आज के दिन ही रचित ने अपनी मां को खोया था, तभी से वह इस दिन को बहुत अशुभ दिन मानता है। आज उसे चेन्नई से दिल्ली के अस्पताल में शिफ्ट किया जा रहा है, लेकिन मैं चाहकर भी उससे मिलने ना जा पाई। अपनी इस गलती के लिए मैं खुद को कभी माफ नहीं कर पाऊंगी। जिस मुश्किल घड़ी में उसे मेरी सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी, मैं उसके साथ नहीं थी। लेकिन इस वक़्त मेरे दिल पर क्या गुजर रही है, ये कोई नहीं समझ सकता।

मैं अपने रचित को अच्छी तरह से जानती हूं। बाहर से वह हमेशा मजबूत होने का दिखावा करता है, लेकिन अंदर ही अंदर

वो मुझे खोने से डरता है। और अब जब हमें एक-दूसरे से दूर होना पड़ रहा है, मुझे डर है कि कहीं वो टूट ना जाए। आई.आई.टी. उसका सपना था और इसे एकसाथ पूरा करना हमारा सपना। हमारा भविष्य, हमारी नौकरी, हमारी शादी, हमारा सपनों का घर, बच्चे, बच्चों का नाम... हमने तो जाने क्या-क्या सोच रखा था। लेकिन अब मुझे डर लग रहा है, यह सोचकर कि पता नहीं आगे क्या होगा। लेकिन मेरा दिल कह रहा है, कि मेरा भगवान मेरे साथ है... रचित जल्दी ही ठीक हो जाएगा। मैंने उससे वादा किया कि मैं उसके साथ हूं और हमेशा साथ ही रहूंगी।

'शायद मैं तुम्हें पहले की तरह रोज नहीं देख पाउंगी, लेकिन इससे तुम्हारे लिए मेरा प्यार कभी कम नहीं होगा। हां, कभी-कभी सर्द रातों में तुम्हारी गोद में सिर रखकर सोने का मन करेगा। शायद तुम पास नहीं होगे, लेकिन मैं तुम्हारी यादों की तपिश को अपने सीने में भर लूंगी और पहुंच जाऊंगी तुम्हारे आगोश में... एक सपना बनकर।'

22 मार्च, 2008

आज मैं बहुत खुश हूं, रचित ने सबको गलत साबित करते हुए अपनी मंजिल की ओर पहला कदम बढ़ा दिया है। मैं ये भी जानती हूं कि सी.पी.टी. पास करना तो महज़ एक शुरूआत भर है, सफर अभी बहुत लंबा है। लेकिन मुझे पूरा यकीन है वो एक ना एक दिन अपनी मंज़िल ज़रूर पा लेगा। हालांकि उसने खुद मुझे कभी नहीं बताया, लेकिन मुझे पता है कि वो दिल से सी.ए. कभी नहीं करना चाहता। लेकिन अब जब वो फैसला ले चुका है, मैं उसके हर फैसले में उसके साथ हूं।

आज का दिन उसके लिए बहुत ख़ास है। वह अपनी आर्टिकलशिप ट्रेनिंग और पी.सी.सी. कोचिंग क्लासेज के लिए दिल्ली जा रहा है। हालांकि मैं सी.ए. के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं जानती, लेकिन गूगल के ज़रिए इतनी जानकारी तो हासिल कर

ही सकती हूं, कि उसकी मदद कर सकूं। मैं हर रोज़ उससे बात करती हूं, ताकि उसे कभी भी अकेला महसूस ना हो। मैं उसकी हर छोटी से छोटी प्रॉब्लम बांटना चाहती हूं, उसकी ज़िंदगी का अटूट हिस्सा बनना चाहती हूं।

3 अक्तूबर, 2008

आज मैं बहुत रोई, इसलिए नहीं कि रचित मेरे ऊपर चिल्लाया, बल्कि इसलिए कि उसने मेरी बात सुने बिना ही फोन काट दिया। मुझे उसकी बहुत फिक्र हो रही है। कल उसे बहुत तेज़ बुखार था और आज सुबह से ही उसका नंबर बंद आ रहा था। हारकर, मैंने निखिल को भी फोन लगाने की बहुत कोशिश की, लेकिन उसका नंबर भी बंद आ रहा था। मैं तो सिर्फ यह जानना चाहती थी कि वह ठीक है या नहीं? मैं जानती हूं, वह अपनी सेहत को लेकर बहुत लापरवाह है और अभी तक डॉक्टर के पास भी नहीं गया होगा, इसलिए मैंने खुद ही उसके लिए दवा पता करवा ली थी।

उसने कहा कि मैं उसे खुश नहीं देख सकती, जबकि सच तो यह है कि मेरी ज़िंदगी का मकसद ही उसे खुश देखना है। भला मुझे उसके दोस्तों से जलन क्यों होगी? बल्कि मैं तो खुश हूं कि उसे निखिल, दीक्षा और शालिनी जैसे दोस्तों का साथ मिला, जिन्होंने उसकी ज़िंदगी के खालीपन को भर दिया। मैं खुश हूं कि वहां दिल्ली में कम से कम कोई तो है जो उसकी देखभाल कर रहा है। प्लीज रचित, मेरे साथ ऐसा दोबारा कभी मत करना। आई लव यू... आई लव यू सो मच...

8 फरवरी, 2010

आज मेरा 21वां जन्मदिन है और सब चाहते है कि मैं खुश रहूं। लेकिन मैं खुश कैसे हो सकती हूं, जब मेरा प्यार ही खुश नहीं है? वह अपनी पी.सी.सी. के एग्ज़ाम में फेल हो गया। मैं उससे बात करना चाहती हूं, उसका दर्द बांटना चाहती हूं, उसे

बताना चाहती हूं कि मेरे लिए वो आज भी पहले वाला रचित है और हमेशा रहेगा... उसके पास होने या फेल होने से मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे आज भी उसकी काबिलियत पर पूरा भरोसा है... इस बार ना सही, अगली बार वह ज़रूर पास होगा। मुझे उम्मीद थी, कि जब वो मुझे जन्मदिन की बधाई देने के लिए फोन करेगा, तो हम इस बारे में बात करेंगे। मैं आधी रात तक उसके फोन का इंतज़ार करती रही, लेकिन उसने नहीं किया। मैं बहुत रोई, इसलिए नहीं, कि रचित मेरा जन्मदिन भूल गया, बल्कि इसलिए कि इस ख़ास दिन पर मैं अपनी ज़िंदगी के सबसे अजीज़ इंसान से बात नहीं कर पाई।

25 अप्रैल, 2010

मेरे और रचित के बीच में कुछ भी ठीक नहीं चल रहा। रिज़ल्ट आने के बाद से उसने हमारे रिश्ते को एक बोझ की तरह मानना शुरू कर दिया है। 14 फरवरी, वैलेन्टाइन डे वह आखिरी दिन था जब हमने थोड़ी मस्ती की थी और तब से लेकर आज तक हमारी बात कम, झगड़े ज़्यादा होते हैं। उसकी वो प्यारी सी मुस्कान, हमारा वो रात-रात भर बातें करना, उसका मुझे प्यार करना, मेरी खूबसूरती की तारीफ करना मुझे बहुत याद आता है। दिन-ब-दिन हमारे बीच दूरियां बढ़ती जा रही हैं, जिसके चलते मैं ठीक से सो भी नहीं पाती। दिन-रात उसके ही ख्यालों में डूबी रहती हूं- वो कैसा होगा, क्या कर रहा होगा, उसे मेरी याद आती भी होगी या नहीं... दूसरी तरफ आंसू हैं कि मेरी बात ही नहीं सुनते... वक़्त, बे-वक़्त कभी भी चले आते हैं। अब तो मेरे तकिए को भी गीला रहने की आदत हो गई है। अगर यूं ही चलता रहा, तो लगता है जल्दी ही पागल हो जाऊंगी। कभी-कभी सोचती हूं कि मुझसे गलती कहां हुई, लेकिन अतीत के हज़ारों चक्कर लगाने के बाद भी जान नहीं पाती। बस ये जानती हूं कि गलती कहीं ना कहीं मेरी ही

होगी... क्योंकि वह कभी गलत नहीं हो सकता, क्योंकि मुझे उस पर खुद से ज़्यादा भरोसा है।

मेरी तबीयत दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही है। क्लास में भी मैं काफी पीछे चली गई हूं। अगले सेमेस्टर में हमारी प्लेसमैंट होनी है और मुझे कैसे भी करके जून से पहले पढ़ाई पर अपनी पकड़ वापस पानी है। अब मुझे अपने दोस्तों से बात करना अच्छा नहीं लगता। सबके बीच रहकर भी हर वक़्त अकेलापन महसूस होता है। काश! मैं कोलकाता वापस जा पाती। मुझे अपने घरवालों की बहुत याद आ रही है। ऐसा लग रहा है, मानो प्यार और खुशी मेरी ज़िंदगी से हमेशा-हमेशा के लिए चले गए हों।

7 अगस्त, 2010

आज मैं दिल्ली में हूं। सुबह मैं बहुत खुश थी। पैर मानो ज़मीन पर नहीं टिक रहे थे। आज रचित का जन्मदिन है और मैं उससे मिलने वाली थी। उसके जन्मदिन के लिए मैंने काफी कुछ सोच रखा था। लेकिन रचित थोड़ा परेशान था। उसका रिज़ल्ट आने वाला था। सुबह 11 बजे हम दिल्ली हाट पर मिले। पिछले एक साल में यह पहली बार था जब हम अच्छे से बात कर रहे थे। रचित को अपने सामने देखकर मैं बहुत खुश थी। हाथों में हाथ डाले हम दिल्ली की सड़कों पर घूम रहे थे, कि तभी उसे किसी का मैसेज आया कि रिज़ल्ट आ गया है। जैसे ही उसने मोबाइल पर अपना रिज़ल्ट देखा, उसकी आंखों से आंसू निकल आए। वह बच्चों की तरह बिलख-बिलख कर रोने लगा। उसे ऐसे रोता देख मैं भी अपने आंसू नहीं रोक पाई।

इस मुश्किल घड़ी में मैं उसके साथ रहना चाहती थी। लेकिन उसने अपने फेल होने के लिए मुझे ही कसूरवार ठहराया। मैंने उसे समझाने की बहुत कोशिश की, लेकिन उसने मेरी एक ना सुनी और मुझे सड़क पर रोता-बिलखता छोड़कर चला गया। मैंने बहुत मिन्नतें की, हाथ जोड़े और अपने प्यार

की दुहाई भी दी, लेकिन वो नहीं रूका। अब मैं वापस चेन्नई जा रही हूं। पता नहीं क्यों, ऐसा लग रहा था मानो मैं उसकी ज़िंदगी से दूर जा रही हूं। दिल में बुरे-बुरे ख़्याल आ रहे हैं मानो मैं उसे भविष्य में कभी देख नहीं पाऊंगी। 'यह महज़ एक डर है, सच्चाई नहीं' मैं मन ही मन अपने आप को समझाने की कोशिश में लगी हूं।

1 जनवरी, 2011 (नए साल की शाम)

यह दर्द मुझसे अब और सहन नहीं होता। हमारी बात हुए पांच महीने बीत चुके हैं। ऐसा एक भी दिन नहीं जाता जब मैं उसका नंबर लगाने की कोशिश नहीं करती, लेकिन उसने मेरा नंबर ब्लॉक कर दिया है। कुछ दिन पहले मैंने एक दोस्त के फोन से उसका नंबर मिलाया, लेकिन उसने मेरी आवाज़ सुनते ही फोन काट दिया। ऐसा नहीं है कि मुझे उस पर भरोसा नहीं है। मैं जानती हूं कि वो भी मुझे बहुत प्यार करता है। मेरी तरह वो भी तड़प रहा होगा, लेकिन मुझसे बात ना करना शायद उसकी कोई मजबूरी होगी। मैंने उसके दिल्ली वाले दोस्तों को भी फोन किया, लेकिन सबका यही कहना है कि काफी वक़्त से किसी ने उसे नहीं देखा। यहां तक कि उसने अपना हॉस्टल भी बदल लिया है, और शायद नंबर भी। मैं जानती हूं, एक ना एक दिन वो वापस ज़रूर आएगा, और मैं उस दिन का इंतज़ार करूंगी। लेकिन अब मेरी तबीयत मेरा साथ नहीं दे रही। दवाईयों और नींद की गोलियों ने अपना असर दिखाना शुरू कर दिया है।

दवाईयों से शरीर अंदर से पूरी तरह गल चुका है। मेरे नाक से भी खून आने लगा है। इस बार मैंने अपने एग्ज़ाम भी नहीं दिए। कॉलेज जाने की भी हिम्मत नहीं होती और अब मैं मम्मी - पापा के साथ घर पर ही रहती हूं। आज सभी नया साल मना रहे हैं। सुबह ही दादी ने मुझे आशीर्वाद देते हुए कहा, 'यह नया साल तुम्हारे लिए खुशियां लाए, तुम्हें अच्छी

सेहत दे और तुम्हारे दिल की हर ख़्वाहिश पूरी हो' लेकिन मुझे अपने लिए कुछ नहीं चाहिए। मैं तो सिर्फ़ यही चाहती हूं कि मेरा रचित पास हो जाए और मेरे पास वापस आ जाए। मैं उसके बिना नहीं रह सकती। मैं, मेरी रूह उसके बिना बिल्कुल अधूरे हैं।

1 फरवरी, 2011

मुझे पेन पकड़ने में दिक्कत हो रही है। उंगलियों में मानो जान ही नहीं बची। कल दो बार खून की उल्टी भी हुई। अगले हफ्ते मेरा जन्मदिन है और मैं जानती हूं रचित, तुम ज़रूर आओगे। तुम्हारे आने तक मैं खुद को संभाले रखने की पूरी कोशिश करूंगी। लेकिन ये कोशिश कितनी कारगर साबित होगी, मैं भी नहीं जानती।

रचित, मैं बहुत थक चुकी हूं। थक चुकी हूं तुम्हारा इंतज़ार करते-करते... थक चुकी हूं इस दर्द को सहते सहते... और शायद इस ज़िंदगी से भी। पहले जब तुम मुझसे दूर थे, तो मुझे नींद नहीं आती थी और सोने के लिए मुझे नींद की गोलियां लेनी पड़ती थी, लेकिन अब मैं जगना चाहती हूं, खुद को जिंदा रखना चाहती हूं, इसलिए कि एक आखिरी बार तुमसे मिल पाऊं, तुम्हें देख पाऊं, तुम्हें छू पाऊं, तुम्हें प्यार कर पाऊं और तुम्हें बता पाऊं कि मैं तुमसे कितना प्यार करती हूं।

सच यही है कि तुम्हारे बिना ना तो जीने की तमन्ना है और ना मरने का हौसला है... हर सांस एक बोझ है, हर गुज़रता हुआ पल एक सदी है और हर आने वाला पल एक खौफ़ है। ज़िंदगी मेरे हाथों से फिसल रही है। मेरा दिल भारी हो रहा है, लगता है शायद मेरी ये आखिरी ख़्वाहिश भी अधूरी ही रहेगी और शायद इसी अधूरेपन के साथ मुझे इस दुनिया से जाना होगा।

लेकिन रचित, जाने से पहले तुमसे एक आखिरी चीज़ मांगती हूं, कि तुम मुझे याद करके कभी उदास मत होना,

हमेशा हंसते - मुस्कुराते रहना, क्योंकि तुम्हारी खुशी में ही मेरी ज़िंदगी है। जब जब तुम हंसोगे, मैं समझूंगी कि मैं पूरी हो गई।

मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूं और हमेशा करती रहूंगी... इस ज़िंदगी में भी और ज़िंदगी के बाद भी।

15

रचित को कोलकाता से आए तीन दिन हो चुके थे और तब से ही उसने खुद को कमरे में बंद कर रखा था। राधिका की डायरी को सीने से लगाए, वह लगातार रोए जा रहा था। वह बार-बार डायरी को पढ़ता और चीखों की आवाज़ कुछ और तेज़ हो जाती, मानो डायरी में लिखे शब्द उसकी रूह को भेद रहे थे। उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि ज़िंदगी उसे इस मोड़ पर लाकर खड़ा कर देगी। करीब बहत्तर घंटे बाद वह कमरे से बाहर आया और बालकनी की ओर बढ़ा। 'मैं आ रहा हूं, राधिका' वह बुदबुदाया। फिर एक पल रूका, आसमान में सितारों की ओर देखा, इन्हें देखकर मुस्कुराया और अगले ही पल बालकनी से नीचे कूद गया।

अपोलो, दिल्ली (फरवरी, 2011)

इसके साथ ही रचित फूट-फूटकर रोने लगा। खुशी ने उसे नहीं रोका, क्योंकि वह जानती थी दिल का दर्द आंसुओं की शक्ल लेकर बाहर आ जाए तो अच्छा है, अगर अंदर ही दबा रहे तो नासूर बन जाता है। थोड़ी देर बाद, जब वह थोड़ा शांत हुआ तो खुशी ने उठकर उसे पानी पिलाया।

"तुम जानते हो रचित, तुम्हारी प्रॉब्लम क्या है?" खुशी ने

कहा। "तुम्हें हर काम अधूरा छोड़ने की आदत है। सच तो यह है कि तुम किसी प्रॉब्लम का सामना करना ही नहीं चाहते।"

"मतलब? तुम कहना क्या चाहती हो?"

"आई.आई.टी. के दिनों से लेकर सी.ए. तक, ज़िंदगी में तुम सिर्फ एक ही चीज़ करते आए हो - भागना... कभी आई.आई.टी. से, कभी अपनी ज़िंदगी से और कभी अपने प्यार से। एक तरफ़ तो तुम मज़बूत होने का दिखावा करते हो, लेकिन तुम्हारा दिल जानता है कि आज तक तुम अपनी ज़िम्मेदारियों से और सच्चाई से दूर भागते आए हो। तुम्हारे इसी स्वभाव का नतीजा राधिका को अपनी जान देकर चुकाना पड़ा और अब तुम्हारी वजह से तुम्हारे पापा भी दुखी हैं। खुदकुशी करने से पहले तुमने एक बार भी अपने पापा के बारे में नहीं सोचा। कभी ख़्याल नहीं आया कि तुम्हारे जाने के बाद उनका क्या होगा? किसके सहारे जिएंगे वो? उन्होंने तो तुम्हारी मॉम के जाने के बाद भी हार नहीं मानी थी, वो ज़िंदा रहे... सिर्फ तुम्हारे और तुम्हारे भाई के लिए। क्या तुम्हारी अपने परिवार के लिए कोई ज़िम्मेदारी नहीं बनती?? वक़्त आ गया है रचित, तुम अपनी ज़िम्मेदारियां संभालो।"

"खुशी, बकवास बंद करो! तुम कुछ नहीं जानती, इसलिए प्लीज़, बेकार की राय मत बनाओ। तुम कभी समझ नहीं सकती कि मैं किस दर्द से गुज़रा हूं" रचित ने गुस्से से कहा।

"और तुम भी कभी नहीं समझोगे कि राधिका किस दर्द से गुजरी थी, और वो भी बिना किसी गलती के। उसका कसूर सिर्फ इतना था कि वो तुमसे प्यार करती थी... बेपनाह प्यार। ज़िंदगी थे तुम उसकी। सी.ए. करने के लिए तुम्हें किसी ने मजबूर तो नहीं किया था। यह तुम्हारा अपना फैसला था। बी-टैक छोड़ने के बाद, तुम्हारी पहली गलती थी सी.ए. करने का फैसला लेना। अगर मैं तुम्हारी जगह होती, तो पहले अपनी सेहत की ओर ध्यान देती और ठीक होने के बाद फिर से जे.ई.ई की तैयारी कर आई.आई.टी. में दाखिला लेती। लेकिन शायद तुम्हारा

अहंकार आड़े आ गया था। तुम्हें लगा कि तुम्हारे सारे दोस्त तुम्हारे सीनियर बन जाएंगे या फिर शायद तुम्हें अपने आप पर यकीन ही नहीं था कि तुम फिर से आई.आई.टी. में दाखिला ले सकते हो। मैं जानती हूं कि आई.आई.टी. ही तुम्हारा सपना था, लेकिन तुम्हें भी यह समझना होगा कि सपने तो परिस्थितियों के मुताबिक बदलते रहते हैं। ज़िंदगी में कुछ भी योजना के हिसाब से नहीं होता। ज़िंदगी कदम-कदम पर हमारा इम्तिहान लेती है, लेकिन सबसे अच्छी बात है कि यह उन चुनौतियों को पूरा करने के लिए उचित अवसर भी देती है। इसमें कोई शक़ नहीं कि सी.ए. एक बहुत अच्छी लाइन है, लेकिन बदकिस्मती से तुम्हारा सपना नहीं है। तुम आज भी कहीं ना कहीं अपने इंजीनियर बनने के सपने को जी रहे हो।"

"और अगर यह तुम्हें एक साल खराब होने की कीमत पर मिले और तुम्हें एक साधारण से कॉलेज में जाना पड़े, तो क्या करोगी तुम?" रचित ने खुशी के सामने अपना तर्क रखा।

"तो क्या? लोग तो मेडिकल में जाने के लिए भी दो-तीन साल छोड़ देते हैं और फिर भी उन्हें एक साधारण से कॉलेज में जाना पड़ता है।"

"मैं तुमसे कोई बहस नहीं करना चाहता। अब जब मेरी राधिका ही नहीं रही, तो मेरे जीने का भी कोई मतलब नहीं..."

"बस, यही तो तुम्हारी दूसरी प्रॉब्लम है। तुम अपनी प्रॉब्लम्स के बारे में बात ही नहीं करना चाहते। तुम हड़बड़ाहट में गलत फैसले ले लेते हो और उम्मीद करते हो कि सब लोग तुम्हारे मुताबिक ही अपनी ज़िंदगी जिएं। पहले तो तुमने अपने पापा से बिना कोई सलाह किए इंजीनियरिंग छोड़ने का फैसला किया। तुम्हारे कारण ही राधिका की तबीयत बिगड़ी। तुम्हें लगा कि वो तुम्हारी प्रॉब्लम नहीं समझती। और दूसरी तरफ, उनका सामना करने की बजाय, तुमने उन दोनों को नज़रअंदाज़ करना शुरू कर दिया।"

"मेरी ज़िंदगी इतनी आसान नहीं है, जितना तुम सोच रही

हो। हज़ारों मुश्किलें हैं इसमें... मैंने सोचा था कि अपनी प्रॉब्लम्स अपने तरीके से हल कर लूंगा। यह कुछ महीनों की ही तो बात थी, मुझे लगा था कि वो समझ जाएगी। और वैसे भी मैं उससे दूर थोड़े ना जा रहा था..."

"दूर नहीं जा रहे थे? तुम उसके पास ही कब थे, रचित! मैं तुम दोनों के बीच की दूरी की बात नहीं कर रही, बल्कि दिलों की दूरी की बात कर रही हूं। यह तुम ही थे, जिसने उसे खुद से दूर कर दिया था। तुम सब कुछ अपनी सहूलियत के हिसाब से करते थे... जब उसकी ज़रूरत होती, उससे बात करते, जब उससे मिलने का मन करता, मिलने चले जाते। तुम्हारे लिए तो जैसे वो मन बहलाने का एक खिलौना थी। तुमने कभी सोचा कि वो क्या चाहती थी? उसकी इच्छाएं क्या थी? उसके सपने क्या थे? रिलेशनशिप में होना ही प्यार नहीं होता, मिस्टर रचित, बल्कि उस रिलेशनशिप को जीना प्यार है। जब तुम अपने दोस्तों के साथ होते थे, या उनके साथ मस्ती कर रहे होते थे, तो तुमने शायद ही कभी उसकी परवाह की होगी। वह घंटों तुम्हारा इंतज़ार करती और आखिरकार तुम्हारा इंतज़ार करते-करते ही इस दुनिया से चली गई। वह मरी नहीं है, उसे मारा गया है... तुमने मारा है उसे, तुम्हारी ज़िद्द ने मारा है उसे। तुम बहुत खुशकिस्मत थे कि तुम्हें वो मिली, लेकिन तुमने उसे क्या दिया- ज़िंदगी भर का दर्द।"

"हां, उसके हर दर्द की वजह मैं था, इसीलिए मैंने खुदकुशी करने की कोशिश की" वह चिल्ला पड़ा।

"और, तुम्हें क्या लगता है, इस तरह से तुम अपने पाप से मुक्त हो जाओगे? बेवकूफ़, वो तो सिर्फ तुम्हें खुश देखना चाहती है, एक कामयाब इंसान बनते देखना चाहती है। यहां तक कि वो अपनी आखिरी सांस में भी वो यही प्रार्थना करती रही कि तुम पूरे मन से सी.ए. करो। उसने तुम्हारी काबलियत पर कभी कोई शक़ नहीं किया। यहां तक कि तुम्हारे फेल होने पर भी वह तुम्हारे साथ रहना चाहती थी। और देखो, तुमने

उसके साथ क्या किया। तुमने अपनी नाकामयाबी के लिए उसे कसूरवार ठहराया और तड़पने के लिए अकेला छोड़ दिया। वो तो तुमसे मिलने, तुम्हारा जन्मदिन मनाने इतनी दूर दिल्ली आई और तुम अपने खराब रिज़ल्ट के कारण उसे बीच सड़क छोड़कर चले आए।"

"मैं उससे मिलने वापस गया... लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी" रचित ने अपनी नज़रें झुका ली, उसे अपने किए पर पछतावा हो रहा था।

"तुम वापस गए तो, लेकिन अपनी सहूलियत के हिसाब से... जब तुम्हारा अहंकार शांत हो गया, अपने एग्ज़ाम्स पास करने के बाद। तुम कभी नहीं समझे कि राधिका को तुमसे प्यार था, ना कि तुम्हारी पॉज़िशन से। हमारा सच्चा साथी वही होता है, जो ज़िंदगी के हर सफर में हमारा साथ दे। और वो तुम्हारे बुरे दौर में तुम्हारे साथ रहना चाहती थी। यह तुम भी जानते हो कि ज़िंदगी कभी भी आसान नहीं होती, हजारों मुश्किलें होती हैं, अनगिनत चुनौतियां होती हैं, लेकिन कामयाबी के शिखर तक वही पहुंचता है, जो सीना तान कर इन परिस्थितियों का सामना करें। मुश्किलों का ना होना किसी को महान नहीं बनाता, बल्कि महान वो होता है, जो हज़ारों मुश्किलों से पार पाकर आगे बढ़े।"

"मैं मुश्किलों से नहीं डरता, बस फेल होने से डरता हूं। उस वक़्त फेल होने के बाद मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं कैसे सबका सामना करूं, इसीलिए सोचा कि कुछ महीनों के लिए सबसे दूर हो जाऊं, तो सब ठीक हो जाएगा"

"रचित, मेरी आंखों में देखो। सच्चाई का सामना करो। अपनों से दूर होकर कोई ज़िंदगी की लड़ाई नहीं जीतता, क्योंकि जब तक अपने साथ हैं, तभी तक ज़िंदगी है। राधिका और राधिका का प्यार तुम्हारी सबसे बड़ी ताकत थे, और तुमने उसे अपनी कमज़ोरी समझा। पिछली बार के एग्ज़ाम में, तुम सिर्फ तीन नंबरों से पीछे थे। इसका मतलब तुम सारे विषयों में ठीक थे, बस थोड़ी और मेहनत की ज़रूरत थी। ऐसे में अपने प्यार

से बात करने में कितना वक़्त लगता? दस मिनट, बीस मिनट? ऐसा तो नहीं था कि तुम चौबीसों घंटे पढ़ते ही रहते थे। सारे लोग पहली ही कोशिश में तो कामयाब नहीं हो जाते।"

"तो अब मुझे क्या करना चाहिए?"

"पहले तो तुम्हें अपनी भावनाओं पर काबू रखना सीखना होगा। अपनी भावनाओं को अपने फैसलों पर हावी मत होने दो। ये जो तुम्हारा मन बार-बार बदलता रहता है, यह सबसे बड़ी प्रॉब्लम है। ज़िंदगी कोई दौड़ नहीं है, रचित, जहां आपको बार-बार खुद को साबित करना पड़े। तुम तो ऐसे व्यवहार करते हो, जैसे पूरी दुनिया का बोझ तुम्हारे कंधे पर है। अपने लिए थोड़ा वक़्त निकालो, कुछ वक़्त अपने आप से बात करो और अपने दिमाग को शांत रखने की कोशिश करो। फिर कुछ नया, कुछ अलग करने की कोशिश करो जिससे दिल को सुकून मिले। वैसे तुम्हारी हॉबी क्या है?"

"मुझे लिखना बहुत पसंद है" रचित ने कहा। उसके चेहरे पर एक चमक आ गई।

"बहुत अच्छे। फिर तुम अपने ख्यालों को लिखना क्यों नहीं शुरू कर देते। इस बार फैसला सोच-समझ कर लेना। अपने अतीत की दर्द भरी यादों को खुद पर हावी मत होने देना, बल्कि अपने प्यार को ही अपनी प्रेरणा बनाकर और अपने अतीत से सबक लेकर, जो काम तुमने हाथ में लिया है, उसे अंजाम तक पहुंचाना। इसी में तुम्हारी और तुम्हारे प्यार की जीत है। जो हो चुका, उसे तुम बदल नहीं सकते, लेकिन जो आने वाला है उसे बेहतर बनाने की कोशिश ज़रूर कर सकते हो।"

"लेकिन..."

"श्श्श्श... कोई लेकिन-वेकिन नहीं। अब तुम आराम करो। हम कल बात करेंगे।"

"थैंक्स" रचित ने कहा। उसके दिल में एक नई उर्जा और एक नया आत्मविश्वास जन्म ले रहा था।

"क्यों?"

"मेरी कहानी सुनने के लिए और मुझे अच्छा महसूस करवाने के लिए।"

"मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगी, रचित" खुशी ने उसे भरोसा दिलाया।

"माफ करना, मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा" रचित उसकी बात से हैरान था।

"कुछ नहीं। तुम अपनी आंखें बंद करो और सो जाओ। मैं भी थक चुकी हूं। गुडनाइट" खुशी ने कहा।

"गुडनाइट" रचित ने आंखें बंद कर ली।

* * * * * *

अपोलो दिल्ली, अगले दिन

जैसे ही उसने अपनी आंखें खोली, सामने दीक्षा और शालिनी खड़े मुस्कुरा रहे थे।

"आखिरकार, तुमने आंखें खोल ही ली। हमें तुम्हारी बहुत चिंता हो रही थी, रचित" दीक्षा ने कहा।

"तुम कल कहां थे, जब मैं यहां अकेला दर्द से चिल्ला रहा था? वो तो शुक्र है खुशी यहां थी जिसने मेरी बहुत मदद की" रचित ने बताया।

"क्या?" शालिनी एकदम से चिल्लाई।

"क्यों? क्या हुआ?" रचित हैरानी से उनकी तरफ देखने लगा।

"रचित, तुम पिछले तीन दिनों से कोमा में हो। गिरने की वजह से तुम्हारे सिर में बहुत गहरी चोट आई है" दीक्षा ने कहा।

खुशी... मैं हूं खुशी

मैं जानती हूं, आप सब हैरान होंगे, सोच रहे होंगे कि मैं कौन हूं? परेशान मत होईए, मैं कोई राधिका का भूत नहीं हूं जो रचित के सपने में आया था। तो फिर कौन हूं मैं? जवाब बहुत ही आसान है... मैं आपकी अंदरूनी खुशी हूं, अंतरात्मा की आवाज़ हूं, जो हमेशा आपके साथ रहती है, लेकिन आप अपनी ज़िंदगी में इस कद्र खोए होते हैं कि अक्सर मुझे अनसुना कर देते हैं। जिस तरह भारी धातु की आवाज़ में एक हल्की सी आहट अक्सर दब कर रह जाती है, ठीक उसी तरह आप भी ज़िंदगी की उलझनों में इस कदर उलझ जाते हैं कि आपके दिल की आवाज़ आपके ही कानों तक नहीं पहुंच पाती। क्या विडंबना है- हम हर उस चीज़ को तवज्जो देते हैं जो ज़िंदगी के लिए ज़रूरी है। और इसी भागम-भाग में ज़िंदगी को ही भूल जाते हैं।

मैं हर जगह मौजूद हूं... प्यार में, रिश्ते के अहसास में, हर जीत में, हर हार में और भी बहुत सी चीजों में। व्यावहारिक तौर पर ये सब मेरे ही अंश हैं, ठीक वैसे ही जैसे ज़िंदगी के विभिन्न पहलू होते हैं। इन सबके एक साथ मिल जाने पर ही मैं पूरी होती हूं। अगर कोई व्यावसायिक तौर पर तो कामयाब है, लेकिन उसकी निजी ज़िंदगी सूनी है, तो वह कभी खुश नहीं रह सकता। ऐसी कामयाबी का कोई मतलब नहीं बनता, जब आपका प्यार ही आपके साथ न हो। रचित भी पास तो हो गया, लेकिन राधिका के प्यार की कीमत पर।

आजकल की दुनिया में सब कुछ बहुत तेज़ी से हो रहा है, सब कुछ बदल रहा है, जो कल था वह आज नहीं है और जो आज है वो शायद कल नहीं होगा। सबके बीच एक अंधी दौड़ लगी है, कहां पहुंचना है किसी को नहीं पता... बस दौड़ते जाते हैं। जैसे-जैसे टैक्नोलॉजी का दायरा बढ़ता जा रहा है, वैसे-वैसे ज़िंदगी का दायरा सिमटता जा रहा है। आपके पास वक़्त नहीं है अपनों से बात करने का, मुझसे यानि कि अपनी अंतरात्मा से बात करने का।

जरा दो मिनट रुकिए, रुक कर सोचिए- क्या आप इसी तरह की ज़िंदगी जीना चाहते हैं, जिसमें आपके पास ख़ुशी को दिल से महसूस करने तक का वक़्त ना हो... आपको अपना जवाब ख़ुद-ब-ख़ुद मिल जाएगा।

16

वर्तमान में

रचित की खुद की एक कामयाब सी.ए. फर्म है। उसका दिल्ली में खुद का ऑफिस है, अपना खुद का फ्लैट है, लंबी गाड़ी है, महंगा स्मार्ट फोन है, सोसाइटी में इज़्ज़त है और वो सब कुछ जो किसी कामयाब इंसान के पास होता है। पांच साल हो चुके हैं राधिका को दुनिया से गए हुए, लेकिन उसकी ज़िंदगी से, उसकी यादों से वो कभी गई ही नहीं। राधिका आज भी उसकी सबसे बड़ी प्रेरणा है। वह खुश रहने की कोशिश करता है, बहुत हंसता है - बात-बात पर और कई बार तो बिना बात पर, ये सोचकर कि राधिका शायद उसे देख रही होगी। आज भी राधिका की डायरी को रोज पढ़ता है। आज भी जद्दोजहद में लगा है राधिका को पूरा करने की, जो काम वह राधिका के ज़िंदा रहते नहीं कर पाया, वो काम उसके मरने के बाद करना चाहता है। एक कामयाब और खुश इंसान बनना चाहता है, जिसपर राधिका को गर्व हो। आप जानते हैं, उसकी सी.ए. फर्म का नाम क्या है - राधिका बैनर्जी एंड ऐसोसिएट्स।

लेकिन दिल ही दिल में वह आज भी बहुत अकेला है। हर रोज़ दिन में कई बार, कभी सुबह बिस्तर छोड़ने से पहले और कभी रात को सोने के लिए बिस्तर पर जाने के बाद, कभी

क्लाइंट मीटिंग के दौरान, तो कभी फाइलों के ढेर के बीच राधिका की तस्वीर को अपने मोबाइल में देख लेता है और फिर मुस्कुरा देता है।

अक्सर सोचता है, कि क्या होता अगर उसकी ज़िंदगी में राधिका ना होती? अगर उसे किडनी प्रॉब्लम ना हुई होती? अगर वो एग्ज़ाम में फेल ना हुआ होता? अगर उसने राधिका को अपने आप से दूर ना किया होता? और हर बार एक ही जवाब मिलता- तो ये ज़िंदगी, ज़िंदगी ना होती। वो समझ चुका है कि ज़िंदगी और ख़्वाबों के मायने क्या होते हैं। ख़्वाहिशें जन्म लेती हैं, कुछ टूटती-बिखरती हैं, तो कुछ परवान चढ़ती है और ज़िंदगी चलती रहती है यूं ही। फैसला हमें करना होता है कि हम ज़िंदगी को जीना चाहते हैं या गुज़ारना चाहते हैं।

पुलकित गुप्ता - पेशे से सी.ए. (Final), सी.एस. (Professional) और लॉ अंतिम वर्ष के स्टूडेंट और दिल से लेखक है। बचपन से ही उनका ज़िंदगी को खुलकर जीने में विश्वास रहा है। सोनीपत में जन्में और बिजनौर में पले-बढ़े पुलकित ने सेंट मैरी कान्वेंट स्कूल, बिजनौर से अपनी स्कूल की पढ़ाई पूरी की और बरेली के रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय से ग्रेजुएशन।

लेखन की शुरूआत हुई पर्सनल डायरी में लिखने से, फिर उम्र के साथ-साथ विचार भी जवान होते गए और सपने भी। इन्ही सपनों और विचारों को शब्दों में पिरो कर तैयार की अपनी पहली किताब, जिसका शीर्षक था, 'लाइफ एंड प्रॉमिसेस'। किताब ने पाठकों का बहुत प्यार बटोरा और मार्किट में आने के कुछ महीनो के भीतर ही बैस्टसैलर बन गई। "ख़्वाहिशें' इसी किताब का हिन्दी रूपांतरण है।

लेखन के अलावा उन्होंने पब्लिशिंग में भी हाथ आजमाया और खासे सफल रहे। गार्गी पब्लिशर्स उनका खुद का पब्लिशिंग हाऊस है। पढ़ने-लिखने के अलावा उन्हें म्यूज़िक सुनना और फिल्में देखना बहुत पसंद है। वह विराट कोहली के बहुत बड़े प्रशंसक हैं।

पाठक, उनसे नीचे दिए गए लिंकस के जरिये संपर्क कर सकते हैं -

ई-मेल : authorpulkitgupta@gmail.com

फेसबुक : https://www.facebook.com/authorpulkitgupta